

अस्य ग्रंथस्य लुक्कल्पिका.



अंशक.	ग्रंथनाम.	गाथासंख्यांक.	पृष्ठांक.
१	जीवविचार प्रकरण.	५१	१
२	नवतत्रय प्रकरण.	६०	४
३	द्वन्द्वक प्रकरण.	४२	७
४	लघुसंघटनी प्रकरण.	३०	११
५	दृहत्संययणी त्रैलोक्यदीपिका.	३४ए	१२
६	लघुद्वेत्र समास प्रकरण.	२६३	३४
७	पट्कर्मग्रंथ.	४०१	५१
८	श्रीरत्नाकर पंचविंशतिका.	२५	७७
९	आचारोपदेश ग्रंथ पङ्क्तिरूप.	२६४	७०

॥ ॐ नमः सिन्धु ॥ अथ श्रीजीवविचारप्रकरणप्रारंभः ॥ आर्यावृत्तं ॥ भ्रुवणपर्द्धवं
 वीरं, नमिऊण न्णामि अबुहबोहब्बं ॥ जीवसरूवं किंचि वि, जह न्णियं
 पुवसूरीहिं ॥ १ ॥ जीवा सुत्ता संसा, रिणो य तस थावरा य संसारी ॥ पुढवि
 जल जलण वाऊ, वणस्सई थावरा नेया ॥ २ ॥ फळिह मणि रयण विहुम,
 हिंयुल हरियाल मणसिल रसिंदा ॥ कणगाइ धाउ सेढी, वन्निय अरणेइय
 पलेवा ॥ ३ ॥ अप्पय तूरी ऊसं, मढी पाहाण जाइउ ऐगा ॥ सोवीरंजण लू
 णा, इ पुढविनेया य इच्चाइ ॥ ४ ॥ भोमंतरिक्कमुदगं, उसाहिमकरग हरि
 तणू महिया ॥ हुंति घणोदहिमाई, नेच्चा ऐगा य आउस्स ॥ ५ ॥ इंगाल जा
 ल मुम्मुर, उक्कासणि कणग विजुमाईया ॥ अगणिजियाणं नेया, नाय
 वा निउणबुद्धीए ॥ ६ ॥ उप्पामग उक्कलिया, मंरुलि मह सुध गुंजवाया य ॥

जीववि०
॥ १ ॥

घण तणु वायाईया, भेया खलु वाजकायस्स ॥ ७ ॥ साहारण पत्तेया, वण
सइजीवा इहा सुए न्णिया ॥ जेसिमणंताणं तणु, एगा साहारणा तेऊ ॥ ७ ॥
कंदा अंजुर किसलय, पणगा सेवाल भूमि फोडा य ॥ अल्लयतिय गज्जर मो,
ब वहुला धेग पद्धंका ॥ ९ ॥ कोमलफलं च सबं, गूढसिराईं सिणाइपत्ता
इं ॥ धोहरि कुअरि गुण्णलि, गलोइपसुहा य बिनरुहा ॥ १० ॥ इच्चाइणो
अणेगे, हवंति भेया अणंतकायाणं ॥ तेसि परिजाणणहं, लक्खणमेयं सुए
नणियं ॥ ११ ॥ गूढसिरसंधियवं, समभंगमहीरुगं च बिनरुहं ॥ साहारणं
सरीरं, तविवरीयं च पत्तेयं ॥ १२ ॥ एगसरीरि एगो, जीवो जेसिं तु तेय पत्ते
या ॥ फल फूल बद्धि कठा, मूला पत्ताणि बीयाणि ॥ १३ ॥ पत्तेयं तरुसुत्तं,
पंचवि पुढवाइणो सयललोए ॥ सुहुमा हवंति नियमा, अंतसुहुत्तानु अद्धि
स्सा ॥ १४ ॥ संख कवह्य गंजुल, जलो य चंदणग अलस लहगाइं ॥ मेह

प्रकरण.

॥ १ ॥

1

रि किमि पूयरगा, बेइंदियमाइ वाहाई ॥ २५ ॥ गोमी मंकण जूआ, पिपी
 लि उहेहिया य मक्कोडा ॥ इह्विय घयमिह्वीत, सावय गोकीड जाईत ॥ २६ ॥
 गह्वय चोर कीडा, गोमयकीडा य धन्नकीडा य ॥ कुंशु शुवालिय इलिया,
 तेइंदिय इंदगोवाई ॥ २७ ॥ चजरिंदिया य विहू, ठिक्कण नमरा य नमरिया
 तिह्ना ॥ मन्हिय रुंसा मसगा, कंसारी कविलनेलाई ॥ २८ ॥ पंचिंदिया य च
 ज्हा, नारय तिरिया मणुस्स देवा य ॥ नेरइया सत्तविहा, नायवा पुढवि ने
 एणं ॥ २९ ॥ जलयर थलयर खयरा, तिविहा पंचिंदिया य तिरिखा य ॥ सु
 सुमार मन्न कन्नव, गाहा मगरा य जलचारी ॥ ३० ॥ चउपय उरपरिसप्पा,
 नुयपरिसप्पा य थलयरा तिविहा ॥ गो सण नउल पमुहा, बोधवा ते समा
 सेणं ॥ ३१ ॥ खयरा रोमयपस्की, चम्मयपस्की य पायडा चेव ॥ नरलोगाउ
 वाहिं, समुगपस्की वियय पस्की ॥ ३२ ॥ सवे जल थल खयरा, समुह्चि

जीवविपः

॥ ३ ॥

मा गप्त्रया ड्हा हुंति ॥ कम्मा कम्मग नूमी, अंतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥
दसहा नवणाद्विर्वई, अठविहा वाणमंतरा हुंति ॥ जोइसिया पंचविहा,
इविहा वेमाणिया देवा ॥ २४ ॥ सिंहा पनरस नेया, तिहातिवाइ सिंहेनेए
णं ॥ एए संखेवेणं, जीवविगप्पा समक्काया ॥ २५ ॥ एएसिं जीवाणं, सररी
माउं ठिई सकायम्मि ॥ पाणा जोणि पमाणं, जेसिं जं अठि तं न्णिमो
॥ २६ ॥ अंगुलअसंखन्नागो, सररीमेगिंदियाण सर्वेसिं ॥ जोयण सहस्स
मद्वियं, नवरं पत्तेयरुक्काणं ॥ २७ ॥ बारस जोयण तिन्नी, गाऊआ जोयणं
च अणुकमसो ॥ वेइंदिय तेइंदिय, चजरिंदिय देह सुद्धतं ॥ २८ ॥ धणुसयपं
च पमाणा, नेरइया सत्तमाइ पुढवीए ॥ ततो अरुद्धूणा, नेया रयणप्पहा
जाव ॥ २९ ॥ जोयण सहस्स माणा, म्हा उरगा य गप्त्रया हुंति ॥ धणुह
पुहुत्तं पंखी, नुअचारी गाउअ पुहुत्तं ॥ ३० ॥ खयरा धणुहपुहुत्तं, नुअगा

नरगा य जीयणपुहुत्तं ॥ गावञ्च पुहुत्तं मित्ता, सम्मुह्णिमा चउपया न्णियां
 ॥ ३२ ॥ बध्वेव गावञ्चाइ, चउपया गप्पया मुण्येयवा ॥ कोसतिगं च मणुस्सा,
 उक्कोस सरिणमाणेणं ॥ ३२ ॥ इसाणंत सुराणं, रयणीउ सत्त देह सुच्चतं ॥
 डुग डुग डुग चउगेवि, ऊ णुत्तरेक्किक्कपरिहाणी ॥ ३३ ॥ बावीसा पुठवीए,
 सत्त य आउस्स तिन्नि वाउस्स ॥ वाससहस्सादस तरु, गणाण तेऊ तिरित्ता
 उ ॥ ३४ ॥ वासाण बारसाऊ, बिइंदियाणं तिइंदियाणं तु ॥ अऊणपन्नदि
 णाणं, चउरिंदीणं तु बम्मासा ॥ ३५ ॥ सुरनेरइयाण विइं, उक्कोसा साग
 राणि तित्तीसं ॥ चउपय तिरिय मणुस्सा, तिन्नि य पलिउवमा हुंति ॥ ३६ ॥
 जलयर उरञ्चुअगाणं, परमाऊ होइ पुवक्कोडीउ ॥ पक्कीणं पुण न्णियउ,
 असंखजागो य पलियस्स ॥ ३७ ॥ सध्वे सुहुमा साहा, रणा य सम्मुह्णिमा
 मणुस्सा य ॥ उक्कोस जहन्नेणं, अंतमुहुत्तं चियजियंति ॥ ३८ ॥ उगाहणाउ

जीववि०

॥ ३ ॥

माणं, एवं संखेवत समकायं ॥ जे पुण अह विसेसा, विसेससुत्ताज ते ने
या ॥ ३ए ॥ एगिंदिया य सवे, असंख उस्सण्णिणीसकायस्मि ॥ उवळं
ति चयंति य, अणंतकाया अणंतात ॥ ४० ॥ संखिज्ज समा विगळा, सत्तठ
नवा पणिंदि तिरि मणुअ ॥ उवळंति सकाए, नारयदेवा य नो चेव ॥ ४१ ॥
इसहा जिआण पाणा, इंदिय जसास आउ बल रूवा ॥ एगिंदिएसु चउरो,
विगळेसु व सत्त अठेव ॥ ४२ ॥ असान्निसन्नीपंचिं, दिएसु नवदस कमेण
बोधवा ॥ तेहि सह विण्णंगो, जीवाणं नन्नए मरणं ॥ ४३ ॥ एवं अणोरपरारे,
संसारे सायरस्मि नीमस्मि ॥ पत्तो अणंतसुत्तो, जीवेहिं अपत्तधम्मोहिं
॥ ४४ ॥ तह चउरासी लखा, संखा जोणीण होइ जीवाणं ॥ पुढवाइण च
उद्धं, पत्तेयं सत्त सत्तेव ॥ ४५ ॥ इस पत्तेय तरूणं, चउदस लखा द्ववंति
इयरेसु ॥ विगळिंदिएसु दो दो, चउरो पंचिंदि तिरियाणं ॥ ४६ ॥ चउरो चउ

प्रकरण.

॥ ३ ॥

रो नारय, सुराण मणुआण चउदस हवंति ॥ संप्रिंदिआउ सवे, बुलसी ल
 खाउ जोणीणं ॥ ४७ ॥ सिधाण नडि देहो; न आउ कम्मं न पाण जोणीउ ॥
 साइ अणंता तेसिं, विई जिणंदागमे ञणिया ॥ ४८ ॥ काले अणाइनिह
 णे, जोणि गहसस्मि ञीसणे इह ॥ ञमिया ञमिहंति चिरं, जीवा जिणव
 यण मलहंता ॥ ४९ ॥ ता संपइ संपत्ते, मणुअत्ते उद्धहे वि संमत्ते ॥ सिरिसं
 तिसूरि सिंठे, करेह ञो उज्जमं धम्मं ॥ ५० ॥ एसो जीववियारो, संखेवरु
 ईण जाणणहेऊ ॥ संखित्तो उद्धरिउ, रुह्वाउ सुयससुहाउ ॥ ५१ ॥ इति जीव
 सं० ॥ अथ श्रीनवतत्त्वप्रकरणप्रारंभः ॥ जीवाऽजीवा पुंसं, पावाऽसव
 संवरो य निज्जराणा ॥ बंधो सुक्को य तथा, नव तत्ता हुंति नायवा ॥ १ ॥
 चउदस चउदस बाया, लीसा बासीय हुंति बायाला ॥ सत्तावन्नं बारस, चउ
 नव ज्ञेया कमेणिसिं ॥ २ ॥ एगविह उविह तिविहा, चउविहा पंच ठविहा

जीवा ॥ चेयण तस इयरोहिं, वेय गई करण काएहिं ॥ ३ ॥ एणिंदिय सुहुमि
 यरा, सन्नियर पणिंदिया य स बि ति चउ ॥ अपजत्ता पज्जता, कमेण चउ
 दस जियघाणा ॥ ४ ॥ नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा ॥ वीरियं उ
 वउणो य, एयं जीवस्स लक्षणं ॥ ५ ॥ आहार सरिंदिद्य, पज्जती आण
 पाण ज्ञास मणे ॥ चउ पंच पंच षण्णिय, इग विगला सन्नि सन्नीणं ॥ ६ ॥ प
 णिंदिय तिबलूसा, साऊदसपाण चउ ष सग अठ ॥ इग उ तिं चउरिंदीणं,
 असन्नि सन्नीण नव दस य ॥ ७ ॥ इति जीवतत्वम् ॥ धम्मा ऽधम्मा ऽगासा,
 तिय तिय ज्ञेया तद्देव अघा य ॥ खंधा देसपएसा, परमाणु अजीव चउदस
 हा ॥ ८ ॥ धम्माऽधम्मा पुग्गल, नह कालो पंच हुंति अज्जीवा ॥ चउणस
 हावो धम्मो, थिरसंगणो अहम्मो य ॥ ९ ॥ अवगाहो आगासं, पुग्गल
 जीवाण पुग्गला चउहा ॥ खंधा देसपएसा, परमाणु चेव नायथा ॥ १० ॥ सद्धं

धयार उज्जोय, पन्ना बाया तवेहिआ ॥ वन्न गंध रसा फासा, पुग्गलाणं तु
 लक्खणं ॥ ११ ॥ एगाकोडिसतसधि, लक्का सत्तहुत्तरी सहस्सा य ॥ दोयस
 या सोलहिया, आवलिया इग सुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥ समयाऽवली सुहुत्ता,
 दीहा पक्का य मास वरिसा य ॥ न्णणिउ पलिआ सागर, उस्सप्पिणी सप्पिणी
 कालो ॥ १३ ॥ परिणामि जीव सुत्ता, सपएसा एग खित्त किरिआए ॥ निच्चं
 कारण कत्ता, सव्वगद मिदि रहिअपवेसे ॥ १४ ॥ इत्यजीवतत्वम् ॥ सा उच्च
 गो य मणु इग, सुर इग पंचिदिजाइ पणदेहा ॥ आइ ति तएणु वंग्गा, आ
 इम संघयण संग्गाणा ॥ १५ ॥ वन्नचउक्का गुरु लहु, परघा ऊसास आय तु
 ज्जोयं ॥ सुन्नखगइ नमिण तस दस, सुर नर तिरियाउ तिब्बरं ॥ १६ ॥ त
 स बायर पक्कतं, पत्तेयधिरं सुन्नं च सुन्नगं च ॥ सुस्सर आइऊ जसं, त
 साइ दसगं इमं होइ ॥ १७ ॥ इति पुय्यतत्वम् ॥ नाएंतराय दसगं, नवबीजे

नवत०
॥ ५ ॥

नीय साय भिन्नं ॥ धावर दस निरयतिगं, कसाय पणवीसतिरियङ्गं ॥ २७ ॥
इग वि ति चतुर्जाईत, कुखगइ उवघाय हुंति पावस्स ॥ अपसहं वन्न चक्र,
अपढम संघयण संवाणा ॥ २८ ॥ धावर सुहुम अपङ्क, साहारण मधिर
मसुन्न डन्नगाणि ॥ इस्सर णाइक्क जसं, धावरदसगं तु विस्सेयं ॥ २९ ॥
इति पापतत्वम् ॥ इंदिअ कसाय अषय, जोगा पंच चतु पंच तिसि कमा ॥ कि
रिअउ पणवीसं, इमाउ ताउ अपुक्कमसो ॥ ३० ॥ काइय अहिगरणीअ,
पावसिअ पारितावणी किरिया ॥ पाणाइवाइ रंनिअ, परिगहिया मायवती
अ ॥ ३१ ॥ मिहा दंसण वती, अपन्नखाणाय दिधि पुठीअ ॥ पाडुच्चिअ
सामंतो, वणीअ नेसन्दि साहठी ॥ ३२ ॥ आणवणि विअरणीअ, अण
जोगा अणवकंखपच्चइअ ॥ अत्तापणग समुदा, ए पिक्क दोसे रिअोवहि
अ ॥ ३३ ॥ इत्याश्रवतत्वम् ॥ समई गुत्ति परीसह, जइधम्मो जावणा च

रिताणि ॥ पण ति छवीस दस बार, स पंचनेएहि सगवसा ॥१५ ॥ इथ्या जासे
 सणा दाणे, उच्चारे सुमई सुअं ॥ मणयुत्ति वययुत्ति, काययुत्ति तहेव य
 ॥१६ ॥ खुहा पिवासा सी उण्हं, दंसा चेलारइ ढिठे ॥ चरिआ निसिआ सि
 जा, अक्कोस वह जायणा ॥ १७ ॥ अलान रोग तण फासा, मल सक्कार प
 रीसहा ॥ पनाअसाण सम्भत्तं, इअ बावीसं परीसहा ॥ १८ ॥ खंती महव अ
 क्तव, सुत्ती तव संजमे अ बोधवे ॥ सच्चं सोअं आकिं, चणं च बंनं च जइध
 म्मो ॥ १९ ॥ पढम मणिच्च मसरणं, संसारो एगयाय अस्सत्तं ॥ असुइत्तं आ
 सव सं, वरो अ तह निज्जरा नवमी ॥ ३० ॥ लोगसहावो बोही, डलहा ध
 म्मस्स साहगा अरिहा ॥ एअान नावणाउ, नावे अवा पयत्तेणं ॥३१ ॥ सामाइ
 अन्न पढमं, वेठवठावणं भवेवीअं ॥ परिहारविसुधीयं, सुद्धमं तह संपरायं च
 ॥३२ ॥ ततोअ अहक्कायं, स्वायं सवम्मि जीवलोगम्मि ॥ जं चरिअण सुविहिआ,

वर्चति अयरामं ठाणं ॥ ३३ ॥ इति संवरत्वं ॥ अणसण मूणोयरिआ, वृत्तीसं
 खेवणं रसच्चाउ ॥ काय किलेसो संली, एआयबबोतवो होइ ॥ ३४ ॥ पायहि
 तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सबाउ ॥ जाणं उस्सगो विअ, अमितरउ तवो होइ
 ॥ ३५ ॥ बारसविहं तवो नि, ज्जराय बंधो चउविगणो अ ॥ पयई विअणु
 भाग, पएस नेएहि नायवो ॥ ३६ ॥ इति निर्जरातत्वम् ॥ पयइ सहावोवुत्ता,
 विइ कालावहारणं ॥ अणुभागो रसो नेउ, पएसो दलसंचउ ॥ ३७ ॥ पढ
 पडिहार सि मऊ, हडचित्तकुलाल अंगारीणं ॥ जह ए एसिंजावा, कम्मा
 एवि जाण तह भावा ॥ ३८ ॥ इह नाण दंसणावर, ए वेय मोहाउ नाम गो
 आणी ॥ विग्धं च पण नव उ अ, ठवीस चउ ति सय उ पणविहं ॥ ३९ ॥
 नाणे य दंसणे य, वेअणिए चैव अंतराईए ॥ तीसं कोडाकोडी, अयराणं ति
 इ य उक्कोसा ॥ ४० ॥ सत्तरि कोडाकोडी, मोहणिए वीस नाम गोएसु ॥ ति

तीसं अथराई, आउछिई बंध उक्कोसा ॥ ४२ ॥ बारस मुहुत जहभा, वेय
 णिए अठ नाम गोएसु ॥ सेसाणंतमुहुतं, लहुछिई सनायवा ॥ ४२ ॥ इति
 बंधतत्त्वं ॥ संतपय परूवणया, दवपमाणं च खित्तकुसणाय ॥ कालो अ अंत
 रं जा, ग नावअप्पा बहु चेव ॥ ४३ ॥ संतं सुध पयत्ता, विजंतं खकुसुमं व न
 अंसंतं ॥ मुक्कत्ति पयं तस्सज, परूवणा मग्गणाईहिं ॥ ४४ ॥ गइ इंदीए
 काये, जोए वेए कसाय नाणे य ॥ संजम दंसण लेसा, भव सम्भे सन्निआ
 हारे ॥ ४५ ॥ नरगइ परिणदि तसच्चव, सखि अहक्काय खइअ सम्भत्ते ॥ मु
 ख्कोणाहार केवल, दंसण नाणे न सेसेसु ॥ ४६ ॥ दवपमाणे सिध,
 णं जीव दवाणि हुंति एंताणि ॥ लोगस्स असंखिजे, जागे इक्को य सवे वि ॥ ४७ ॥
 कुसणा अहिआ कालो, इगसिध पडुच्च साइउंणंतो ॥ पडिवाया भावति,
 सिधणं अंतरं नडि ॥ ४८ ॥ सब जियाण मणंते, जागे तेतेसि दंसणं नाणं

नवतण
॥ ७ ॥

॥ खइए जावे परिणा, मि एअ घुण दोइ जीवत्तं ॥ ४ए ॥ थोवा नपुंस सि
धा, थी नर सिधा कमेण संखगुणा ॥ इअ मुक्क ततमेअं, नव तत्ता लेस
उ न्निअ ॥ ५० ॥ जीवाइ नव पयठे, जो जाणइ तस्स दोइ सम्मतं ॥
जावेण सहहंतो, अयाणमाणोवि सम्मतं ॥ ५१ ॥ सवाइ जिणोसर जा, सिअ
इ वयणाई नमहा हुंति ॥ इह बुधी जस्स मणे, सम्मतं निच्चलं तस्स
॥ ५२ ॥ अंतो मुहुत्त मित्तं, पि फासिअं जेहिं हुळ्ळ सम्मतं ॥ तेसिं अ
दुपुगल, परिअट्ठो वेव संसारो ॥ ५३ ॥ उस्सप्पिणी अणंता, पुग्गल परिअ
ट्ठउ सुणेअधो ॥ तेणंताती अधा, अणागयधा अणंत गुणा ॥ ५४ ॥ जिण
अजिण तिठ तिठा, गिहिं अन्न सलिंग थी नर नपुंसा ॥ पत्तेअ सयंबुधा,
बुधवोहि कणिकाय ॥ ५५ ॥ जिणसिधा अरिहंता, अजिण सिधा य पुंनरि
या पमुहा ॥ गणहारि तिठसिधा, अतिठसिधा य मरुदेवी ॥ ५६ ॥ गिहिंलिं

प्रकरण.

॥ ७ ॥

ग सिध नरहो, बलकलचरीय अन्न लिंगम्भि ॥ साहू सलिंग सिधा, धी
 सिधा चंदणा पमुहा ॥ ५७ ॥ पुं सिधा गीयमाई, गंगीयाई नपुंसया सिधा
 ॥ पतेय सयंबुधा, नणिया करकंदुकविलाई ॥ ५८ ॥ तह बुधबोद्विगुरुबो, हिया
 इग समय एग सिधा य ॥ इग समएवि अणेगा, सिधा ते ऐगसिधाय ॥ ५९ ॥
 जइआइ होइ पुढा, जिणाण मगंगमि उत्तरं तइया ॥ इकस निगगीयस्स,
 अणंत नागो य सिधिगड ॥ ६० ॥ इति मोक्तत्वं ॥ इति श्रीनिवतत्वं समाप्तं ॥
 अथ श्रीदंरुकप्रकरणं लिख्यते ॥ नमिडं चनवीसजिणे, तस्सुत्तवियारलेसदे
 सणड ॥ दंरुगपण्हिं तेच्चिय, थोसामि सुणेह भो भवा ॥ १ ॥ नेरइया असुरा
 ई, पुढवाइ बेंदियादउं चेव ॥ गप्पय तिरिय मणुस्सा, वंतर जोइसिय वेमा
 णी ॥ २ ॥ संखित्तयरीउ इमा, सररीमोगाहणा य संघयणा ॥ सन्ना संवाण
 कसा, य लेस इंदीय छ समुघाथा ॥ ३ ॥ दिठी दंसण नाणे, जोएवउंगो

ववाय चवण विई ॥ पज्जति किमाहारे, सस्मि गई आगई वेए ॥ ४ ॥ चउ ग
 प्र तिरिय वाउसु, मणुआणं पंचसेस ति सरीरा ॥ थावर चउगे उहउ, अं
 गुलअसंखजाग तणु ॥ ५ ॥ सबेसिं पि जहन्ना, साहाविय अंगुलस्स संखं
 सो ॥ उक्कोस पणसथ धणु, नेरइया सत्त हह सुरा ॥ ६ ॥ गप्पतिरि सहस
 जोयण, वणस्सई अहिय जोयण सहस्सं ॥ नर तेइदि तिगाऊ, बेइदिय जो
 यणे वार ॥ ७ ॥ जोयणमेगं चउरिं, दि देह मुच्चत्तणं सुयेए न्निणियं ॥ वेजविय दे
 हं पुए, अंगुलसंखं समारंजे ॥ ८ ॥ देव नर अहिय लक्कं, तिरियाणं न
 वय जोयण सथाइं ॥ उउणं तु नारायाणं, न्निणियं विजविय सरीरं ॥ ९ ॥ अंत
 सुहुत्तं निरए, सुहुत्त चत्तारि तिरिय मणुएसु ॥ देवेसु अइमासो, उक्कोस विज
 वणा कालो ॥ १० ॥ थावर सुर नेरइया, अस्संघयाणा य विगल ठेवठा ॥ संघय
 ण ष्ठं गप्पय, नर तिरिएसु सुणेयवं ॥ ११ ॥ सबेसिं चउ दह वा, सस्सा स

वे सुरा य चउरंसा ॥ नर तिरिय बसंवाणा, हुंन विगळिंदि नेरइया ॥ १५ ॥
 नाणाविह धय सूई, बुब्बुय वण वाउ तेउ अपकाया ॥ पुहवी मंसूर चंदा,
 कारा संवाणउ न्णिया ॥ १३ ॥ सवे वि चउकसाया, लेस बगं गप्प तिरिय
 मणुएसु ॥ नारय तेऊ वाऊ, विगळा वेमाणिय तिलेसा ॥ १४ ॥ जोइसिय
 तेउ लेसा, सेसा सवे वि हुंति चउलेसा ॥ इंदियदारं सुगमं, मणुआएणं
 सत्तं समुग्घाया ॥ १५ ॥ वेयण कंसाय मरणे, वेउव्विय तेय एय आहारे ॥
 केवलिय समुग्घाया, सत्त इमे हुंति सन्नीणं ॥ १६ ॥ एणेंदियाण केवलि,
 तेयाहारण विणाउ चत्तारि ॥ ते वेउव्विय वज्जा, विगळा सन्नीण ते चेव
 ॥ १७ ॥ पण गप्प तिरि सुरेसु, नारय वाऊसु चउर तिय सेसे ॥ विगल डुदि
 ठी थावरं, मिहत्ती सेस तिय दिठी ॥ १८ ॥ थावर बितिसु अचकु, चउ
 रिंदिसु त हुगं सुए न्णियं ॥ मणुआ चउ दंसणियो, सेसेसु तिगं तिगं न्णियं

॥ २९ ॥

॥ २९ ॥ अन्नाण नाण तिय तिय, सुर तिरि निरए धिरे अनाण डुगं ॥ नाणन्नाण
डु विगले, मणुए पण नाण तिअनाणा ॥ २७ ॥ इक्कारस सुर निरए, तिरिएसु तेर
पनर मणुएसु ॥ विगले चउ पण वाए, जोगतियं धावरे होई ॥ २८ ॥ उवडंगा म
णुएसु, बारस नव निरय तिरिय देवेसु ॥ विगलडुगे पण बकं, चउरिंदिसु
धावरे तियगं ॥ २९ ॥ संख मसंखा समए, गप्पय तिरि विगल नारय सुरा य ॥
मणुआ नियमा संखा, वण एंता धावर असंखा ॥ ३० ॥ असन्नि नर असं
खा, जह उववाए तेहेव चवणेवि ॥ बावीस सग ति दस वा, स सहस उक्किठ
पुढवाई ॥ ३१ ॥ तिदिण गिग ति पद्धाऊ, नर तिरि सुर निरय सागर तिती
सा ॥ वंतर पद्धं जोइस, वरिस लखाहिअं पलिअं ॥ ३२ ॥ असुराण अहिय
अयरं, देसूण डु पद्धयं नवनिकाए ॥ बारस वासुणु पण दिण, बम्मासु
क्किठ विगलाऊ ॥ ३३ ॥ पुढवाइ दस पयाणं, अंतं मुहुत्तं जहन्न आजतिई ॥

दस सहस वरिस विद्वा, भवणाहिव निरयवंतरिया ॥ ३७ ॥ वेमाणिय जो
 इसिञ्चा, पद्धत यठं सञ्चाउञ्चा हुंति ॥ सुर नर तिरि निरएसु, उ पक्कति
 थावरे चलगं ॥ ३८ ॥ विगले पंच पजति, बहिसि आहार होइ सवेसिं ॥ पण
 गाइ पए भयणा, अह ससि तियं नणिस्सामि ॥ ३९ ॥ चउविह सुर तिरिएसु,
 निरएसु अ दीहकालिणी ससा ॥ विगले हेउवएसा, सन्नारहिया थिरा सवे
 ॥ ३० ॥ मणुआण दीह कालिञ्च, दिठीवाउवएसिञ्चा केवि ॥ पज पण तिरि
 मणुअ चिय, चउविह देवसु गहंति ॥ ३१ ॥ संखाउ पक्क पणेंदि, तिरिय
 नरेसू तहेव पक्कते ॥ नू दग पतेयवणे, एएसु चिय सुरागमणं ॥ ३२ ॥ पक्क
 त संख गज्जय, तिरिय नरा निरय सत्तगे जंति ॥ निरउवढा एएसु, उववजंति
 न सेसेसु ॥ ३३ ॥ पुढवी आउ वणस्सइ, मझे नारय विवज्जिआ जीवा ॥ स
 वे उववजंति, निय निय कम्माणुमाणेणं ॥ ३४ ॥ पुढवाइ दस पएसु, पु

ढवी आऊ वणस्सई जंति ॥ पुढवाइ दस पण्हिय, तेऊ वाऊसु उववाउ ॥ ३५ ॥
 तेऊ वाऊ गमाणं, पुढवी पमुहम्मि होइ पय नवणे ॥ पुढवाइ ठाणदसगा, विग
 लाई तिय ताहि जंति ॥ ३६ ॥ गमणा गमाणं गप्पय, तिरिआणं सयल जीव
 वाणेषु ॥ सब्ब जंति मणुआ, तेऊ वाऊहिं नो इंति ॥ ३७ ॥ वेय तिय ति
 रि नरेसु, इढी पुरिसो अ चउविह सुरेसु ॥ थिर विगल नारएसु, नपुंस वेउह
 वइ एगो ॥ ३८ ॥ पऊ मणु वायरगी, वेमाणिय भवण निरय वितरिआ ॥
 जोइस चउ पण तिरिया, बेइदि तिइदि नआऊ ॥ ३९ ॥ वाऊ वणस्सई चि
 य, अहिआ अहिआ कमेण मेहुंति ॥ सबैवि इमे जावा, जिणा मए णंतसो
 पत्ता ॥ ४० ॥ संपइ तुम्ह नत्तस्स, दंम्य पय भमण भग्ग हिययस्स ॥ दंम
 तियविरयसुलहं, लहु मम दिंतु सुक्कपयं ॥ ४१ ॥ सिरि जिणहंस मुणीस
 र, रऊे सिरि धवलचंदसीसिणं ॥ गजसारेणं लिहिया, एसा विस्सत्ति

अप्पहिच्चा ॥ ४९ ॥ इतिश्री दंभकप्रकरणं संपूर्णम् ॥ ४९ ॥ ४९ ॥ ४९ ॥
 ॥ अथ श्रीलघुसंघयणी प्रारभ्यते ॥ नमिय जिणं सवन्तुं, जगपुज्जं जगगुरुं
 महावीरं ॥ जंबुद्वीव पयत्ते, बुढं सुत्ता सपरहेज्ज ॥ २ ॥ संना जोयण वासा,
 पवथ कूमा य तिब्ब सेठीउ ॥ विजय ह्वह सलिलाउ, पिंमेसिं होइ संघयणी,
 ॥ ३ ॥ एउय सयं खंमाणं, भरहपमाणेण भाइए लके ॥ अहवा एउअसय
 गुणं, भरह पमाणं हवइ लकं ॥ ३ ॥ अहविग खंमे नरहे, दो हिमवंते अ
 हेमवइ चउरो ॥ अठ महाहिमवंते, सोलस खंमाइ हरिवासे ॥ ४ ॥ बत्तीसं
 पुण निसठे, मिलिया तेसठि बीयपासे वि ॥ चउसठिउ विदेहे, तिरासि पिंमेइ
 एउअसयं ॥ ५ ॥ जोयण परिमाणाइं, सम चउरंसाइं इह खंमाइं ॥ लकस्स
 य परिहीए, तप्पाय गुणेय दुंतेव ॥ ६ ॥ विखंन वग्ग दह्हुण, करणी वट्टस्स
 परिउ होई ॥ विखंन पाय गुणिउ, परिउ तरस्स गणियपयं ॥ ७ ॥ परिही

जलुसं०
॥ ११ ॥

तिलक सोलस, सहस्स दोयसय सत्तवीस हिया ॥ कोस तिग अठवीसं, ध
णु सय तेरंगुलध हियं ॥ ७ ॥ सत्तेवयकोडिसया, एउआ ठप्पन्न सय सहस्सा
इं ॥ चउणजयं च सहस्सा, सयंदिवहं च साहीयं ॥ ए ॥ गउअ मेगं पनरस,
धणुसया तह धणुणि पनरस्स ॥ सठिं च अंगुलाइं, जंबुहीवस्स गणियपयं
॥ १० ॥ नरहाइ सत्त वासा, वियह चउ चउरतिस वडियरे ॥ सोलस व
स्कार गिरि, दो चित्त विचित्त दो जमगा ॥ ११ ॥ दोसय कणय गिरीणं, चउ
गयंदता य तह सुमेरू य ॥ ठ वासहरा पिंने, एणुणसत्तरि सया डुन्नी ॥ १२ ॥
सोलस वस्कारेसु, चउ चउ कूना य हुंति पत्तेयं ॥ सोमणस गंधमायण, सत्त
ठय रुपि महाहिमवे ॥ १३ ॥ चउतीस वियहेसु, विजुप्पह निसठ नीलवं
तेसु ॥ तह मालवंत सुरगिरि, नव नव कूनाइं पत्तेयं ॥ १४ ॥ हिमसिहरिसु
इकारस, इय इगसठी गिरीसु कूनाणं ॥ एगते सबधणं, सयचउरो सत्तसठीयं

॥२५॥ चञ्चल सत्त अठ नवगे, गारसकूमेहिं गुणह जहसंखं ॥ सोलस ड्ड गुणया
 लं, ड्वेय सगंसठि सयचजरो ॥ २६ ॥ चञ्चलीसं विजएसु, जसहकूना अठमेरुजंबुं
 मि ॥ अठय देवकुराई, हरिकूफ हरिस्सए सठी ॥ २७ ॥ मागह वरदाम पन्ना, सं तिह
 विजयेसु एरवय भरहे ॥ चञ्चलीसा तिहिं गुणिया, डुरुत्तरसयं तु तिबाणं ॥ २८ ॥
 विजाहर अमिउगिय, सेठीउ डुन्नि डुन्नि वेअहे ॥ इय चञ्चल गुण चञ्चलीसा, ठ
 तीस सयं तु सेठीणं ॥ २९ ॥ चक्की जेयवाइ, विजयाई इह डुंति चञ्चलीसा ॥ म
 ह दह ठ षञ्जमाई, कुरूसु दसगंति सोलसगं ॥ ३० ॥ गंगा सिंधू रत्ता, रत्त
 वई चञ्चल नईउ पत्तेयं ॥ चञ्चलसहिं सहसेहिं, समग वच्चंति जलहिंमि ॥ ३१ ॥
 एवं अमिउतरिया, चजरो पुण अठवीस सहसेहिं ॥ पुणरवि ढपन्नेहिं, सहसे
 हिं जंति चञ्चल सलिला ॥ ३२ ॥ कुरुमढे चञ्चलासी, सहसाई तहय विजय सो
 लससु ॥ बत्तीसाण नईणं, चञ्चलस सहसाई पत्तेयं ॥ ३३ ॥ चञ्चलस सह

स्स गुणिया, अडतिस नइउ विजय मच्चिद्धा ॥ सीडयाए निवडं, ति तह्य
सीयाइ एमेव ॥ १४ ॥ सीया सीडया वि य, वत्तीससहस्सपंचलक्केहिं ॥ स
वे चउदस लाका, बप्पन्न सहस्स मेलविया ॥ १५ ॥ उज्जोयणसकोसे, गंगा
सिंधूण विठरो मूले ॥ दसगुणिउ पऊंते, इय उ ड गुणणेण सेसाणं ॥ १६ ॥
जोयणसयसुच्चिठा, कणयमया सिहरिउद्धहिमवंता ॥ रुप्पि महाहिमवंता,
उमुज्जा रुप्पकणयमया ॥ १७ ॥ चत्तारि जोयण सए, उच्चिठो निसठ नी
लवंतो य ॥ निसठो तवणिकमउ, वेरुडियो नीलवंतो य ॥ १८ ॥ सवे वि प
वयवरा, समयखित्तिम्मि मंदर विहुणा ॥ धरणितळे सुवगाढा, उस्सेय चउठभा
यम्मि ॥ १९ ॥ खंनई गाहाहिं, दसहिं दारेहिं जंबुदिवस्स ॥ संघघणी सम्म
त्ता, रइया हरिउदसूरीहिं ॥ २० ॥ इति श्रीलघुसंग्रहणीप्रकरणं संपूर्णम् ॥
॥ अथ बृहत्संग्रहणीसूत्राणि ॥ नमिउं अरिहंताई, विइ चवणो गाहणा य प

तेयं ॥ सुरनारायण बुधं, नरतिरियाणं विणा भवणं ॥ २ ॥ उववाय चवण
 विरहं, संखं इगसमइअं गमागमणे ॥ दसवाससहस्साइं, भवणवईणं जहन्नति
 ई ॥ १ ॥ चमर बलि सार महिअं, तदेवीणं तु तिसि चत्तारि ॥ पलियाइं स
 हाइं, सेसाणं नवनिकायाणं ॥ ३ ॥ दाहिण दिवहपलिअं, उत्तरउ हुंति छिन्नि दे
 सूणा ॥ तदेवि मध पलिअं, देसूणं आजसुक्कोसं ॥ ४ ॥ वंतरिआण जहन्नं,
 दसवाससहस्स पलिअसुक्कोसं ॥ देवीणं पलिअधं, पलिअं अहिअं ससिरवी
 णं ॥ ५ ॥ लकेण सहस्सेण य, वासाण गहाण पलिअमेणसिं ॥ विइ अधं दे
 वीणं, कमेण नरुत्ततराणं ॥ ६ ॥ पलिअधं चउजागो, चउ अउजागाहिगा
 उ देवीणं ॥ चउअले चउजागो, जहन्नमउजाग पंचमए ॥ ७ ॥ दोसाहि स
 तसाहिय, दस चउदस सतर अयर जा सुक्को ॥ इक्किक्क महिय मित्तो, जा इ
 गतीसुवरि गेविजे ॥ ८ ॥ तित्तीस पुत्तरेसु, सोहम्माइसु इमा विइ जिठा ॥

सोहम्मे ईसाणे, जहन्नविई पलिअ महियं च ॥ ९ ॥ दोसाहि सत दस चउद
स, सत्तर अयराइ जा सहस्सारे ॥ तप्परउ इक्किं, अहिअं जा पुत्तर चउके
॥ १० ॥ इगतीससागराइं, सबडे पुण जहन्नविइ नहि ॥ परिगहिआणिअ रा
णिय, सोहम्मीसाणदेवीणं ॥ ११ ॥ पलिअं अहिअं च कमा, विई ज
हन्ना इउअ उक्कोसा ॥ पलिअ्याइं सत्त पप्सा, स तह्य नव पंचवन्ना य ॥ १२ ॥
पण ठ चउ अठ य, कमेण पत्तेअ मग्गमहिसीडि ॥ असुर नागाइ वंतर,
जोइस कण्णगिंदाणं ॥ १३ ॥ इसुतेरस इसुवारस, ठ पण चउ चउ डो ड
गे अ चउ ॥ गेविज्ज पुत्तरे दस, बिसिठि पयरा उवरि लोए ॥ १४ ॥ सोहम्मुक्को
सठिइ, निअपयरविहत्त इब्बसंयुणिअ ॥ पयरुक्कोस ठिइउ, सबजहन्नउपलि
यं ॥ १५ ॥ सुरकण्णविइविसेसो, सगपयरविहत्त इब्बसंयुणिउ ॥ हिठ्ठिअठिइस
हिउ, इन्डियपहरम्मि उक्कोसा ॥ १६ ॥ सोमजमाणं स तिजा, ग पलिय वरुणस्स

देसूणा॥वेसमणे दो पळिया, एस विई लोणपाळाणं॥ २७॥कप्पस्स अंतपथरे, निय
 कप्पवन्सिया विमाणउ ॥ इंदनिवासा तेसिं, चक्रुदिसिं लोणपाळाणं ॥ २८ ॥
 (सुरेसु विइदारं सम्मतं, एएसु चैव भवणदारं मसुइ) असुरा नाग सुवन्ना, वि
 ङ्कु अग्गीह दीव उदहीअ ॥ दिसि पवण थणिय दसविह, भवणवई तेसु इ
 ड इंददा ॥ २९ ॥ चमरे बलीअ धरणे, भूयाणं देअ वेणुदेवे य ॥ तत्तो अ वेणु
 दाली, हरिकंत हरिस्सहे चैव ॥ ३० ॥ अग्गिसिह अग्गिमाणव, पुसुविसि
 ठे तहेव जलकंते ॥ जलपह तह अमिअगई, मिअवाहण दाहिणुत्तरउ ॥ ३१ ॥
 वेळंबेअ पन्नंजण, घोस महाघोस एसि मन्नयरो ॥ जंबुदीवं बत्तं, मेरुं दंरुं पटु
 काजं ॥ ३२ ॥ चउतीसा चउचत्ता, अठत्तीसा य चत्तपंचएहं ॥ पन्ना चत्ताकमसो, लखा
 भवणए दाहिणउ ॥ ३३ ॥ चउचउलखविहूणा, तावइअ चैव उतरदिसा
 ए ॥ सधे वि सत्तकोडी, बावत्तरि हुंति लखा य ॥ ३४ ॥ चत्तारियकोडीउ, लख

बन्धेव दाहिणे भवणा ॥ तिषेव य कोडीलि, लाखा भावछि उत्तरउ ॥ १५ ॥ रय
 णाए ह्दिठुवरिं, जोयणसहसं विमुत्तु ते भवणा ॥ जंबुद्वीवसमा तह, संख म
 संखिज्ज विन्बारा ॥ १६ ॥ च्छुडामणिएणि गरुडे, वज्जे तह कलस सीह अस्से
 अ ॥ गय मयर वध्माणे, असुराईणं सुणसु चिंधे ॥ १७ ॥ असुरा काला ना
 सु द, हि पंजुरा तह सुवस्स दिसि थणिया ॥ कणगाम विज्जु सिहि दी, व अ
 रुण वाज्ज पिअंगुनिजा ॥ १८ ॥ असुराणवन्नरता, नागो दहि विज्जु दीव सि
 हि नीला ॥ दिसि थणिए सुवन्नाणं, धवला वाज्जण संजुरुई ॥ १९ ॥ चउस
 छि सछि असुरे, बच्च सहस्साइं धरणमाईणं ॥ सामाणिया इमेसिं, चउग्गुणा
 आयरक्काय ॥ २० ॥ रयणाए पढमजोयण, सहसे ह्दिठुवरिं सय सय विठू
 णे ॥ वंतरियाणं रम्मा, भोमा नगरा असंसिज्जा ॥ २१ ॥ बाह्विवाअ अंतो, च
 उरंस अहोअ कसियायारा ॥ भवणवईणं तह वं, तराण इंदुभवणाउ नायथा ॥

॥ ३९ ॥ तहि देवा वंतरिया, वरतरुणीगीयवाइयरवेणं ॥ निचं सुहिया पमुइ
 या, गर्यंपि कालं न याणंति ॥३३॥ ते जंबुदीव नारह, विदेह सम गुरु जहन्न
 मब्धिमगा ॥ वंतर पुण अठविहा, पिसायभूया तहा जस्का ॥ ३४ ॥ रक्स
 किंनर किंपुरिसा, महोरगा अठमा य गंधवा ॥ दाहिणउत्तरभेआ, सोलस तेसिं
 इमे इंदा ॥ ३५ ॥ काले अ महाकाले, सुखुव पडिखुव पुसभहेअ ॥ तह चेव
 माणिभहे, भीमे अ तहा महाभीमे ॥ ३६ ॥ किंनर किंपुरिस सपुरिस, महापु
 रिस तहय अइकाए ॥ महकाए गीअरई, गीअजसे डुनि डुनि कमा ॥ ३७ ॥
 चिंधं कलंब सुलसे, वड खडंगे असोग चंपयए ॥ नागे तुंबरुअखाए, खडंगवि
 वज्जिया रुस्का ॥ ३८ ॥ जस्क पिसाय महोरग, गंधवा साम किंनरा नीला ॥ रक्स
 किंपुरिसा वि अ, धवला भूआ पुणो काला ॥ ३९ ॥ अणपन्नी पणपन्नी, इसिवा
 इ अ भूअवाइए चेव ॥ कंदी अ महाकंदी, कोहंफे चेव पयए आ ॥ ४० ॥ इयपढम

जोयणसए, रयणए अठ वंतरा अवरें ॥ तेसु इह सोलसिदा, रुअग अहो
 दाहियुत्तरउ ॥ ४१ ॥ संनिहिए सामाणे, षाइ विहाए इसिय इसिवाले ॥ इ
 सर महेसरे विय, हवइ सुवहे विसालेय ॥ ४२ ॥ हासे हास रईविय, सेएय
 भवे तहा महासेए ॥ पयगे पयगवईविय, सोलसइंदाण नामांइ ॥ ४३ ॥ सामाणि
 याण चजरो, सहस्स सोलसय आथरक्काणं ॥ पत्तेयं सवेसिं, वंतरवइ ससि
 रवीणं च ॥ ४४ ॥ इंद सम तायतीसा, परिसतिया रक्कलोगपालाय ॥ अणि
 य पइसा अन्निउगा, किब्बिसं दस भवण वेमाणी ॥ ४५ ॥ गंधव नइ हय ग
 य, रइ भड अणियाणि सब इंदाणं ॥ वेमाणियाण वसहा, महिसाय अहोति
 वासीणं ॥ ४६ ॥ तितीस तायतीसा, परिसतिअ लोणपाल चत्तारि ॥ अणि
 आणि सत्त सत्तय, अणियाह्वि वसइंदाणं ॥ ४७ ॥ नवरं वंतर जोइस, इं
 दाण न हुंति लोणपालाउ ॥ तायतीसन्निहाणा, तियसावियतेसिं नहु हुंति ॥

॥ ४८ ॥ समञ्जुतलाड अछहिं, दसूण जोयण सएहिं आरप्र ॥ उवरि दसुतर
 जोयण, सयम्मि चिंठति जोइसिया ॥ ४९ ॥ तब रवी दस जोयण, असीइ
 तडुवरि ससी य रिक्केसु ॥ अह नरणि साइ उवरिं, बहिमूलो अितरे अन्निइ
 ॥ ५० ॥ तार रवि चंद रिक्का, बुह सुक्का जीव मंगल सणिया ॥ सगसय न
 जय दस असिइ, चल चल कमसो तिया चलसु ॥ ५१ ॥ इकारस जोयणस
 य, इगवीसि क्कारसाहिया कमसो ॥ मेरुअलोगबाहिं, जोइसचक्कं चरइ ठाइ
 ॥ ५२ ॥ अइकविठागारा, फलिहमया रम्म जोइस विमाणा ॥ वंतरनयरेहिं
 तो, संखिज्जुणा इमे हुंति ॥ ५३ ॥ ताइ विमाणाइ पुण, सबाइ हुंति फालिहमयाइ ॥
 दगफालीहमया पुण, लवणे जे जोइस विमाणा ॥ ५४ ॥ जोयणिसठि भागा,
 लपन्नडयाल गाउड इगंधं ॥ चंदाइ विमाणाया, म विहरा अइ सुच्चतं ॥ ५५ ॥
 पणयाल लक्क जोयण, नरखित्तं तडिमे सया नमिरा ॥ नरखिताड बहिं

बृहत्सं०
॥ १६ ॥

पुण, अधपमाणा विद्या निम्बं ॥ ५६ ॥ ससिरविगहनकृता, ताराउ हुंति
जहुतरं सिग्धा ॥ विवरीयाउ मद्दहीअ, विमाणवद्दगा कमेणोसिं ॥ ५७ ॥ सोल
स सोलस अड चड, दो सुरसहसा पुरोय दाहिणउ ॥ पठिम उत्तर सीहा,
द्वी वसद्दा ह्या कमसो ॥ ५८ ॥ गद्दअठासी नकृत, अडवीसं तार कोडि
कोडीणं ॥ बासठिसहस नवसय, पणसत्तरि एगससि सिन्नं ॥ ५९ ॥ कोडा
कोडी सन्नं, तरंतु मन्नंति खित थोवतया ॥ केई अत्ते उस्से, हंयुलमाणेण ता
राणं ॥ ६० ॥ किण्हं राहुविमाणं, निम्बं चंदेण होइ अविरहियं ॥ चजरंगुल
मप्यतं, हिष्ठा चंदस्स तं चरइ ॥ ६१ ॥ तारस्स य तारस्स य, जंबुद्वीविम्मि अं
तरं गुरुयं ॥ बारस जोयण सहसा, इन्धिसया चैव बायाला ॥ ६२ ॥ निस
दो य नीलवंतो, चत्तारिसयउच्च पंचसय कूडा ॥ अंधंउवरीं रिक्का, चरंति उन्नय
ठ बाहाए ॥ ६३ ॥ बावठा इन्धिसया, जहन्नमेयं तु होइ वाघाए ॥ निवाधा

ए गुरु लडु, दोगालय धणुसया पंच ॥६४॥ माणुसनगाल बाहिं, चंदासूरस्स
 सूरचंदस्स ॥ जोयणसहस्स पन्ना,स णूणगा अंतरं दिठं ॥ ६५ ॥ ससिससि
 रविरवि साहिय, जोयण लक्केण अंतरं दोइ ॥ रविअंतरिया ससिणो, ससि
 अंतरिया रवी दिता ॥ ६६ ॥ बहियाल माणुसुत्तर, चंदा सूरा अवठिउज्जोया ॥
 चंदा अनीयजुत्ता, सूरा पुण हुंति पुस्सेहिं ॥ ६७ ॥ उधर सागरङ्गे, सठे
 समएहिं तुल्ल दीबुदही ॥ इगुणा इगुण पविंर, वलयागारा पढमवज्जं ॥
 ॥ ६८ ॥ पढमो जोयण लक्कं, वडो तं वेढिउ विथा सेसा ॥ पढमो जंबुद्वीवो,
 सयंभुरमणोदही चरमो ॥ ६९ ॥ जंबू धायइ पुकर, वारुणिवर खीरघय खो
 य नंदिसरा ॥ अरुण रुणवाय कुंमल, संख रुयग नुयग कुसकुंचा ॥ ७० ॥ प
 ढमे लवणोजलहि, बीए कालो य पुकराईसु ॥ दीविसु हुंति जलही, दीविस
 माणेहिं नामेहिं ॥ ७१ ॥ आचरण वड गंधे, उण्णल तिलएय पजम निहि रय

षे ॥ वासहर दह नईउ, विजया वकार कपिंदा ॥ ७२ ॥ कुरु मंदर आवासा,
 कूडा नरुक्त चंद सूरा य ॥ अग्ने वि एवमाइ, पसब वडूण जे नामा ॥ ७३ ॥
 तं नामा दीबु दही, तिपडोयाथार हुंति अरुणाई ॥ जंबू लवणाईया, पत्तेयं ते
 असंखिजा ॥ ७४ ॥ ताणं तिम सूरवरा, वभास जलही परं तु इक्किक्का ॥ देवे
 नागे जके, भूए य सयंभुरमणे य ॥ ७५ ॥ यारुणिवर खीरवरो, घयवर लवणो
 य हुंति भिन्नरसा ॥ कालो य पुक्करोदहि, सयंभुरमणो य उदगरसा ॥ ७६ ॥
 इकुरस सेसजलही, लवणे कालो य चरिम बहुमभा ॥ पण सग दस जोयण
 सय, तणु कमा धोवसेसेसु ॥ ७७ ॥ दो ससि दो रवि पढमे, डुगुणा लवणम्मि
 धायईसंने ॥ वासससि बारस रवि, तण्णिइ निदिठ ससिरविणो ॥ ७८ ॥
 तिगुणा पु धिन्न जुया, अणंतराणंतरंमि खितंम्मि ॥ कालोए बायाजा, विसत्तरी
 पुक्करंधंमि ॥ ७९ ॥ दो दो ससि रवि पंती, एगंतरिया बसठि संखाया ॥ मेरुं

पयाद्विणंता, माणुसखित्ते परियडंति ॥ ८० ॥ ढप्पसं पंतीड, नरुत्ताणं तु मणु
 यलोगंमि ॥ बावठी बावठी, होई इक्किक्किया पंती ॥ ८२ ॥ एवं गहाइणो विडु,
 नवरं धुव पासवत्तिणो तारा ॥ तंचिय पयाद्विणंता, तबेव सया परिअमंति
 ॥ ८३ ॥ चउयाल सयं पढमि, ह्वयाए पंतीए चंदसूराणं ॥ तेणपरं पंतीड, चउ
 रुत्तरियाइ बुद्धीणं ॥ ८३ ॥ बावत्तरि चंदाणं, बावत्तरि सूरियाण पंतीए ॥ पढमा
 ए अंतरं पुण, चंदाचंदस्स लरुक्क डुगं ॥ ८४ ॥ जो जावइ लरुकाइं, विहरउ सा
 गरो य दीवो वा ॥ तावइअउय तहिं, चंदासूराण पंतीड ॥ ८५ ॥ पनरस चुल
 सीइ सयं, इह ससि रवि मंम्लाइं तस्सिंतं ॥ जोयण पणसय दसहिय, भागा
 अडयाल इगसठा ॥ ८६ ॥ तिसिइगसठा चउरो, इगइगसठस्स सत्तअइय
 स्स ॥ पणतीसं च ड जोयण, ससिरविणो मंमलं तरयं ॥ ८७ ॥ पणसठी नि
 संबंमिय, तत्तिय बाहा ड जोयणं तरिया ॥ एणुणवीसं च सयं, सूरस्स य मंम

ला लवणे ॥ ८८ ॥ मंफुलदसगं लवणे, पणगं निसढम्मि होइ चंदस्स ॥ मंफुल
 अंतरमाणं, जाण पमाणं पुरा कहियं ॥ ८९ ॥ ससिरविणो लवणंमि य, जोयण
 सय तिसि तीस अहियाइं ॥ असिईं तु जोयणसयं, जंबुहीवम्मि पविसंति
 ॥ ९० ॥ गह रिक्क तार संखं, जहेब्बसि नाउ सुदह्दिद्वि वा ॥ तस्ससिहि
 एग ससिणो, गुणसंखं होइ सवग्गं ॥ ९१ ॥ बत्तीसठावीसा, बारस अड चउ
 विमाण लखाइं ॥ पन्नास चत्त ष सहस, कमेण सोहम्म माईसु ॥ ९२ ॥ उ
 सु सयचउ डसु सयतिग, मिगारसहियं सयं तिगेहिठा ॥ मवे सत्तुत्तरसय, सु
 वरि तिगेसयसुवरि पंच ॥ ९३ ॥ चुलसीइ लक्क सत्ता, एवइ सहस्सा विमाण
 तेवीसं ॥ सवग्ग सुम्लोगं, मिइंदया बिसिठि पयरेसु ॥ ९४ ॥ चउदिसि चउपं
 तीउ, बासठि विमाणिया पढमपयरे ॥ उवरि इक्किक्कीणा, अणुत्तरे जाव इक्किक्कं
 ॥ ९५ ॥ इंदयवद्दा पंत्तिसु, तोकमसो तंस चउरसा वद्दा ॥ विविद्दा पुप्फवकि

ष्ठा, तयंतरे सुतुं पुषदिसिं ॥ ९६ ॥ वृहं वेद्वेसुर्वीर, तंसं तंसस्स उवरिसं होइ ॥
 चजरंसे चजरंसं, उद्वंतु विमाण सेठीए ॥ ९७ ॥ सवे वद्वविमाण, एगड्वारा
 हवंति नायवा ॥ तिस्त्रिय तंसविमाणे, चत्तारिय हुंति चजरंसे ॥ ९८ ॥ आवलि
 य विमाणेणं, अंतरं नियमसो असंखिज्जं ॥ संखिज्जमसंखिज्जं, ज्ञणियं पु
 प्फावकिष्माणं ॥ ९९ ॥ एगं देवे देवि, ड्वेय नागोदही सुबोधवे ॥ चत्तारि ज
 र्कदेवि, भूय समुद्वेसु अठेव ॥ १०० ॥ सोलस सयंभुरमणे, देविसु पइठिया
 य सुरभवणा ॥ इगतीसं च विमाण, सयंभुरमणे समुद्वेय ॥ १०१ ॥ अञ्चंत
 सुरहिंघा, फासे नवणीय मज्ज सुह फासा ॥ निच्चुज्जोया रम्मा, सयंपहा ते
 विरायंति ॥ १०२ ॥ जे दक्खिणेण इंदा, दाहिणउ आवली सुणेयवा ॥ जे पुण
 उत्तर इंदा, उत्तरउ आवली सुणे तेसिं ॥ १०३ ॥ पुंवेण पड्ढिमेण थ, जे वद्दा
 तेवि दाहिणिद्वस्स ॥ तंस चजरंसगा पुण, सामणा हुंति ड्वहंपि ॥ १०४ ॥ पुंवे

ए पङ्क्तिमेण य, सामसा आवली मुणेयवा ॥ जेषुए वट्ट विमाणा, मङ्खिद्धा दा
 हिणद्धाणं ॥ २०५ ॥ पागारपरिक्खिता, वट्टविमाणा ह्वंति सवेवि ॥ चउरंस
 विमाणाणं, चउहिसिं वेइया होइ ॥ २०६ ॥ जत्तो वट्टविमाणा, तत्तो तंसस्स
 वेइया होइ ॥ पागारो बोधवो, अवसेसेहिंतु पासेसु ॥ २०७ ॥ पढमं तिम पयरा
 वलि, विमाण सुहञ्जमि तस्स मासंधं ॥ पयरगुण मिठकपे, सव्वगं पुप्फकि
 सयरे ॥ २०८ ॥ इगदिसि पंति विमाणा, तिविचत्ता तंस चउरसा वट्टा ॥ तंसे
 सु सेसमेगं, खिव सेस उगस्स इक्किक्कं ॥ २०९ ॥ तंसेसु चउरंसेसु य, तो रासि
 तिगंपि चउगुणं काउं ॥ वट्टेसु इंदयं खिव, पयरधणं मीलियं कपे ॥ २१० ॥
 कपेसुय मिय महिसो, वराह सीहाय षगल सालुरा ॥ हय गय जुयंग खग्गी,
 वसहा विडिमाइं विंधाइं ॥ २११ ॥ बुलसी अिसिइ बावत्तरि, सत्तरि सठी
 य पन्न चत्ताला ॥ तुल्लसुर तीस वीसा, दस सहस्सा आयरक्क चउगुणिया ॥

॥ ११७ ॥ इत्सु तिसु कप्येसु, घणुदहि घणवाय तडुभयं च कर्मो ॥ सुरज
 वणपइठ्ठाणं, आगास पइठ्ठिया उवारीं ॥ ११३ ॥ सत्तावीस सयाइं, पुठवीपिं
 मो विमाण उच्चत्तं ॥ पंचसया कण्डुगे, पढमे तत्तोय इक्किक्कं ॥ ११४ ॥ हायइ
 पुठवीसु सयं, वरुइ भवणेसु इ इ कप्येसु ॥ चउगे नवगे पणगे, तहेव जाणु
 तरेसु भवे ॥ ११५ ॥ इगवीस सया पुठवी, विमाण मिक्कारसेवय सयाइ ॥ ब
 तीस जोयणसया, मिलिया सब्ब नायघा ॥ ११६ ॥ पण चउ ति इ वसु वि
 मा, ए सधय इत्सु इत्सुय जा सहस्सारो ॥ उवरि सिय, भवण वंतर, जोइसि
 याणं विविहवसा ॥ ११७ ॥ रविणो उदयवंतर, चउणवइसहस पणसय ठ
 वीसा ॥ बायाल सठ्ठिभागा, कक्कड संकंति दियहंमि ॥ ११८ ॥ एयंमि पुणो
 गुणिए, तिपंच सग नवहि होइ कममाणं ॥ तिगुणमि य दोलाका, तेसीइ स
 हस्स पंचसया ॥ ११९ ॥ असिइं ठ सठ्ठिभागा, जोयण चउलक विसतरि

सहस्सा ॥ बद्धसथा तेत्तीसा, तीसकला पंचगुणियस्मि ॥ २५० ॥ सत्तगुणे व
लस्का, इगसठिसहस्स व सयं बासीया ॥ चउपन्नकला तह नव, गुणंमि अ
डलक सट्टाउ ॥ २५१ ॥ सत्तसथा चत्ताला, अठारसकला य इयकमा चउ
रो ॥ चंभा चवला जयणा, वेगाय तहा गइ चउरो ॥ २५२ ॥ इहयगइं चउ
ठिं, जयणयरिं नाम केइ मन्नंति ॥ एहिं कमेहिं मिमाहिं, गर्इहिं चउरो सुरा
कमसो ॥ २५३ ॥ विरुंनं आयामं, परिहिं अप्पितरिं च बाहिरियं ॥ जुगवं मि
एंति बम्मा, स जाव न तहावि ते पारं ॥ २५४ ॥ पावंति विमाणाणं, केसिंपि
हु अहव तिगुणियाईए ॥ कमचउगे पत्तेयं, चंभाईगईउ जोइजा ॥ २५५ ॥ जो
यण लक परमाणं, निमेस मित्तेण जाइ जो देवा ॥ बम्मासे एय गमणं, एणं
रज्जु जिणा विति ॥ २५६ ॥ तिगुणेण कप्पचउगे, पंचगुणेणं तु अठसु सुणिजा ॥
गेविंजे सत्तगुणेणं, नवगुणे पुत्तरचउके ॥ २५७ ॥ पढमपथरस्मि पढमे, कप्पे

उमुनामइंदयत्रिमाणं ॥ पणयाल लखजोयण, लखं सवूधरि सवठं ॥ २५८ ॥
 उमु चंद रयणवग्घू, वीरियं वरुणे तदेव आणदि ॥ बंभे कंचण रुइभे, चंदं अरुणे य
 वरुणे य ॥ २५९ ॥ वेरुलिय रुयग रुइरे, अंके फलिहे तदेव तवणिके ॥ मेहे
 अग्घ हलिहे, नलिणे तहलोहियखेय ॥ २६० ॥ वइरे अंजण वरमा, ल रिठ
 देवेय सोम मंगलए ॥ वलभदे चक्क गया, सोवहिय णंदियावत्ते ॥ २६१ ॥ आ
 नंकरेय गिन्ही, केऊ गरुले य होइ बोधवे ॥ बंभे बंभहिए पुण, बंभुत्तर लंत
 ए चेव ॥ २६२ ॥ महसुक्क सहस्सारे, आणय तह पाणएय बोधवे ॥ पुप्फे लंका
 र आरण, तहा विय अच्चुए चेव ॥ २६३ ॥ सुइंसण सुपडिबधे ॥ मणोरमे चे
 व होइ पढमतिगे ॥ तत्तोय सवभदे, विसालए सोमणे चेव ॥ २६४ ॥ सोमणसे
 पीइकरे, आइच्चे चेव होइ तइय तिगे ॥ सवठ सिधि नामे, इंदया ए व बासठी
 ॥ २६५ ॥ पणयालीसं लखा, सीमंतय माणुसं उमु सिवंच ॥ अपयठाणे

सष,ठ जंबुद्वीवो इमं लस्कं ॥ २३६ ॥ अह भागा सग पुढवी,सु रजु इक्कि
 तह य सोहम्मे ॥ माहिंद वंत सहसा, र अञ्चय गेविक लोगतं ॥ २३७ ॥
 ॥ ४४ ॥ सुरेसु भवण दारं सम्मत्तं ॥ इण्हि उगाहणा दारं भसुइ ॥ ॥ ॥
 भवण वण जोइ सोह, म्मीसाणे सत्तहब तणुमाणं ॥ इ इ चउक्केगे वि, ऊणु
 तरे हाणि इक्किं ॥ २३८ ॥ कपण्डा इ इ चउगे, नवगे पणगे य जिठविइ अ
 यरा ॥ दो सत चउदठारस, बावोसिगतीस तितीसा ॥ २३९ ॥ विवरे ताणि
 कूणे, इक्कारसगाउ पाडिण् सेसा ॥ हन्डिकारसभागा, अयरे अयरे समहियम्म
 ॥ २४० ॥ चयपुवसरराउ, कमेणणुत्तराइ बुनीए ॥ एवंविइविवेसा, सणकुमारा
 इ तणुमाणं ॥ २४१ ॥ भवधारणिक एसा, उत्तरविजवि जोयणालकं ॥ गेविक
 पुत्तरेसु, उत्तरवेजविआ नहि ॥ २४२ ॥ साहाविय वेजविय, तणु जहसा कमेण
 धारंभे ॥ अंगुल असंख भागो, अंगुल संखिक भागो य ॥ २४३ ॥ ४४ ॥ सुरेसु उ

गाहणा दारं सम्मतं; इषिहं विरहकालोववाय उवह्मणां दारं मसुइ ॥ ४९ ॥
 सामन्नेणं चउविह, सुरेसु बारसमुदुत्त उक्कोसा ॥ उववायविरहकालो, अहं भव
 णाईसु पत्तेयं ॥ २४४ ॥ भवण वण जोइ सोह, म्मी साणेसू मुहुत्त चउवीसं ॥ तो
 नवदिण वीसमुहू, बारसदिण दस मुहुत्ता य ॥ २४५ ॥ बावीस सहदीहा, पणया
 ल असीइ दिणसयंततो ॥ संखिजा इसु मासा, इसु वासा तिसु तिणेसु कमा ॥
 ॥ २४६ ॥ वासाणसया सहसा, लखा तह चउसु विजयमाईसु ॥ पळियाअसं
 खनागो, सव्हे संखनागो या ॥ २४७ ॥ सव्हेसिंपि जहन्नो, समउ एमेव चवणविरहो
 वि ॥ इग इ ति संख मसंखा, इग समए हुंति अ चवंति ॥ २४८ ॥ नरपंचिदिय
 तिरिया, गुण्पत्तीसुरभवे पछुत्ताणं ॥ अबवसाय विसेसा, तेसिं गइ तारतम्मंतु
 ॥ ४९ ॥ नर तिरिअसंखजीवी, सव्हे नियमेण जंति देवेसु ॥ निय आजअसम ही
 णा, उएसु ईसाण अंतेसु ॥ २५० ॥ जंति समुब्बिम तिरिया, भवण वणेसु नजो

इमाईसु ॥ जं तेसिं उववाउं, पळिया संखंस आऊसु ॥ १५ ॥ बाळतवे पडिबधा,
उकळ रोसा तवेण गारविया ॥ वेरेणय पडिबधा, मरिउं अमुरेसु जायंति ॥ १५ ॥
रज्जुगाह विस नखण, जळ जळण पवेस तसह बुह इहउ ॥ गिरिसिर पडणा
उ सुया, सुहनावा हुंति वंतरिया ॥ १५ ॥ तावस जा जोइसिया, चरग परिवा
य बंनलोगो जा ॥ जा सहसारो पंचिं, दितिरिअ जा अम्मुठ सहा ॥ १५ ॥
जइ ळिगमिहदिठि, गेविजा जाव जंति उक्कोसं ॥ पयमवि असहहंतो, सुतहं
मिहदिठि ॥ १५ ॥ सुतं गणहरइअं, तेहव पत्तेयबुधरइअं च ॥ सुयकेवलि
णा रइअं, अग्निस् दस पुषिणा रइअं ॥ १५ ॥ बजमह संजयाणं, उववा उक्को
सउ अ सवठे ॥ तेसिं सट्टाणंपिअ, जहसुठ होइ सोहम्मे ॥ १५ ॥ लंतंमि
चउइपुविस, तावसाईण वंतरेसु तहा ॥ एसिं उववाय विही, नियकिरियठिया
ण सवोवि ॥ १५ ॥ वज्जरिसहनारायं, पढमं बीअं च रिसहनारायं ॥ नारायम

धनारा, य कीलिया तद्वय बेवठं ॥ २५ए ॥ एए ठ रसंघयणा, रिसहोपद्वोय की
 लिया वळं ॥ उन्नउमकळबंधो, नाराउ होइ विन्नेउ ॥ २६ण ॥ ठ गप्रतिरीनराणं,
 संसुद्धिम परिंदि विगलबेवठं ॥ सुरनेरइया एगिं, दियाय सवे असंघयणा ॥
 ॥ २६१ ॥ बेवठेण नगम्मइ, चउरो जा कप कीलियाईसु ॥ चउसु उ उ कपवुटी,
 पढमेणं जावसिंधीवि ॥ २६२ ॥ समचउरंसे नगो, ह साइ वामणय खुळ हुंफेया ॥
 जीवाण ठ संताणा, सबळ सुलक्षणं पढमं ॥ २६३ ॥ नाहीए उवरि विअं, तई
 अमहो पिठि नयर उरवळं ॥ सिर गीव पाणी पाए, सुलक्षणं तं चउहं तु ॥
 ॥ २६४ ॥ विवरीयं पंचमगं, सबळ अलक्षणं नवे ठं ॥ गप्रय नर तिरिय बहा,
 सुरा समा हुंफया सेसा ॥ २६५ ॥ इतिदेवानां गतिघारं, अधुना आगतिघार माह
 ॥ ६४ ॥ जंति सुरा संखानय, गप्रय पळत्त मणुयतिरिणसु ॥ पळत्ते सुय बायर, नू
 दण पत्तेयण वणेसु ॥ २६६ ॥ तळवि सणं कुमारं, षन्निई एगिंइएसु नो जंति ॥

दृहत्सं०
॥२३॥

आणय पमुहा चविडं, मणुए सुचेव गढंति ॥२६७॥ दोकप कायसेवी, दो दो
दो फरिस रूवसेहेहिं ॥ चउरो मणेणु वरिमा, अप्पवियारा अणंतमुहा॥२६८॥
जं च कामसुहं लोए, जं च दिवं महासुहं ॥ वीयिराय सुहस्सेय, एंतजागं पि
नघई ॥२६९॥ उववाउ देवीणं, कप्पङ्गं जा परो सहस्सारा ॥ गमणागमणं न
ढी, अञ्जुय परउ सुराणंपि ॥२७०॥ तिपलिय तिसार तेरस, साराकप डुग त
इय लंत अहो ॥ किब्बिसिय नहुंति उवारं, अञ्जुय परउ भिउगाई ॥२७१॥ अ
परिग्गह देवीणं, विमाण लक्का व हुंति सोहम्मै ॥ पलियाई समया हिय, वि
इजासि जाव दसपलिया ॥२७२॥ ताउ सणं कुमारा, ऐवं वद्धंति पलिय दस
गेहिं ॥ जा वंन सुक्क अणय, आरण देवाण पन्नासा ॥२७३॥ ईसाणे चउलक्का,
साहिय पलियाइ समय अहियविई ॥ जा पनर पलिय जासि, ताउ माहिंददे
वाणं ॥२७४॥ एएण कमेण भवे, समयाहिय पलिय दसग बुढीए ॥ लंत सह

सार पाणय, अश्रुय देवाण पणपन्ना ॥२७५॥ किण्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हा
 य सुक्कलेसाउ ॥ भवण वण पढम चउल्ले, सजोइस कप्पड्डुगे तेऊ ॥ २७६॥ क
 ष्णतिय पम्हलेसा, लंताइसु सुक्कलेस डुंति सुरा ॥ कणगाज पउमकेसर, वसा
 डुसु तिसु उवरि धवला ॥ २७७॥ दसवास सहस्साइं, जहन्नमाअं धरंति जे देवा ॥
 तेसिं चउथा हारो, सत्तहि धोवेहि ऊसासो ॥ २७८॥ आहि वाहि विसुक्कस्स,
 नीसासूसास एगगो ॥ पाणू सत्तइमो धोवो, सोवि सत्तगुणो लवो ॥ २७९॥ ल
 वसत्तहत्तरीए, होइ सुहुत्तो इमम्मि ऊसासा ॥ सग तीस सय तिहुत्तर, तीसगुणा
 ते अहोरत्ते ॥ २८०॥ लक्कं तेरस सहसा, नउयसयं अयरसंखयादेवे ॥ पक्के
 हि ऊसासे, वास सहस्सेहिं आहारो ॥ २८१॥ दसवास सहस्सु वरिं, समयो
 ई जाव सागरं ऊणं ॥ दिवसमुहुत्त पहुत्ता, आहारूसास सेसाणं ॥ २८२॥ सरिणो
 उयाहारो, तथाइफासेण लोमआहारो ॥ पक्केवाहारोपुण, कावलित्त होइ ना

यवो ॥२८३॥ उथाहारा सवे, अपजत पजत लोमआहारो ॥ सुरनिरय इगिद्वि
 णा, सेसजवन्ना सपकेवा ॥२८४॥ सच्चित्ता चित्तोन्नय, रूवो आहारसव तिरि
 आणं ॥ सबनराणं च तहा, सुरनेरइयाण अच्चित्तो ॥२८५॥ आन्नोगाणा जो
 गा, सेवेसिं होइ लोम आहारो ॥ निरयाणं अमपुन्नो, परिणमइ सुराण समणु
 षो ॥२८६॥ तह विगल नारयाणं, अंतसुहुत्ता सहोइ उकोसो ॥ पंचिदि तिरि
 नराणं, साहाविउ ठठ अठमउ ॥२८७॥ विग्गहगइ मावन्ना, केवलिणो समु
 ह्या अजोगी य ॥ सिधा य अणाहारा, सेसा आहारगा जीवा ॥२८८॥ केस
 ठि मंस नह रो, म रुहिर वसचम्म सुत पुरिसिंहि ॥ रहिया निम्मल देहा, सुगं
 ध निरसास गय लेवा ॥२८९॥ अंतसुहुत्तेणं चिय, पज्जता तरुण पुरिस संका
 सा ॥ सवंगन्नूषणधरा, अजरानिरुया समा देवा ॥२९०॥ अणि मिस नयणा
 मणक, ऊ साह्वाणा पुप्फदाम अमिलाणा ॥ चउरंगुलेण नूमि, न बिंबंति सुरा

जिणा बिंति ॥२९१॥ पंचसुजिण कद्धाणे, सु चेव महरिसि तवाणु ज्ञावाउ ॥
 जम्मंतरनेहेण य, आगढंति सुरा इहयं ॥२९२॥ संकंति दिवंपेमा, विसय पस
 ता समत्त कत्तवा ॥ अणहीण मणुय कज्जा, नरत्तव मसुहं न इंति सुरा ॥२९३॥
 चत्तारि पंचजोयण, सयाइ गंधोय मणुयलोगस्सा ॥ उहं वच्चइ जेणं, नहु देवा तेण
 आवंति ॥२९४॥ दो कप्प पढम पुढवी, दो दो बीय तइयगं चजधिं ॥ चउ उ
 वरिम उहीए, पासंती पंचमं पुढविं ॥२९५॥ बढी ढग्गेविज्जा, सत्तमीयरे अणु
 त्तर सुराउ ॥ किंचूण लोगनालि, असंखदीबुदहि तिरियं तु ॥२९६॥ बहुअर
 गं उवरिमगा, उहं सविमाण च्चलिय धयाइ ॥ ऊणध सागरे सं, ख जोयणा
 तप्पर मसंखा ॥२९७॥ पण वीस जोयण लहु, नारय भवणवण जोइ कप्पाणं ॥
 जेविज्ज पुत्तराणय, जहसंखं उहियागारा ॥२९८॥ तप्पागारे पद्धग, पडहग ऊ
 द्वारि सुहंग पुप्फजवे ॥ तिरिय मणुएसु उहि, नाणाविह संठिउन्नणिउ ॥२९९॥

बृहत्सं०
॥३५॥

उदं नवण वणाणं, बहुगोवेमाणियाण होठही ॥ नारय जोइस तिरियं, नर ति
रियाणं अणेगविहो ॥३००॥ इयदेवाणं नणियं, विइ पसुहं नारयाण बुढामि ॥
इगतिन्नि सतदससतर, अयर बावीस तित्तीसा ॥३०१॥ सत्तसु पुढवीसु विई, जि
ठोवरिमाइ हिठ पुढवीण ॥ होइ कमेण कणिठा, दसवास सहस्स पढमाए ॥३०२॥
नवइ सम सहस लक्का, पुवाणं कोडि अयरदस भागा ॥ इक्किक्क भाग बुढी,
जा अयरं तेरसे परे ॥३०३॥ इय जिठ जहसा पुण, दसवास सहस्स लक्क प
यर डुगे ॥ सेसेसु उवरि जिठा, अहो कणिठाज पइ पुढवी ॥३०४॥ उवरि सि
इ विइ विसेसो, सगपयर विहतु इहसंयुणिउ ॥ उवरिम खिइ विइ सहिउ, इ
हिय पररम्मि उक्कोसा ॥३०५॥ सत्तसु खित्तज वेयणा, अन्नन्न कयावि पहरणे
हिं विणा ॥ पहरण कया वि पंचसु, तिसु परमाहम्मिय कयावि ॥३०६॥ बंधण
गइ संवाणा, नेया वसा य गंध रस फासा ॥ अगुरु लहु सह दसहा, असुहा

प्रकरण-

॥३५॥

विय पुंगला निरए ॥१७७॥ नरथा दस विह वेयण, सीउ सिण खुह पिवास कं
 म्हिं ॥ परवस्सं जरदाहं, मय सोगं चव वेयंति ॥१७८॥ पण कोडि अठ स
 ठी, लखा नव नवइ सहस पंचसया ॥ खुलसी अहीयरोगा, बठी तह सत्तमी
 नरए ॥१७९॥ रयण षह सक्कर पह, वालुय पह पंक पहय धूमपहा ॥ तमप
 हा तम तमपहा, कमेण पुढवीण गोत्ताइं ॥१८०॥ धम्मा वंसा सेला, अंजण
 रिठा मघाय माघवई ॥ नामेहिं पुढवीउ, हत्ताइं हत्त संठाणा ॥१८१॥ असीय
 बत्तिस अडविस, वीसा अठार सोल अड सहसा ॥ लखुवरि पुढवि पिंनो,
 घणुदहि घणवाय तणुवाया ॥१८२॥ गयणं च पइठाणं, वीस सहस्साइं घणुद
 ही पिंनो ॥ घणतणुवाया गासा, असंख जोयण जुया पिंनो ॥१८३॥ न कुसं
 तिअल्लोगं चउ, दिसंपि पुढवीय वलयसंगहिया ॥ रयणाए वलयाणं, उ
 ध पंचम जोयणं सटं ॥१८४॥ विक्कंनो घणउदही, घणतणु वायाण होइ

जहसंखं ॥ सत्तिभाग गाऊयं, गाऊयं तह गाऊय तिभागो ॥ १२५ ॥ पढम
महीवलएसु, खिविऊ एयं कमेण बीयाए ॥ इ ति चउ पंच ह्णुणं, तइया
इसु तंपि खिव कमसो ॥ १२६ ॥ मञ्जेचिय पुढवि अहे, घणुदहिपमुहाण पिरुप
रिमाणं ॥ ऋणियं तवो कमेणं, हायइ जा वलय परिमाणं ॥ १२७ ॥ तीस
पणवीस पणरस, दसतिस्सि पणूण एगलखाइं ॥ पंचय निरया कमसो,
चुलसीइ लखाइ सत्तसु वि ॥ १२८ ॥ तेरिक्कारस नव सग, पण तिन्निग
पयर सवि गुणवन्ना ॥ सीमंताई अपइ, ठाणंता इंदया मञ्जे ॥ १२९ ॥ सी
मंतउढपढमो, बीउ पुण रोरुय ति नामेण ॥ रंभो य तह तइउ, होइ चउढो
य उअंतो ॥ १३० ॥ संभंतमसंभंतो, विअंतो चैव सत्तमो निरउ ॥ अठमउ नं
तो पुण, नवमो सीउत्ति णायवो ॥ १३१ ॥ चकंतणु बुकंतो, विकलो तह चैव रोरु
उ निरउ ॥ पढमाए पुढवीए, इंदिया एए बोधवा ॥ १३२ ॥ धणिए धणए य तहा,

मणए मणए य होइ नायवे ॥ घडे तह संघडे, जिन्ने अब जिन्नए चेव ॥ ११३ ॥
लोले लोलावत्ते, तहेव घण लोलुए य बोधवे ॥ बीयाए पुढवीए, इकारस इंद्रि
या एए ॥ ११४ ॥ तत्तो तविठ तवणो, तावसो पंचमो य निहमो ॥ बढो पुण पङ्क
लिठ, उण्जलिठ य सत्तमठ ॥ ११५ ॥ संजलिठ अठमठ, संपङ्कलिठ य नवमठ
न्नणिठ ॥ तइयाए पुढवीए, नवइंदिय नारया एए ॥ ११६ ॥ आरे तारे मारे, वच्चे
तमए य होइ नायवे ॥ खाड खडे खंन्खमे, इंदय नरया य चउढीए ॥ ११७ ॥ खा
ए तमए य तहा, ऊसे ऊसंधए तहा तिमिसे ॥ इह पंचम पुढवीए, पंच निरइंद
या हुंति ॥ ११८ ॥ हिमवद्वल लद्धके, तिस्त्रिजनिर इंदयाय बढीए ॥ एगो य स
त्तमाए, अपइठायो उ नामेणं ॥ ११९ ॥ पुषेण होइ काळो, अवरेण पइठिठ म
हाकाळो ॥ रोरो दाहिणपासे, उत्तर पासे महारोरो ॥ १२० ॥ तेहिंतो दिसि विदिसिं,
विणिग्गया अठ निरय आवलिया ॥ पढमे पयरे दिसि गुण, वन्ना विदिसासु

बृहत्सं०
॥१६॥

जहसंखं ॥ सत्तिभाग गाऊयं, गाऊयं तह गाऊय तिभागो ॥ १२५ ॥ पढम
महीवज्जएसू, खिविज्ज एयं कमेण बीयाए ॥ इ ति चउ पंच ह्णुणं, तइया
इसु तंपि खिव कमसो ॥ १२६ ॥ मझेचिय पुढवि अहे, घणुदहिपसुहाण पिरुप
रिमाणं ॥ अणियं तवो कमेणं, हायइ जा वलय परिमाणं ॥ १२७ ॥ तीस
पणवीस पणरस, दसतिसि पणूण एगलक्काइं ॥ पंचय निरया कमसो,
चुलसीइ लक्काइ सत्तसु वि ॥ १२८ ॥ तेरिक्कारस नव सग, पण तिन्निग
पयर सवि गुणवन्ना ॥ सीमंताई अप्पइ, त्राणंता इंदया मझे ॥ १२९ ॥ सी
मंतउहपढमो, बीठ पुण रोरुय ति नामेण ॥ रंओ य तह तइउ, होइ चउढो
य उअंतो ॥ १३० ॥ संअंतमसंअंतो, बिअंतो चव सत्तमो निरउ ॥ अठमउ अं
तो पुण, नवमो सीअत्ति णायवो ॥ १३१ ॥ चकंतणु वुक्कंतो, विकळो तह चव रोरु
उ निरउ ॥ पढमाए पुढवीए, इंदिया एए बोधवा ॥ १३२ ॥ घणिए घणए य तहा,

मए मए य होइ नायवे ॥ घटे तह संघटे, जिन्ने अब जिन्ने ए चैव ॥ ११३ ॥
लोले लोलावत्ते, तहेव घण लोले ए य बोधवे ॥ बीयाए पुढवीए, इक्कारस इदि
या ए ॥ ११४ ॥ तत्तो तविठ तवणो, तावसो पंचमो य निहन्तो ॥ बढो पुण पङ्क
लिठ, उषङ्कलिठ य सत्तमठ ॥ ११५ ॥ संजलिठ अठमठ, संपङ्कलिठ य नवमठ
नणिठ ॥ तइयाए पुढवीए, नवइदिय नारया ए ॥ ११६ ॥ आरे तारे मारे, वच्चे
तमए य होइ नायवे ॥ खाड खडे खंखने, इंदय नरया य चउठीए ॥ ११७ ॥ खा
ए तमए य तहा, ऊसे ऊसंधए तहा तिमिसे ॥ इह पंचम पुढवीए, पंच निरइंद
या हुंति ॥ ११८ ॥ हिमवदल लद्धके, तिस्सिठनिर इंदयाय बढीए ॥ एगो य स
त्तमाए, अपइठाणो उ नामेणं ॥ ११९ ॥ पुषेण होइ काळो, अवरेंण पइठिठ म
हाकाळो ॥ शरो दाहिणपासे, उत्तर पासे महारोरो ॥ १२० ॥ तेहिंते दिसि विदिसि,
विणिग्गया अठ निरय आवलिया ॥ पहमे पयरे दिसि गुण, वन्ना विदिसासु

अडयाला ॥१३२॥ बीयाइसु पयरेसु, इग इग हीणल डुंति पंतीड ॥ जा सत्त
मि महि पयरे, दिसि इक्किओ विदिसि नडि ॥१३३॥ इठप्यरे ग दिसि, संख
अडगुणा चउ विण इग संखा ॥ जह सीमंतय पयरे, एगुणनडया सया तिन्नी
॥१३३॥ अपयछाणे पंचड, पढमो मुहमंतिमो ह्वइ भूमी ॥ मुह भूमि समास
इं, पयरगुणं होइ सबघणं ॥१३४॥ बखवइ सय तिबखा, सत्तसु पुढवीसु आव
ली निरया ॥ सेस तियासी लक्का, तिसय सियाला नवइ सहसा ॥ १३५ ॥
तिसहस्सुच्चा सवे, संखमसंखिज्ज विडडा यामा, पणयाल लक्क सीमं, तउय ल
कं अपइवाणो ॥१३६॥ दिछा घणो सहस्सा, जपिंसे कुठडे सहस्सं तु ॥ मक्षे
सहस्स सुसिरा, तिस्सि सहस्सुस्सिया निरया ॥१३७॥ बसु हिठोवरि जोयण,
सहस्स बावन्न सहचरिमाए ॥ पुढवीए निरय रहिय, निरया सेसम्मि सवासु
॥१३७॥ बिसहस्सूणा पुढवी, तिसहस गुणिएहिं नियय पयरेहिं ॥ ऊणा रुडु

ण निय पयर, चाईयापढंडंतरयं ॥१३९॥ तेसीया पंचसया, इक्कारस चैव जो
 यण सहस्सा ॥ रयणा य पढंडंतर, मेगोचिय जोयण तिजागो ॥१४०॥ सत्ताण
 वइ सयाइं, बीयाए पढंडंतरं होइ ॥ पणहत्तरि तिन्नि सया, बारसहस्सा य तइ
 याए ॥१४१॥ बावठसयं सोलस, सहस्स पंका य दोति जागा या ॥ अट्टाइक्कस
 याइं, पणवीस सहस्स धूमाए ॥ १४२ ॥ बावन्नसहु सहसा, तमप्पजा पढंडंतरं
 होइ ॥ एगोचिअपढंडन, अंतररहिउ तमतमाए ॥ १४३ ॥ पणणठ धणु व अं
 गुल, रयणाए देहमाणमुक्कोसं ॥ सेसासु अणुण अणुणं, पणधणु सय जावचरि
 माए ॥१४४ ॥ रयणाय पढम पयरे, हत्तियं देहमाणपुपयरं ॥ वप्पसंगुल
 सट्टा, बुट्टीजातेरसे पुसं ॥१४५॥ जं देहपमाण उवरि, माए पुढवीइ अंतिमे प
 यरे ॥ तं चिय हिठि म पुढवी, पढमं पयरस्मि बोधवां ॥१४६॥ तं चैगूणग सगपय
 र, मइयं बीयाइ पयर बुट्टिन्नेवे ॥ तिकर ति अंगुल करसत, अंगूला सटि गु

बृहत्सं०
॥१८॥

ए वीसं ॥१४१॥ पणधणु अंगुलवीसं, पणरसधणु दूणिहृत्त सटाय ॥ बासठि
धणुहसट्टा, पण पुढवी पयर बुट्टिइमा ॥१४८॥ इय साहाविय देहो, उत्तर वेत्त
वित्त य तहुयुणो ॥ इविहो वि जहस्स कमा, अंगुल असंख संखंसो ॥१४९॥ स
तसु चत्तवीस सुट्ट, सग पनरदिणैग इ चत्त बम्मासा ॥ जववाय चवणविरहो,
उहे बारस सुट्टत्त युरु ॥१५०॥ लहुत्त उह्वावि समत्त, संखा पुण सुरसमा सुणैय
वा ॥ संखात्त पत्तत्त पणि, दि तिरि नरा जंति निरएसु ॥१५१॥ मिन्नादिठि महा
रं, न परिगहो तिक्कोह निस्सीलो ॥ नरयात्तयं निबंध, पावमई रुहपरिणामो
॥१५२॥ असत्तिसरिसिव पक्की, ससीह उत्तरं हि जंति जा बठि ॥ कमसो उत्त
कोसेणं, सत्तम पुढवी मणुय मत्ता ॥१५३॥ वाला दाढी पक्की, जत्तयर नरया
गया उत्त अइक्करा ॥ जंति पुणो नरएसु, बाहुत्तेणं नत्तण नियमो ॥१५४॥ दो पत्त
म पुढवि गमणं, वेवत्ते कीलियाइ संघयणे ॥ इक्किक्क पुढवि बुट्टी, आइ तिलेसा

प्रकरण-

॥१८॥

उ नरएसु ॥१५५॥ इसु काऊ तइयाए, काऊ नीला य नील पंकाए ॥ धूमा य
 नीलकिसहा, इसु किएह हुंति लेस्साउ ॥१५६॥ सुर नारयाण ताउ, दव्हस्सा
 अवठिया नणिया ॥ भाव परावतीए, पुणएसिं हुंति बद्धेस्सा ॥१५७॥ निर उ
 वद्धा गप्पय, पजत्तसंखाउ लद्धिए एसिं ॥ चक्कि हरिउअल अरिहा, जिण जइ
 दिसिं सम्मपुहविकमा ॥१५८॥ रयाणाएउहि गाउय, चत्तारि द्रुठ गुरु लहु क
 मेण ॥ पइ पुढवि गाउयधं, हायइ जा सत्तमि इगधं ॥१५९॥ (नरय दारं सम्म
 तं, मणुयदारं नसइ) ॥ ६॥ गप्पनर ति पलियाऊ, ति गाउ उक्कोस ते जहसेणं ॥
 सुद्धिम डहावि अंत सु, हु अंगुल असंख भागतणू ॥१६०॥ बारस मुहुत्त गप्पे,
 इयरे चउवीस विरह उक्कोसो ॥ जम्म मरणे सुसमउ, जहससंखा सुरसमाणा
 ॥१६१॥ सत्तमिं महि नेरइए, तेऊ वाऊ असंख नर तिरिए ॥ मुत्तूण सेसजीवा,
 उण्णंति नरन्नवम्मि ॥१६२॥ सुर नेरइ एहिंचिय, हवंति हरि अरिह चक्कि बल

बृहत्सं०
॥१९॥

देवा ॥ चञ्जविह सुर चक्किवला, वेमाणिय हुंति हरि अरिहा ॥ १६३ ॥ हरिणो
मणुस्स रयणा, इ हुंति नाणुत्तरेहि देवेहिं ॥ जह संभव सुववाउ, ह्यगय एगि
दि रयणाणं ॥ १६४ ॥ वामपमाणं चकं, ठत्तं दंनं उह्ठहयं चम्मं ॥ बत्तीसंगुल ख
ग्गो, सुवस्स कागिणि चजरंगुलिया ॥ १६५ ॥ चजरंगुलो उअंगुल, पिहुलोय म
णी पुरोहि गय तुरया ॥ सेणावइ गाहावइ, वट्टइ सी चक्कि रयणाइं ॥ १६६ ॥
चजरो आयुज गेहे, नंमारे तिन्नि उन्नि वेवटे ॥ एगं रायगिहम्मिय, नियनयरे
चेव चत्तारि ॥ १६७ ॥ नो सप्पे पंमूए, पिंगलए सव्वरयण महपज्जे ॥ कालेय म
हाकाले, माणव गया महासंखे ॥ १६८ ॥ जंबुद्वि चजरो, सयाइ वीसुत्तराइ उ
क्कोसं ॥ रयणाइ जहस्सं पुण, हुंति विदेहंमि ढण्णसा ॥ १६९ ॥ चकं धणुहं खग्गो,
मणी गया तह्य होइ वणमाला ॥ संखो सत्तइमाइं, रयणाइं वासुदेवस्स ॥
॥ १७० ॥ संखनरा चजसुगइ, सुजंति पंचसु वि पठम संघयणे ॥ इग छति जा अठ

सयं, इगसमए जंति ते सिद्धिं ॥१७२॥ वीसि ङि दस नपुंसग, पुरिसिठसयं तु
एग समएणं ॥ सिक्षइ गिद्धिअन्न सल्लिं, ग चउदस अछाहिय सयं चा ॥१७३॥
गुरु लहु मक्षिम दोचउ, अठसयं उनुहो तिरिय लोए ॥ चउ बावीसिठसयं,
इसमुहे तिन्नि सेसजले ॥१७३॥ नरय तिरिया गयादस, नरदेवगईउ वीस अ
ठसयं ॥ दूसरयणा सकर वा, लुयाउ चउ पंक नू दगउ ॥१७४॥ अच्च वएरसइ
दस तिरि, तिरि ङि दस मणुय वीस नारीउ ॥ असुराइ वंतरा दस, पण तहेवी
उ पत्तेयं ॥१७५॥ जोइ दस देविवीसं, विमाणियठसय वीसदेवीउ ॥ तह पुवे
एहंतो, पुरिसो होऊण अठसयं ॥१७६॥ सेसठभंगएसु, दसदस सिद्धंति एग
समएणं ॥ विरहो बमास गुरुउ, लहु समउ चवणमिह नहि ॥१७७॥ अड स
ग ढ पंच चउ ति, नि इन्नि इक्कोय सिज्जमाणेसु ॥ बत्तीसाइसुसमया, निरंतरं
अंतरं उवरिं ॥१७८॥ बत्तीसा अडयाला, सठी बावत्तरी य बोधवा ॥ चुजसीई

दृहत्सं०
॥३०॥

बसुवई, डुरहियमतदुरसयं च ॥११७॥ पणयाल लखजोयण, विरुंजा सिद्धि
सिल फलिद विमला ॥ तडवरि गजोयणते, लोगतो तड सिद्धिई ॥११८॥
बहुमऊदेसनाए, अठेवय जोयणाइ बाद्धिं ॥ चरिंमते सुय तणुई, अंगुलसंखि
ऊई नागं ॥११९॥ तिन्निंसया तितीसा, धणुत्ति नागोय कोसबझागो ॥ जं पर
मोगा हणाय, तंते कोसंस बझागो ॥१२०॥ एगा य होइ रयणी, अठेवय अं
गुलोईं साहीया ॥ एसा खलु सिद्धाणं, जहसु उगाहणा नणिया ॥१२१॥ मणु
यदारं समत्तांतिरियदारं नसुइ ॥ धाबावीस सग ति दस वा, स सहस गिणि ति
दिण बैदियाईसु ॥ बारस वासुण पण दिण, बम्मास तिपलिय छिई जिठा ॥१२२॥
सव्हाय सुइ वाळुय, मणोसिला सक्कराय खर पुढवी ॥ इग बार चडदसोलस,
ठारस बावीस समसहसा ॥१२३॥ गप्प नुय जलयरो नय, गप्पोरग पुष को
डि उक्कोसा ॥ गप्पचउण्य पस्किसु, तिपलिय पलियाअसंखंसो ॥१२४॥ पुषस्स

उपरिमाणं, सथ्यरि खलु वास कोडि लखाय ॥ षण्णसं च सहस्सा, बोधवा वा
 सकोडीणं ॥१८१॥ संमुद्धि परिणदि थल खयर उरग नूयगा जिठ विइ कम
 सो ॥ वास सहस्सा चुलसी, विसत्तरि तिपस्स बायाला ॥१८२॥ एसा पुढवाई
 णं, भव ठिईसंपयंतु कायविई ॥ चउ एगिंदि सु णेया, उसप्पिणीउ असंखिजा,
 ॥१८३॥ ताउ वणंमि अणंता, संखिजा वास सहस विगलेसु ॥ पंचिदि तिरि
 नरेसु, सत्तठ भवाउ उक्कोसा ॥१८४॥ सव्वेसिंपि जहसा, अंतमुहुत्तं भवेय का
 ए य ॥ जोयण सहस्स महियं, एगिंदियदेह मुक्कोसं ॥१८५॥ बि ति चउरिंदि
 सरिं, बारस जोयण तिकोस चउकोसा ॥ जोयण सहसपणिंदिय, उहे बुढं विसेसं
 तु ॥१८६॥ अंगुल असंखनागो, सुहुम निगोउ असंख गुणवाजातो अगणितउ
 आऊ, ततो सुहुमा भवे पुढवी ॥१८७॥ तो बायर वाउ गणी, आऊ पुढवी निगोय
 अपुकमसो ॥ पत्तेयवणसरिं, अहियं जोयणसहस्सं तु ॥१८८॥ उस्सेहं गुलजोय

ए, सहस्समाणे जलासए नेयांतं वह्नि पत्रमपसुहं, अत्र परं पुढविरूवंतु ॥१५५॥
 बारस जोयए संखो, तिकोस गुम्मीय जोयणं नमरो ॥ मुब्बिम चउपयन्नुय गुर
 ग, गाऊधणु जोयए पटुत्तं ॥१५६॥ गप्प चउण्णय ळग्गा, उयाइं नुयगाउ गान
 य पटुत्तं ॥ जोयए सहस्स सुरगा, मन्ना उन्नय विय सहस्सं ॥१५७॥ पक्खि उ
 ग धणुपटुत्तं, सवाणंशुल असंखन्नाग लहू ॥ विरहो विगला सन्नी, ए जम्म म
 रणे सुअंत सुहू ॥१५८॥ गप्पे सुहुत्त बारस, गुरुउ लहु समय संखसुर तुह्णा ॥
 अणुसमय मसंखिज्जा, एगिंदिय हुंतिय चवंति ॥१५९॥ वणकाइउ अणंता, इक्कि
 काउ वि जं निगोयाउ ॥ निच्चमसंखो न्नागो, अणंतजीवो चयइ एइ ॥ ३०० ॥
 गोलाय असंखिज्जा, असंख निग्गोय उ हवइ गोलो ॥ इक्किंमि निगोए, अ
 णंत जीवा सुणेयवा ॥३०१॥ अहि अणंता जीवा, जेहिं न पत्तो तसाइ परिणा
 मो ॥ उण्णंति चयंति य, पुणेवि तहेव तहेवा ॥३०२॥ सवोवि किसलउ खलु,

उगाममाणी अणंतत्र न्रणिउ ॥ सोचिव विवहृतो, होइ परित्तो अणंतो वा ॥३०३॥
 जया मोहोदत्र तिधो, अन्नाणं सु महप्रयं ॥ पेमलं वेयणीयं तु, तया एगिंदियत्त
 एं ॥३०४॥ तिरिणसु जंति संखा, उतिरिनराक्काडु कण्पदेवाउ ॥ पक्कत्तसंख गप्प
 य, बायर नूद्दगपरित्तिसु ॥३०५॥ तो सहसारंत सुरा, निरया पक्कत्तसंखगप्पेसु ॥
 संखपणिंदिय तिरिया, मरिउं चउसु वि गइसु जंति ॥३०६॥ थावर विगला निय
 मा, संखाउ य तिरि नरेसु गहंति ॥ विगला लान्निक्कविरइं, सम्मंपि न तेउ वाउ
 चुया ॥३०७॥ पुढवी दग परितवणा, बायर पक्कत्त हुंति चउलोसा ॥ गप्पय तिरि य
 नराणं, बद्धेसा तिस्सि सेसाणे ॥३०८॥ अंतमुहुत्तंमि गए, अंतमुहुत्तंमि सेसए चेवा ॥
 लेसाहिपरिणयाहिं, जीवावच्चंतिपरलोयं ॥३०९॥ तिरिनरआगामि नवे, लेस्साए
 अइ गए सुरा निरया ॥ पुव्वभव लेस्ससेसे, अंतमुहुत्ते मरणमिति ॥३१०॥ अंतमुहु
 त्तच्छिइउ, तिरिय नराणं हवंति लेस्साउ ॥ चरिमा नराण पुण नव, वासूणा पुव्व

कोडीवि ॥३१॥ तिरियाण वि विइपसुहं, ऋणिय मसेसंपि संपई बुढं ॥ अन्नि
हिय दारप्रहियं, चउगइ जीवाण सामसं ॥३१॥ देवा असंख नर तिरि; इढी
पुं वेय गप्प नर तिरिया ॥ संखाजया तिवेया, नपुंसगा नारयाईया ॥ ३१३ ॥
आयंगुलेण वडुं, सरिसुस्सेह अंगुलेण तद्दा ॥ नग पुढवि विमाणाई, मिए
सु पमाणंगुलेण तु ॥३१४॥ सन्हेण सुतिकेण वि, षित्तुं भित्तुं च जं किर न सक्का ॥
तं परमाणुं सिंघा, वयंति आइं पमाणानं ॥३१५॥ परमाणु तसरेणू, रहरेणू वा
लअग्गलिका य ॥ जूय जवो अठगुणो, कमेण उस्सेह अंगुलयं ॥ ३१६॥ अं
गुलबक्कं पाठे, सो इगुण विह्वि सा इगुण ह्वो ॥ चउहहं धणु इ सहस, को
सो ते जोयणं चउरौ ॥३१७॥ चउसयगुणं पमाणं, गुलसुस्सेहंगुलाउ बोधवं ॥
उस्सेहंगुलइगुणं, वीरस्सायंगुलं ऋणियं ॥ ३१८ ॥ पुढवाइसु पत्तेयं, सग व
एपत्तेय एतदस चउद ॥ विगले इ इ सुर नारय, तिरि चउ चउं चउदस नरेसु

॥ ३२९॥ जोणीण हुंति लखा, सधे चुलसी इहेव धिपंति ॥ समवनाई जेया, ए
 गत्तेणव सामना ॥३२९॥ एगिंदिएसु पंचसु, बार सग तिसत्त अठवीसा य ॥
 विगलेसु सत्त अड नव, जल खह चउपय उरग नुयगे ॥ ३२२ ॥ अहत्तेरस
 बारस, दस दस नवगं नरामरे निरए ॥ बारस ठवीस पणविस, हुंति कुले को
 डि लखाई ॥३२९॥ इग कोडि सत्तएवई, लखा सट्टा कुलाण कोडीणं ॥ संबु
 म्जोणि सुरेगि, दि नारया वियड विगल गप्पु जया ॥३२३॥ अचित्त जोणि सु
 रनिरय, मीसगप्पे तिजेय सेसाणं ॥ सी डसिण निरय सुर गन्न, मीसत्ते उ
 सिण सेस तिहा ॥३२४॥ ह्य गप्प संखवत्ता, जोणी कुम्भुभयाई जायंति ॥ अ
 रिह हरि चक्कि रामा, बंसी पत्ताइ सेस नरा ॥३२५॥ आउत्तस्स बंधकालो, अवा
 ह कालो य अंत समउंया ॥ अपवत्तए णपवत्तए, उवक्कम पुवक्कमा जणिया ॥३२६
 बंधंति देव नारय, असंख नर तिरि ठमास सेसाज्ज ॥ परजविया उसेसा, नि

बृहत्सं०
॥३३॥

रुक्कमतिभागसेसाड ॥ ३२७ ॥ सोवक्कमा जया पुण, सेसतिभागे अहव नव
मन्नागे ॥ सत्तावीस इमे वा, अंतमुहुत्तं तिमे वावि ॥३२८॥ जइमे न्नागे बंधो,
आजस्स भवे अबाहकालो सो॥ अंतजुगइ इग सम, य वक्क चउ पंच समयता
॥३२९॥ उज्जु गइ पढम समए, परन्नवियं आजयं तथा हारो ॥ वक्काइ बीय स
मए, परन्नवियाउं उदयमेई ॥३३०॥ इग उ ति चउ वक्कासु, उगाइ समए सु प
रन्नवाहारो ॥ उग व्रक्काइ सु समया, इग दो तिन्नी अणाहारा ॥३३१॥ बहुका
ल वेयणिज्जं, कम्मं अप्पेण जमिह् कालेण ॥ वेइज्जइ जुगवंचिय, उइन्न सवप्पए
सगं ॥३३२॥ अपवत्तणिज्जमेयं, आउं अहवा असेसकम्मंपि ॥ बंध समए
वि बंधं, सिद्धिं चिय तं जहाजोगं ॥ ३३३ ॥ जं पुण गाढ निकायण, बंधेण
पुंभमेव किंल बंधं ॥ तं होइ अणपवत्तण, जुगं कम वेयणिज्ज फलं ॥ ३३४ ॥
उत्तम चरम सरीरा, सुर नेरइया असंख नं तिरिया ॥ दुंति निरुवक्कमाउ, उ

प्रकरण.

॥३३॥

हावि सेसा सुणेयवा ॥ ३३५ ॥ जेणाउ सुवक्कमि जइ, अप्पसमहेण इयर जेणा
 वि ॥ सो अज्जवसाणाई, उवक्कम एुवक्कमो इयरो ॥ ३३६ ॥ अज्जवसाण निमित्ते,
 आहारे वेयणा परगाए ॥ फासेआणापाणू, सत्तविहं जिज्जए आउं ॥ ३३७ ॥
 आहार सरीरिंदिय, पज्जत्ती आणपाण भासमणे ॥ चउ पंच पंच बप्पिय, इग
 विगळा सन्नि सन्नीणं ॥ ३३८ ॥ आहारसरीरिंदिय, ऊसास वऊ मणोच्चिनिव
 ती ॥ होइ जउ दलियाऊ, करणं पइसाउ पज्जत्ती ॥ ३३९ ॥ पण इंदिय तिबलू
 सा, साऊ दस पाण चउ ष सग अठ ॥ इग उ ति चउरिंदीणं, असन्नि सन्नी
 ए नव दस या ॥ ३४० ॥ आहारे भय मेहुण, परिगाहा कोह माण माया य ॥ लो
 जे उहे लोणे, दस सखा हुंति सेवेसिं ॥ ३४१ ॥ सुह उह मोहा सन्ना, वितिगि
 वा चउदमा सुणेयवा ॥ सोए तह धम्म सणा, सोल समा हवइ मणुएसु ॥
 ॥ ३४२ ॥ संखितासंघयणी, गुरुतर संघयणि मवउ एसा ॥ सिरि सिरि चंद सु

लघुके०
॥३४॥

णिदे, ए निम्भिया अण पढणछा॥३४३॥ संखित्तथरी उ इमा, सरीरमोगोहणा
य संघयणा ॥ सन्ना संवाण कसा, य लोसिंदिय छु समुघाया ॥३४४॥ दिठी
दंसण नाणे, जोगु वडंगो ववाय चवण तिई॥पक्कति किमाहारे, सन्निगई रागई
वेण॥३४५॥ तिरिया मणुया काया, तद् गाबीया चडक्कगा चडरो॥देवा नेरइया
वा, अठारस भायरासीउ ॥३४६॥ एगा कोडी सत सवि, लक्का सतहुत्तरी स
हरसाय ॥ दोय सया सोवहिया, आवलियाणं सुहुत्तंमि ॥३४७॥ पणसठि स
हस पणसथ, बत्तीसा इग सुहुत्त खुम्भवा ॥ दोय सया ढणसा, आवलिया
एग खुम्भवे ॥३४८॥ मजहारि हेमसरि, ए सीसलेसेण विरइयं सम्मं ॥ संघ
यणि रथण मेयं, नंदउ जा वीरजिण तिहं ॥३४९॥ इतिश्रित्रीलोक्यदीपिकाना
मसंग्रहणीसंपूर्णा ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६४ ॥
॥ ॐ श्रीजिनायनमः ॥ अथ श्रीरत्नशेखर सूक्तित्त लघुकेत्रसमास प्रकरणे

लिख्यते ॥ वीरं जयसेहरपय, पइठियं पणमिऊण सुयुं च ॥ मंडति ससरण्ठा,
 स्वित्तवियाराणु सुब्बामि ॥ २ ॥ तिरि एगरज्जुखित्ते, असंखदीवो दहीउ ते सबो ॥ उ
 शर पलियपणविस, कोडा कोडी समयतुह्णा ॥ १ ॥ कुरुसग दिणाविअंगुल, रो
 मे सगवार विहिय अडखंके ॥ बावससयं सहसा, सगनवई वीस लकाणु ॥
 ॥ ३ ॥ ते यूजा पद्धेविहु, संखिजा चैव हुंति सबेवि ॥ ते इक्किअसंखे, सुहमे
 खंनेपकपेह ॥ ४ ॥ सुहमाणु निचिय जस्से, हंगुलचउकोस पद्धि घणवेह ॥ पइस
 मय मणुग्गह निठियंमि उशरपद्धिउति ॥ ५ ॥ पढमो जंबू बीउ, धायइसंजो य
 पुसुरो तइउ ॥ वारुणिवरो चउढो, खीरवरो पंचमो दीवो ॥ ६ ॥ घयवर दीवोउ
 ठो ॥ इकुरसो सत्तमो य अठमउ ॥ नंदीसरो य अरुणो, नवमो इच्चाइअसं
 खिजा ॥ ७ ॥ सुपसब्बवहुनामा, तिपडोयारा तहा रुणाईया ॥ इगनामेवि अंसं
 खा, जाव य सुरावजा सुत्ति ॥ ८ ॥ तत्तो देवे नाणे, जस्के भूए सयंभुरमणे य ॥

लघुहे०
॥३५॥

एए पंच वि दीवा, इगेगनामा सुणेग्रवा ॥ए॥ पढमे लवणो बीधि, कालोदहि से
सएसु सवेसु ॥ दीवसम नामया जा, सयंचुरमणो दहीचरमो ॥२०॥ बीउ तइ
उ चरमो, उदगरसा पढमचउथ पंचमगा ॥ बढोवि सनामरसा, इकुरसामेस
जलनिहिणो ॥२१॥ जंबूदीवपमाणं, सुलजोयणलकवह विकंमो ॥ लवणाई
या सेसा, वलयाजा इगुणइगुणा य ॥२२॥ वयरामईहि निय निय, दीवोदहि
मज्जिगणियमूलाहिं, अट्टुच्चाहिं बारस, चउमूले उवरि रुंदाहिं ॥२३॥ विबारइ
ग विसेसो, उस्सेहि विभत्तु खउ चउ होइ ॥ इय चूलागिरि कूडा,इ तुल्ल वि
खंन करणाहिं ॥ २४ ॥ गाउइ गुच्चाइ तय, ठजाग रुंदाइ पउमवेईए ॥ देसूण
इ जोयणवर, वणाहि परिमंनिय सिराहिं ॥२५॥ वेईसमेण महया, घवक क
डएण संपरिताहिं ॥ अठारसूणचउम, त परिहिदारं तराहिं चा॥२६॥ अट्टुच्च
चउसु विबर, इपाससक्कोस कुट्टदाराहिं ॥ पुवाइ महद्धियेदे, व दारविजयाइ ना

माहिं ॥२७॥ नाणामणिमयदेहलि, कवाड परिघाइ दार सोहाहिं ॥ जगईहिं
 ते सवे, दीवोदहिणो परिखिता ॥२८॥ वरतिण तोरण ऊयब, तवाविपासाय
 सेलसिलवडे ॥ वेइवणे वरमंम्व, गिहा सणेसू रंमंति सुरा ॥२९॥ इह अहिगा
 रो जेसिं, सुराण देवीण ताण मुपत्ति ॥ नियदीवोदहिं नामे, अरुसंसवइमे स
 नयरीसु ॥३०॥ जंबुदीवो बहि कुल, गिरीहि सत्ताहिं तहेव वासेहिं ॥ पुषावरदी
 हेहिं, परिबिन्नो ते इमे कमसो ॥३१॥ हिमवं सिहरी महहिम,रुषी निसढो य
 नीलवंतो य ॥ बाहिरउ ड ड गिरिणो,उन्नउ विसवेइया सवे ॥ ३२ ॥ नरहेरव
 यत्ति डुगं, डुगं च हेमवयरसुवयरुवं ॥ हरिवासररुमयडुगं, मज्जि विदेहुत्ति सग
 वासा ॥३३॥ दो दीहा चउ वडा,वेयडा खित्तबकमशंसि ॥ मेरुविदेहमंशे,पमाण
 मित्तोकुलगिरीणं ॥३४॥ इग दो चउ सय उच्चा, कणगमया कणगरायया कम
 सो ॥ तवणिज्ज सुवेरुलिया, बहि मशंसितरा दो दो ॥ ३५ ॥ डुग अड डुतीस

अंका, लक्षगुणा कमिण नउयसयन्नइया ॥ मूलोवरि समरूवं, विभारं बिति
 छयलतिगे ॥२६॥ बावसहिउ सहसो, बारकला बाहिराण विभारो ॥ मस्मिगा
 ण दसुत्तर, बायालसया दस कला य ॥२७॥ अम्रितराण झुकला, सोलसहस्स
 डसया सबायाला ॥ चउचत्त सहस दोसय, दसुत्तरा दसकला सवे ॥ २८ ॥ इ
 ग चउ सोलस अंका, पुव्वत्तविहीइ खित्तजुयलतिगे ॥ विभारं बिति तहा, चउ
 साठिं को विदेहस्सा ॥२९॥ पंचसया बधीसा, बच्च कला पढमखित्तजुयलम्मि, बीए
 इगवीससया, पणुत्तरा पंच य कला य ॥३०॥ बुलसीसय इगवीसा ॥ इक्ककला
 तइयगे विदेहि पुणो ॥ तितीससहस बस्सय, बुलसीया तह कला चउरो ॥
 ॥३१॥ पणपससहससग सय, गुणनउया नव कला सयलवासा ॥ गिरिखित्तं क
 समासे, जोयण लक्कं हवइ पुसं ॥३२॥ पसस सु६ बाहिर, खित्ते दलियम्मि
 इ सय अडतीसा ॥ तिस्सि य कला य एसो, खंनचउक्कस्स विक्कंनो ॥ ३३ ॥

गिरिजवरि सवेइदहा, गिरिजच्चताज दसगुणा दीहा ॥ दीहति अर्धरुंदा, सवे द
 सजोथपुवेहा ॥ ३४ ॥ बहि पजमपुंफरीया, मवे ते चेव हुंति महपुवा ॥ ते गिह्ति
 केसरीया, अर्धितरिया कमेणेषु ॥ ३५ ॥ सिरि लही हिरि बुधी, धी कित्ती नामिया
 उ देवीउ ॥ नवणवईउ पलिउ, वमाउ वरकमलनिजयाउ ॥ ३६ ॥ जलुवरि को
 सञ्जुचं, दहविठरपणसयंसविठारं ॥ बाहिह्तिविठरंधं, कमलं देवीण मूलि
 ह्वं ॥ ३७ ॥ मूले कंदे नाणे, तं वयरारिठवेरुलियरूवं ॥ जंबूणयमवतवणि,
 ज्जबहिदलं रत्तकेसरयं ॥ ३८ ॥ कमलध पायपिहुलु, च कणगमयकसिगोवरि
 नवणं ॥ अर्धेग कोसपिहु दी, ह चउदसय चाल धणुहुचं ॥ ३९ ॥ पडिमदिसि
 विणुधणु पण, सउच्च ढाइज सयप्पिहु पवेसं ॥ दारतिगं इह नवणे, मवे दहदे
 वि सयणिल्लं ॥ ४० ॥ तं मूल कमलमध, प्पमाण कमलाण अडहियसएणं ॥ प
 रिखित्तं तन्नवणे, सुभूसणाईणि देवीणं ॥ ४१ ॥ मूलपजमाउ पुधिं, महयरियाणं च

लक्ष्म चञ्चलमा ॥ अचराइ सत्त पञ्चमा, अणिया हिवईण सत्तख्हं ॥४७॥ वाय
 वाइसु तिसु सिरि, सामन्नसुराण चञ्च सहस पञ्चमा ॥ अठ दस बारसहसा,
 अग्गेयाइसु तिपरिसाणं ॥४३॥ इय बीयपरिक्खेवो, तइए चञ्चसु वि दिसासु दे
 वीणं ॥ चञ्च चञ्च पञ्चमसहस्सा, सोलसहस्साय रक्काणं ॥४४॥ अग्निउगाइ
 तिवजए, इतीस चत्ताडयालजलकाइं ॥ इगकोडि वीस लक्का, पस्साससहस्स
 वीससयं ॥ ४५ ॥ पुष्पावरमेरुमुहं, इसु दार तिगंपि सदिसि दहमाणा ॥
 असीइआगपमाणां, सतोरणं निग्गयनईयं ॥४६॥ जामुत्तरदारुङ्गं, सेसेसु दहे
 सु ताण मेरुमुहा ॥ सदिसि दहसिय आगा, तयइमाणा य बाहिरिया ॥४७ ॥
 गंगा सिंधू रत्ता, रत्तवई बाहिरं नइचउक्कं ॥ बहि दहपुष्पावरदार विठेरं वहुइ नि
 रिसिहरे ॥४८॥ पंचसय गंतु नियगा, वत्तणक्खुडाउ बहिमुहं वजई ॥ पणसय
 तेवीसिंहिं, साहियतिकजाहिं सिहराउ ॥४९॥ निवडइ मगरमुहोवम, वयराम

यजिप्रियाहि वयरतले ॥ नियगे निवायकुंभे, मुत्तावलि समण्यवाहेण ॥ ५० ॥ दह
 दारविन्भराउ, विन्भरपसास भागजहाउ ॥ जटुत्ताउ चउगुण, दीहाउ सबजिप्री
 उ ॥ ५१ ॥ कुंमंतो अडजोयण, पिहुलो जलउवरि कोसङ्गमुच्चो ॥ वेइसुउ नइ
 देवी, दीवो दहदेविसमभवणो ॥ ५२ ॥ जोयणसठिपिहुत्ता, सवायबप्पिहुल
 वेइतिअवारा ॥ एए दसुंरु कुंम, एवं अन्ने वि नवरं ते ॥ ५३ ॥ एसिं विन्भारतिंग,
 पडुच्च सम उगुण चउगुणठगुणा ॥ चउसठि सोल चउ दो, कुंम सवेवि इह
 नवई ॥ ५४ ॥ एयं च नइचउकं, कुंमउ बहिअवार परिवूठं ॥ सगसहस नइसमे
 यं, वेयटुगिरिप्प मिदेई ॥ ५५ ॥ ततो बाहिर खित्त, ४ मचउ वलइ पुवअवरसु
 हं ॥ नइसत्तसहससहियं, जगइतलेणं उदहिमेइ ॥ ५६ ॥ धुरि कुंमअवारसमा,
 पज्जंते दसगुणा य पिहुलत्ते ॥ सबह महनईउ, विन्भरपसासभाउंम ॥ ५७ ॥ प
 ण खित्तमहनईउ, सदारदिसि दहविसुधगिरिअधं ॥ गंतूणसजिप्रीहिं, निय

नियकुंभेसु निवडति ॥५८॥ नियजिप्रियपिहुलत्ता, पणवीसंसेणसुत्तमञ्जगिरिं ॥
जामसुहा पुबुदहिं, इयरा अवरोयद्विसुर्वति ॥ ५९ ॥ हेमवइ रोद्वियंसा,
रोदीयां गंगडुणपरिवारा ॥ एरसुवय सुवसु, रुणकुलाउ ताण समा ॥६० ॥
हरिवांसे हरिकंता, हरिसलिदा गंगचउणनईया ॥ एसि समा रम्मवए, नरकं
ता नारिकंता य ॥६१ ॥ सीउया सीयाउ, महाविदेहम्मि तासु पत्तेयं ॥ निवडइ
पणलक डुतीस सहस अडतीस नइसलिलं ॥ ६२ ॥ कुरुनइ बुलसीसहसा,
बच्चे वंतरनईउ पइविजयं ॥ दो दो महानईउ, चउदस सहसाउ पत्तेयं ॥६३ ॥
अडसयरि महानइउ, बारस अंतरनईउ सेसाउ ॥ परियरनईउ चउदस, ल
खा बणसु सहसा य ॥ ६४ ॥ एगारड नवकूमा, कुलगिरि जुयलत्तिगे वि पत्ते
यं ॥ इय बणसा चउ चउ, वक्करिसुत्ति चउसठी ॥६५ ॥ सोमणसि गंधमायणि,
सग संग विजुपत्तिमालवति पुणो ॥ अछठ सयलतीसं, अडनंदणि अछ करि

कूडा ॥६६॥ इय पणसजच्च बास, ठि सज कूडा तेसु दीहर [गरीणं] ॥ पुव्वनइमेरु
 द्विसिअं, त सि-धक्केसु जिणअवणा ॥६७॥ ते सिरिगिहाज दो सय, गुणप्यमा
 णा तहेव तिडधारा ॥ नवरं अडवीसाहिय, सथगुण दारप्यमाणमिह ॥६८॥ प
 णवीसं कोससयं, समचउरसविबडा डुणसुच्चा ॥ पासाया कूडेसु, पणसयउ
 च्चेसु सेसेसु ॥६९॥ बल हरिसह हरिकूडा, नंदनवणि मालवंति विज्जुपन्ने ॥ इ
 साणुत्तरदाहिण, दिसासु सहसुच्चकणगमया ॥७०॥ वेयहेसु वि नव नव, कूडा
 पणवीसकोसजच्चा ते ॥ सबे तिसय बहुत्तर, एसु वि पुव्वंति जिणकूडा ॥ ७१ ॥
 ताणूवरि चेइहरा, दहदेवी भवणतुह्वपरिमाणा ॥ सेसेसु य पासाया, अर्धेग
 कोसं पिहुच्चते ॥७२॥ गिरिकरिक्कडा उच्च, तणाउ सम अ-धमूजुवरि रुंदा ॥७३॥ रयण
 मया नवरिविय, ह मक्षिमा ति ति कणगरुवा ॥७४॥ जंबूणयरयमया, जगइसमा
 जंबुसामलीकूडा ॥ अठठ तेसुदहदे, वि गिहसमा चारुचेइहरा ॥७५॥ तेसि स

अष्टुद्वे ०
॥३९॥

मोसहकूडा, चउतीसं चुम्नकुंमशुयलंतो ॥ जंबूण एसु तेसु य, वेयहेसुव पासा
या ॥७५॥ पंचसर पणवीसे, कूडा सवे वि जंबुदीबमि ॥ ते पत्तयं वरवण, सुया
हि वेईहि परिक्किता ॥७६॥ व सयरि कुंजसु तहा, चूलाचउवणतरूसु जिणअ
वणा ॥ अणिया जंबूदीवे, सदेवया सेस वाणेषु ॥७७॥ करिक्कड कुंम नइ दह, कु
रुकचण जमलसमवियहेसु ॥ जिणअवणविसंवाड, जो तं जाणंति गीयत्ता
॥७८॥ पुषावरजलाहिता, दसुच्च दसपिडुल मेहलचउक्का ॥ पणवीसुच्चा पसा,
स तीस दसजोयणपिडुत्ता ॥७९॥ वेईहि परिक्किता, सखयरपुर पससठिसेणि
उगा ॥ सदिसिंदलोगपालो, वमोगउवरिक्कमेहलया ॥८०॥ उ उ खंमविद्विय
भरहे, खया उ उ गुरु सुहा य रुपमया ॥ दो दीहा वेयहा, तहा इतीसंच वि
जयेसु ॥८१॥ नवरं ते विजयंता, सखयरपणपसपुरइसेणीया ॥ एवं खयरपुरा
इं, सगतीस सयाइ चालाई ॥८२॥ गिरि विवर दीहाउ, अडुच्च चउ पिडुपवे

प्रकरण.

॥३९॥

सदाराउ ॥ बारस पिहुलाउ अहु, च याउ वेयहइउपुहाउ ॥५३॥ तंमधि उ जो
यणअं, तराउ ति, ति विबराउ हुनईउ ॥ उम्मगनिमगाउ, कडगाउ महानइ
गयाउ ॥ ५४ ॥ इह पइन्ति गुणव, सु मंन्ले लिहइ चक्किइउसमुहे ॥ पणसय
धपुहपमाणे, बारेगडजोयपुजोए ॥५५॥ सा तिमिस गुहा जीए, चक्की पविसेइ
मबखंन्तो ॥ उसहं अंकिय सो जी, इ वलइ सा खंन्गपवाया ॥५६॥ कयमाल
नइमालय, सुराउ वहइ निबन्धसलियाउ ॥ जा चक्की ता चिठइ, ताउ उगघडि
य दाराउ ॥५७॥ बह्खंन्तो बारस, दीहा नव विबडा अउबपुरी ॥ सा लव
णवेयहा, चउदहियसयं चिगारकला ॥५८॥ चक्किवसनइपवेसे, तिबडुगं माग
हो पनासो य ॥ ताणंतो वरदामो, इह सवे बिहुत्तरसयंति ॥५९॥ नरेहेरवए ठ
ठ अर, मयवसपिणीउसपिणीरुवं ॥ परिन्मइ कालचकं, इवालसारं सया वि
कमा ॥६०॥ सुसमसुसमा य सुसमा, सुसमइसमाय इसमसुसमाय ॥इसमा य

लघुदे०
॥४०॥

इसमइसमा, कसुकमा इसु वि अरबकं ॥१२॥ पुवुत्तपद्विसमसय, अपुगहणा
निष्ठिए हवइ पलिग ॥ दस कोडिकोडिपलिए, हिं सागरो होइ कालस्स ॥१३॥
सागरचजतिइ कोडा, कोडिमिए अरतिगे नराण कमा ॥ आऊ तिइइगपलि
या, तिइइगकोसा तपुच्चत्तं ॥१३॥ तिइइगदिणेहि तूअरि, वयरामलमित्तभेसि
माहारी ॥ पिठकरंजा दोसय, बपन्ना तदलं च दलं ॥१४॥ गुणवणदिणे तह प
नर, पन्नरअहिया अवच्चपालणया ॥ अवि सयलजिया छुयला, सुमणसरूवा
सुरगईया ॥ १५ ॥ तेसि मतंग भिंगा, तुडियंगा जोइ दीवचितंगा ॥ चित्तसा
मणियंगा, गेहागारा अणिययक्का ॥१६॥ पाणं नायण पिठण, रविपह दीव
पह कुसुममाहारी ॥ भूसण गिह वत्तासण, कपडमा दसविहा दिति ॥१७॥
मणुआजसमगयाई, चयाइ चजरंस जाइ अठंसा ॥ गोमहिसुइखराई, पणंस
साणाइ दसमंसा ॥१८॥ इच्चाइ तिरवाण वि, पायं संवारएसु सारिहं ॥ तइया

रसेस कुलगर, नयजिणधम्माइजपत्ती ॥एण॥ कालङ्गे तिचज्जा, रगेसु एगुण
 नवइपकेसु ॥ सेसगएसु य सिधं, ति हुंति पढमंतिमजिणिंदा ॥२००॥ बायाल
 सहस वरसू, णिगकोडाकोडिअयरमाणए ॥ तुरिए नराजपुवा, ए कोडितणु
 कोसचउरंसं ॥२०१॥ वरिसेगवीससहस, पमाण पंचमए सगकरुच्चा ॥ तीस
 हियसयाज नरा, तयंतधम्माइयाणंतो ॥२०२॥ सुयसूरिसंघधम्मो, पुव्वसहे विज्ज
 ही अगणि सायं ॥ निव विमलवाहणो सुह, ममंति तद्धम्म मवसहे ॥२०३॥ खा
 रग्गिविसार्हीह, हाहानूया कयाइ पुहवीए ॥ खगवीय वियाहइ सु, नराइवीयं
 बिलाईसु ॥२०४॥ बहुमत्तचक्कवहनइ, चउक्कपासेसु नव नव बिलाई ॥ वेयद्धो
 न्नयपासे, चजयालसयं बिलाणेंवं ॥२०५॥ पंचमसमवठारे, उकरुच्चा वीसव
 रिसअज नरा ॥ मब्बासिणो कुरूवा, कूरा बिलवासि कुगइगमा ॥२०६॥ निद्ध
 ज्जा निवसणा, खरवयणा पियसुयाइठिरहिया ॥ धीउं ल्वरिसगप्पा, अहिड

लघुहे०
॥४१॥

हृपसवा बहुसुया य ॥२०७॥ इय अरठक्केण वस, प्पिणित्ति जस्सप्पिणी वि विव
रीया ॥ वीसें सागरकोडा, कोडीउ कालचक्कंमि ॥२०८॥ कुरुड्दिगि हरिरम्मयड
गि, हेमवएरसुवयड्दिगि विदेहे ॥ कमसो सया वसप्पिणि, अरयचउक्काइसम
कालो ॥२०९॥ हेमवएरसुवए, हरिवासे रम्मए य रयणमया ॥ सद्दावइ विह
डावइ, गंधावइ मालवंतक्का ॥२१०॥ चउ वट्टवियट्टा सा, इ अरुण पउम पन्ना
स सुरवासा ॥ मूलुवरि पिडुत्ते तह, उच्चते जोयणं सहसं ॥२११॥ मेरू वट्टो स
हस्स, कंदो लक्खुसिउ सहस उवरिं ॥ दसगुण भुवि तं सत्तवइ, दसिगारंसं
पिडुलमूले ॥२१२॥ पुडुवुवज वयर सक्कर, मयकंदो उवरि जाव सोमणसं ॥
फ़लिहंक्क रयय कंचण, मउ य जंनूणउ सेसो ॥२१३॥ तडुवरि चालीसुच्चा, व
ट्टा मूलुवरि बार चउ पिडुला ॥ वेजुुरिया वरच्चला, सिरिज्जवणपमाण चेइहरा
॥२१४॥ चूलातलाउ चउसय, चउणउए वजयरूवविकंमं ॥ बहुजलकुंमं पं

प्रकरण.

॥४१॥

न्गा, वणं च सिहरे संयेईयं ॥२२५॥ पश्चासजोयणेहिं, चूलान् चजदिसासु जि
 णन्नवणा ॥ सविदिसि सक्कीसाणं, चजवाविजुया य पासाया ॥२२६॥ कुलगिरि
 चेइहराणं, पासायाणं चिमे समठगुणा ॥ पणवीस रुंद ड्युणा, यामान् इमान्
 वावीन् ॥२२७॥ जिणहर बहिदिसि जोयण, पणसय दीह-धपिहुल चजजत्रा ॥
 अ-धससिसमा चजरो, सियकणसिला संवेईया ॥२२८॥ सिलमाण्ठ सहस्सं,
 समाणसीहासणेहिं दोहिं जुया ॥ सिलयंद्दु कंबलार, तकंबलापुवपच्चिमन् ॥
 ॥२२९॥ जासुत्तरान् ताज्ज, इगेगसीहासणान् अइपुवं ॥ चजसु वि तासु निया
 सण, दिसिन्नवजिणमज्जणं होई ॥२३०॥ सिहरा बत्तीसेहिं, सहसेहिं मेहलाइ
 पंचसए ॥ पिहुलं सोमण सवणं, सिलविणु पंनगवणसरिहं ॥२३१॥ तब्बाहि
 रि विकंभो, बायालसयाहिं डसय रिजुयाइं ॥ अठेगारसन्नागा, मबे तं चैव
 सहसूणं ॥२३२॥ ततो सहडसठी, सहसेहिं नंदणपि तह चैव ॥ नवरि न्नव

एपासायं, तरछदिसि कुमरि कूडा वि ॥२५३॥ नवसहस नवसयाइं, चउपशा
 बच्चिगारभागा य ॥ नंदणबहिविकंभो, सहसूणो होइ मजंमि ॥२५४॥ तदहो
 पंच सएहिं, महियलि तह चैव नहसावणं ॥ नवरंमिह दिग्गयच्चिय, कूडा
 वणविठरं तु इमं ॥२५५॥ बावीससहस्साइं, मेरूज पुषुव य पडिमज ॥ तं चाड
 सीविहत्तं, वणमाणं दाहिणुत्तरज ॥२५६॥ बवीस सहस चउसय, पणहत्तरिगं
 तु कुरुनइपवाया ॥ उअज विनिगया गय, दंता मेरुमुहा चउरो ॥२५७॥ अ
 गैयाइसु पयाहि, णेण दिसासु सियरत्त पियनीला ॥ नासोमणस विज्जुपह,
 गंधमायण माववंतस्का ॥२५८॥ अहलोगवासिणीज, दिसाकुमारीज अछ एए
 सि ॥ गयदंतगिरिवराणं, दिठा चिठंति अवाणेषु ॥२५९॥ धुरि अंते चउ पण
 सय, उअ त्ति पिडुत्ति पणसया सिसमा ॥ दीहत्ति इमे बकला, इसयनवुत्तरस
 हसतीसं ॥२६०॥ ताणं तो देवुत्तर, कुराज चंद-धसंठियाज छवे ॥ दससहस वि

सुधमहा, विदेहदलमाणपिडुलाड ॥ २३ ॥ नइपुषावरकूले, कणगमया बल स
 मा गिरी दो दो ॥ उत्तरकुराड जमगा, विचित्चिता य इयरीए ॥ २३५ ॥ नइव
 ह दीहा पण पण, हरया छडदारया इमे कमसो ॥ निसहो तह देवकुरु, सूरु
 सुलसो य विजुपहो ॥ २३६ ॥ तह नीलवंत उत्तर, कुरु चंदे रवय मालवंतो ति ॥
 पजमदहसमा नवरं, एएसु सुरा दहसमाना ॥ २३७ ॥ अडसय चजतीस जोय,
 णाई तह सेगसत्तजागाड ॥ इक्कारसय कलाड, गिरिमलदहाणमंतरयो ॥ २३८ ॥
 दहपुषावर दसजो, यणेहि दस दस वियहकडाणं ॥ सोलसगुणप्पमाणा, कंच
 णगिरिणो छसय सवे ॥ २३९ ॥ उत्तरकुरुपुषुधे, जंबूणयजंबुपीढमंतसु ॥ कोस
 छगुच्चं कमि व, ह्दमाण चजवीसगुण मधे ॥ २४० ॥ पणसयवहपिडुत्तं, तं परिखि
 तं च पजमवेईए ॥ गाड छगेयुच्चपिडु, त चारुचजदारकलियाए ॥ २४१ ॥ तं मधे
 अडविठर, चजच्च मणिपीडियाइ जंबुतरु ॥ मूले कंदे स्वंधे, वरवयरारिठवेरु

लघुहेण
॥४३॥

खिन्ने ॥२३॥ तस्स य साह पसाहा, दला य विंटा य पल्लवा कमसो ॥ सोव
सुजायरूवा, वेरुलितवणिक्कजंबुणया ॥२४॥ सो रययमयपवालो, राययवि
डिमो य रयणपुप्फफलो ॥ कोसङ्गं ज्वेहो, युडसाहा विडिमविक्कंजो ॥२४॥
युडसाहवडिमदीह, ति गाजए अठ पनर चजवीसं ॥ साहा सिरिसमजवणा,
तम्माणस चेइयं वडिमं ॥२४॥ पुव्हिच्चि सिक्क तिसुआ, सणाणि जवणेसु णा
डियसुरस्स ॥ सा जंबू बारसवे, इयाहि कमसो परिक्किता ॥२४३॥ दहपडमाणं
जं वि, ङरं तुतमिहावि जंबुरुक्काणं ॥ नवरं महयरियाणं, ठाणे इह अग्गमहि
सीडे ॥२४४॥ कोस छसएहि जंबू, चजदिसिं पुव्वसालसमजवणा ॥ विदिसासु
सेस तिसमा, चजवाविजुया य पासाया ॥२४५॥ ताणंतरेसु अड जिण, कूना
तह सुरकुआइ अवरं दे॥ राययपीढे सामलि, रुक्को एमेव गरुलस्स ॥२४६॥ ब
तीस सोल बारस, विजया वक्कार अंतर नईउ ॥ मेरुवणाउ पुवा, वरासुकुल

प्रकरण-

॥४३॥

गिरिमह नयंता ॥२४७॥ विजयाण पिहुत्ति सग, ठ भाग बारुत्तरा ड्वीस सया
 ॥ सोलाणं पंचसए, संवेइ नइ पखवीससयं ॥ २४८ ॥ सोलससहस्स पणसय,
 वाणजया तह य दो कलाउ या ॥ एएसिं सवेसिं, आयामो वणमुहाणं चा ॥ २४९ ॥
 गयदंतगिरिबुद्धा, वक्कारा ताणमंतरनईणं ॥ विजयाणं च जिहाणा, इ मालवं
 ता पयाहिणउ ॥ २५० ॥ चित्ते य बंभकूडे, नलिणीकूडे य एगसेले य ॥ तिउडे
 वेसमणे वि य, अंजण मायंजणे चेव ॥ २५१ ॥ अंकावइ पम्हावइ, आसीविस
 तह सुहावहे चंदे ॥ सुरे नागे देवे, सोलस वक्कारगिरिनामा ॥ २५२ ॥ गाहाव
 इ दाहावइ, वेगवई तत्त मत्त उम्मता ॥ खीशिय सीयसोया, तह अंतोवाहि
 णी चेव ॥ २५३ ॥ उम्मीमालिणि गंभी, रमालिणी फेणमालिणी चेव ॥ सव्ववि
 इसजोयण, उंफाकुंफुस्रवा एया ॥ २५४ ॥ कब्भो सुकब्भो य महा, कब्भो कब्भावई त
 हा ॥ आवत्तो मंगलावत्तो, पुक्कळो पुक्कळावई ॥ २५५ ॥ वब्भो सुवब्भो य महा,

वहो वन्नावई विया ॥ रम्मो य रम्मउ चव, रमणी मंगलावई ॥ २५६ ॥ पम्हो सुप
म्हो य महा, पम्हो पम्हावई तहा ॥ संखो नलिणनामा य, कुमुदो नलिणाव
ई ॥ २५७ ॥ वणो सुवणो य महा, वणो वणावई विय ॥ वगू तहा सुवगू य, गं
धिलो गंधिलावई ॥ २५८ ॥ एए पुषावरगय, वियमूदलियत्तिनई द्विसिदलेसु ॥
अरुधपुरीसमाउ, इमेहिं नामेहिं नयरीन ॥ २५९ ॥ खेसा खेमपुरा विय, रिठा
रिठावई य नायवा ॥ खग्गी मंजूसा विय, उसहपुरी पुंनरिगिणी य ॥ २६० ॥
सुसीसा कुंफला चव, वराइ य पढंकरा ॥ अंकावइ पम्हावइ, सुजा रयणसं
चया ॥ २६१ ॥ आसपुरा सींहपुरा, महापुरा तह य चव विजयपुरा ॥ अवरा
इया य अवरा, असोंग तह य वीयसोगा य ॥ २६२ ॥ विजया य वेजयंती, ज
यंति अपराजिया य बोधवा ॥ चक्कपुरा खग्गपुरा, होइ अवक्षा अउक्षा य ॥
॥ २६३ ॥ कुंमुज्जवा उ गंगा, सिंधू उ कढपम्हपमुहेसु ॥ अठठएसु विजये, सु सेसे

सु रत्त रत्तवई ॥२६४॥ अविक्खिक्खण जगई, सवेइवणमुहचउक्कपिडुलत्तं ॥ ए
 एतीससय डुवीसा, न इति गिरिअंति एगकला ॥२६५॥ पएतीससहस चउस
 य, बहुतरा सयलविजयविकंभो ॥ वणमुह डग विकंभो, अडवणसया य च
 उआला ॥२६६॥ सगसय पन्नासा नइ, पिडुत्ति चउवणस सहस मेरुवणे ॥ गिरि
 विन्तर चउसहसा, सधसमासो हवइ लखं ॥२६७॥ जोयण सयदसगंते, सम
 धरणीउ अहो गामा ॥ बायालीससहसेहिं, गंतुं मेरुस्स पड्ढिमवा ॥२६८॥
 चउ चउतीसं च जिणा, जहणसुक्कोसउ य डुंति कमा ॥ हरिचक्खिबला चउरो,
 तीसं पत्तेयमिह देवि ॥२६९॥ ससिडुग रविडुग चारो, इह देवि तेसिं चारखि
 तं तु ॥ पणसय दसुत्तरांइ, इगसविजागा य अडयाला ॥२७०॥ पनरस डुल
 सीइसयं, षण्ण डयालजागमाणांइ ॥ ससिसूरमंफलांइ, तयंतराणि गिगहीणा
 इं ॥२७१॥ पएतीस जोयणे ना, ग तीस चउरो य भाग सगजाया ॥ अंतरमा

णं ससिणो, रविणो पुण जोयणे छन्नि ॥२७५॥ दीवंतो असियसए, पण पणस
 ठी य मंफला तेसिं ॥ तीसहियं तिसय जवणे, दस गुणवीसं सयं कमसो ॥
 ॥२७३॥ ससिं ससि रवि अंतरि, मक्षे इगलकु तिसयसावूणो ॥ साहिय
 इसयरि पणचय, बहिलको बसय सावहिउ ॥२७४॥ साहियपणसहस तिहु,
 र राइ ससिणो सुहुत्तगइ मक्षे ॥ वावसुहिया सा बहि, पइमंफल यउणचउबुद्धी
 ॥२७५॥ जा ससिणो सारविणो, अडसयरिसएण सीसएण हिया ॥ किंचणा
 णं अठा, रसठिभागणमिह बुद्धी ॥२७६॥ मक्षे उदयहंतरि, चउणवइसहस्स
 पणसय बवीसा ॥ बायाजसठिभागा, दिणं च अठारससुहुत्तं ॥२७७॥ पइमं
 फल दिणहाणी, उणहसुहुत्तेगसठिभागाणं ॥ अंते बारसुहुत्तं, दिणं निसा तरस्स
 विवरीया ॥२७८॥ उदयहंतरि बाहिं, सहसा तेसठि ब सय तेसठि ॥ तह इग
 ससिपरिवारो, रिक्कड वीसाडसीइ गहा ॥२७९॥ बासठिसहस नवसय, पण

हृत्तरी तारकोडिकोडीणं ॥ ससुंतरेणमुस्से, हंयुजमाणेण वा हुंति ॥२८०॥ गह
 रिख तारगाणं, संखं ससिसंखसंगुणं काजं ॥ इच्छियदीबुदाहिंमिय, गहाइमाणं
 वियाणिजा ॥२८२॥ चउ चउ बारस बारस, लवणे तह धाइयंमि ससिसूरा ॥
 परउदहिद्विसु य, तिगुणा पुविद्धसंजुता ॥२८३॥ नरखित्तं जा समसे, णिचा
 रिणो सिग्घसिग्घतरगइणो ॥ दिठ्ठिपहमिति खित्ता, पुमाणउ ते नराण जहा ॥
 ॥२८३॥ पणसय सत्तत्तीसा, चउतीससहस्स लक्क इगवीसा ॥ पुक्करदीविध्न
 रा, पुव्वेण वरेण पिठ्ठंति ॥२८४॥ नरखित्तवहिं ससिरवि, संखाकरणंतरेहि वा
 होई ॥ तह तव य जोइसिया, अचलधपमाणसु विमाणा ॥२८५॥ जंबूपरिहि
 तिजक्का, सोलसहस इसय पउणअडवीसा ॥ धणुअडवीस सयंगुल, तेरसस
 द्वासमहिया य ॥२८६॥ सगसय नउया कोडी, लक्का षणसु चउणवइ सहसा
 ॥ सहसयं पउणउको, स सदबासठि करगणियं ॥२८७॥ पट्टपरिहिं च गणियं,

अंतिमखंभाइ उसुजियं च धणुं ॥ बाहं पयरं च घणं, गणियवमभेहि करणोहि
॥२८७॥ विखंभवगगदहगुण, मूलं वटस्स परिरत्त होई ॥ विखंभपाय गुणित,
परिरत्त तस्स गणीयपयं ॥२८८॥ उगाहु उसूसु च्चिय, उगणीसगुणो उसूक
खा होई ॥ विजसुपिट्ठे चउगुण, इसुगुणिए मूलमिद् जीवा ॥ २८९ ॥ उसुव
ग्गि उगुणजीवा, वगगज्जुए मूल होइ धणुपिठं ॥ धणुज्जगविसेससेसं, दलियं
बाहाज्जुगं होई ॥२९०॥ अंतिमखंभस्सुसुणा, जीवं संगुणि य चउहि नइऊणं ॥
खधंमि वग्गिए दस, गुणंमि मूलं हवइ पयरो ॥२९१॥ जीवा वग्गेण ज्जगे, मि
ल्लिए दल्लिए य होइ जं मूलं ॥ वेयह्वाइए तयं, सपिट्ठुत्तगुणं हवइ पयरो ॥
॥२९२॥ एयं च पयरगुणियं, संववहारोण देसियं तेण ॥ किंचूणं होइ फलं, अ
इहंपि हवइ सुहुमगणणा ॥ २९३ ॥ पयरो सोस्सेहगुणो, होइ घणोपरिरयाइ
सवं वा ॥ करणगणणालसेहिं, जंतगल्लदियाउ दउव्वं ॥ २९४ ॥ इति श्री लघु

क्वत्रसमास प्रथम जबूधापाधकारः समासः॥ दावालवणसमुद्वाहगारा नसुइ
 ॥ गोतिचं लवणोभय, जोयण पणनवइ सहस जा तब्ब ॥ समभूतलाउ सग
 सय, जलबुंडी सहसमो गाढो ॥ २ए६ ॥ तेरासिएण मक्षि, ह्व रासिणा संगुणि
 ऊ अंतिमंगं ॥ तं पढमरासिभइयं, उवेहं सुणसु लवणजले ॥ २ए७ ॥ हिहुवरि
 सहसदसगं, पिहुलामूलाउ सतरसहसुच्चा ॥ लवणसिहा सा तड्वरि, गाडड
 गं वहइ ड्वेलं ॥ २ए८ ॥ बहुमक्षे चउदिसि चउ, पायाला वयरकलससंवाणा ॥
 जोयणसहस्स जम्हा, तद्वसगुण हिहुवरि रुंदा ॥ २ए९ ॥ लखं च मक्षि पिहुला,
 जोयणलखं च नूमिमो गाढा ॥ पुवाइसु वडवासुह, केच्चुव जूवे सर जिहाणा
 ॥ २७० ॥ अस्से लडुपायाला, सगसहसा अडसया सच्चुलसीया ॥ पुवुत्त संयंस
 पमा, णा तव तव णएसेसु ॥ २७१ ॥ कालो य महाकालो, वेखंब पभंजणोय च
 उसु सुरा ॥ पलिउवमाउणो तह, सेसेसु सुरा तयशऊ ॥ २७२ ॥ सवे सिमहो

नागे, वाऊ मधिद्धंयमि जलवाऊ ॥ केवलजलमुवरिक्षे, भाग डगे तत्र सासु
 वे ॥१७३॥ बह्वे जयारवाया, मुवंति खुवंति इषि वाराड ॥ एगअहोरत्तं तो, त
 या तथा वेजपरिखुडी ॥१७४॥ वायालसठि इसयरि, सहसा नागाण भववरि
 बाहिं ॥ वेलं धरंति कमसो, चउहृतरुलक ते सवे ॥१७५॥ बायालसहस्सेहिं,
 पुवेसाणाइदिसि विदिसि जवणे ॥ वेळंधराणेवलं, धरराइणं गिरिसु वासा ॥
 ॥१७६॥ गोथून्ने दगजासे, संखे दगसीमनामि दिसि सेले ॥ गोथून्ने सिवदे
 वो, संखो य मणोसिलो राया ॥१७७॥ कक्कोडे विक्कुपहे, केलास रुणपहे वि
 दिसि सेले ॥ कक्कोडग कदमउ, केलास रुणपहो सामी ॥१७८॥ एए गिरिणो
 सवे, बावीसहिया य दससया मूले ॥ चउसय चउवीसहिया, विविषा डुंति
 सिहरतले ॥१७९॥ सतरससय इगवीसे, उच्चते ते सवेइया सवे ॥ कणगंकरय
 यफालिह, दिसासु विदिसासु रयणमया ॥१८०॥ नवगुणहृत्तरि जोयण, बहिज

लुवरि चत्त पण नवइ ज्ञाया ॥ एए मञ्जे नवसय, तेसठा जागसगसयरी ॥ १२ ॥
 हिमवंतता विदिसी, साणाङ्गयासु चउसु दाढासु ॥ सग सग अंतर दीवा,
 पढमचउकं च जगईउ ॥ १२ ॥ जोयणतिसएहि तउ, सयसयबुह्नी य बसु चउ
 केसु ॥ अनुन्न जगइ अंतरि, अंतरसमविबरा सेवो ॥ १३ ॥ पढमचउकुच्चबहि,
 अह्वाइ य जोयणइ य वीसंसो ॥ सयरिं सबुह्निपुरउ, मज्जदिसिं सवि कोसङ्गं
 ॥ १४ ॥ सेव सेवेइयंता, पढमचउकंमि तेसि नामाई ॥ एगोरुय आनासिय,
 वेसाणिय चव लांगूले ॥ १५ ॥ बीयचउके हयगय, गो सक्कुलि पुषकसनामा
 णो ॥ आयंस मिठग अउ, गोपुषमुहा य तइयंमि ॥ १६ ॥ हय गय हरि वग्घ
 मुहा, चउबए आसकस् हरिकसो, अकस् कस् पावर, ए दीव पंचमचउकंमि
 ॥ १७ ॥ उक्कमुहो मेहमुहो, विज्जुमुहो विज्जुइत बंठमि ॥ सत्तमगे दंतता, घण
 लठ निगूढ सुधाय ॥ १८ ॥ एमेव य सिहरिंमि वि, अडवीसं सवि हुंति बण

न्ना ॥ एएसु बुअलरूवा, पलिआसंखंसआउ नरा ॥ १२ए॥ जोयणदसमंस
 तणु, पिठिकरंमाणेसि चउसठी ॥ असणं चउउवाउ, गुणसीदिण वच्चपाल
 णया ॥११०॥ पन्निमदिसि सुठिय लव, णसामिणो गोयमुत्ति इयुदीवो ॥ उचउ
 वि जंबुलवणे, उ उ रविदीवा य तेसिं च ॥११२॥ जगइ परुपरि अंतरि, तह
 विठर वार जोयणसहस्सा ॥ एमेव य पुव्वदिसि, चंदचउक्कस्स चउ दीवा ॥१११॥
 एवंचिय वाहिरउ, दीवा अठठ पुव्वपठिमउ ॥ उ उ लवणे उ उ धायइ, संरु स
 सीणं रवीणं च ॥११३॥ एए दीवा जलुवरि, वहि जोयण सहअठसीइ तहा ॥
 भागावि य चालीसा, मजे पुण कोसङ्गमेव ॥ ११४ ॥ कुलगिरिपासायसमा,
 पासाया एसु नियनियपहूणं ॥ तह लवणे जोइसिया, दगफालिह उहलेसागा
 ॥११५॥ इति श्री लवणसमुच्चधिकारोद्वितीयः समाप्तः ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४४ ॥
 ॥ जामुत्तरदीहेणं, दससयसमपिहुल पणसय उच्चेण ॥ उमुयारगिरि कुणेणं,

धायइसंनो छह विहत्तो ॥२२६॥ खंरुङ्गे ठ ठ गिरिणो, सग सग वासा य अ
 रविवररूवा ॥ धुरि अति समा गिरिणो, वासा पुण पिडुजपिडुलयरा ॥२२७॥
 दहंकुंठुक्तममे, रु मुस्सयं विठरं वियद्दाणां वट्टगिरीणं च सुमे, रुवज्जमिह जाण
 पुव्वसमं ॥२२८॥ मेरुङ्गं पि तहच्चिय, नवरं सोमणसहिट्टुवरि देसे ॥ सग अड
 सहस्स ऊण, तिसहस पणसीइ उच्चते ॥२२९॥ तहपणनवइचजसुज, य अरु
 चजसुज य अठ तीसाय ॥ दस य सया य कमेणं, पण्ठाणपिडुत्ति हिठाय
 ॥२३०॥ नइ कुंरुदीववणसुह, दहदीहरसेलकमलविठारं ॥ नइउंफत्तं च तहा,
 दह दीहत्तं च इह उयुणं ॥२३१॥ इगलक सत्तसहसा, अडसय गुणसीइ न
 हसालवणं ॥ पुवावरदीहंतं, जामुत्तरअठसीइचइयं ॥ २३२ ॥ बहिगयदंता दी
 हा, पणलकण सयरिसहस इ गुण्ठा ॥ इयरे तिलक षण्ण, सुसहस सयइसि
 सगवीसा ॥२३३॥ खित्ताणुमाणउ से, स सेलनईविजय वणसुहायामो ॥ चउ

लक्ष्मु दीह्वासा, वासविजयविहरो जह्मो ॥ १३४ ॥ खित्तंक्युणधुवंके,
 दोसय बारुत्तरोहि पविभत्ते ॥ सव्वह वासवासो, ह्वेइ इह पुण इय धुवंका
 ॥ १३५ ॥ धुरि चउद लक्क डुसह,स दो सगनजया धुवं तहा म्हे ॥ डुसय अ
 डुत्तर सत्स,ठि सहसब्बीसलक्का य ॥ १३६ ॥ गुणवीस सयं बत्ती,स सहस
 गुणयाल लक्क धुवमंते ॥ नइगिखिणमाण विसु, ५ खित्तसोलंसपिहु विजया
 ॥१३७ ॥ नवसहसा बसय तिहु, तरा य ब च्चेव सोलजाया य ॥ विजयपिहुत्त
 नइगिरि, वणविजयसमासचउलक्का ॥१३८ ॥ पुवंव पुरी य तरू, परसुत्तरकुरु
 सु धाइ महधाइ ॥ रुक्का तेसु सुदंसण, पियदंसणनामया देवा ॥ १३९ ॥ धुव
 रासीसु य मिलिया, एगो लक्को य अडसयरि सहसा ॥ अठसया बायाळा,
 परिहित्तिगं धायईसंने ॥१४० ॥ कालोदहि सव्वहवि, सहसुंने वेलविरिहिज त
 ङ ॥ सुब्बियसम कालमहा, कालसुरा पुव्वपब्बिमत्ते ॥१४१ ॥ लवणंमिव जह्मं

नव, ससिरविदीवा इहंपि नायवा ॥ नवरं समंततु ते, कोसड्युच्चा जल
 स्सुवरिं ॥१४१॥ पुस्करदलबहिजगइ, व संठिउ माणुसुत्तरो सेलो ॥ वेळंधरणि
 रिमाणो, सीह निसार्इ निसववसो ॥१४३॥ जह खित्तनगार्इणं, संवाणो धाय
 ए तहेव इहं ॥ डुगुणो य नहसाळो, मेरुसुयारा तहा चेव ॥१४४॥ इह बाहि
 रगयदंता, चजरो दीहत्ति वीस सय सहसा ॥ तेयालीससहस्सा, गुणवीसहि
 या सया डुन्नि ॥१४५॥ अड्ढित्तर गयदंता, सोळसलका य सहसब्बीसा ॥
 सोळहिय सयं चेंगं, दीहत्ते हुंति चजरोवि ॥१४६॥ सेसा पमाणउ जह, जंबूदी
 वाउ धाइए नणिया ॥ डुगुणा समा य ते तह, धायइसंनउ इह नेया ॥१४७॥
 अडसीलका चउदस, सहसा तह नवसया य इगवीसा ॥ अड्ढित्तर धुवरासी,
 पुषत्त विह्दीइ गणियवो ॥१४८॥ इगकोडि तेरलका, सहसा चउचत्त सगसय
 तियाला ॥ पुस्करवरदीवहे, धुवरासी एस मचंमि ॥१४९॥ एगा कोडी अंडती,

सलक चहत्तरीसहस्सा य ॥ पंचसथा पणसठा, धुवरासी पुकरधंते ॥१५०
 गुणवीससहस सगसय, चणणय सवाय विजयविक्रंभो ॥ तह इह. बहिवह
 सलिला, पविसंति य नरनगस्साहो ॥१५१॥ इह पणमहापणमो, रुका उत्त
 रकुरुसु पुषिंवा ॥ तेसु य वसंति देवा, पणमो तह पुंनरीड य ॥१५२॥ पुकरदल
 पुवाहर, संनंतो सहसङ्गपिहुकुना ॥ न्णियातठाणपुण, गीसन्नाचेव जाणंति ॥
 दा गुणहत्तरि पढमे, अड लवणे बीयदीव तइयधे ॥ पिहुपिहु पणसय चाला, इय
 नरखित्ते सयलनिरिणो ॥१५३॥ तेरह सय सगवस्सा, ते पणमेरुहि विरहिया सवे
 ॥ जस्सेहपायकंदो, माणुससेलो वि एमेव ॥१५४॥ धुवरासीसु तिलका, पण
 पस्सहस्स षसय चुलसीया ॥ मिलिया ह्वंति कमसो, परिहितिंगं पुकरधस्स
 ॥१५५॥ नइदहयणथणियागणि, जिणाइ नरजम्मरणकालाई ॥ पणयालल
 खजोयण, नरखित्तंमुत्तु नो पुरउ ॥१५६॥ चजस्सुवि इसुयारेसु, इक्किं नरन

गामे चत्तार ॥ कूडावार । जणभवणा, कुलागाराजणभवणपारमाणा ॥ १५५ ॥
 ततो डुगुणपमाणा, चउदारा धुतवस्त्रियसुरूवा ॥ नंदीसरबावसा, चउ कुंमलि रु
 यगिचत्तारि ॥ १५६ ॥ बहुसंखविगणे रुय, गदीव उच्चत्ति सहस चुलसीर्दि ॥ नर
 नगसमरुयगो पुण, विब्बरि सयवाण सहसंको ॥ १५७ ॥ तस्स सिहरंमि चउदि
 सि, बीयसहस्सि गियु चउठि अठठ ॥ विदिसि चऊ इय चत्ता, दिसिकुमरि
 कूड सहस्सुच्चा ॥ १५८ ॥ इय कयवयदीवोदहि, विचारजेसो मएविमइणावि ॥
 लिहिउ जिणगणहरयुरु, सुयसुयदेवीपसाएण ॥ १५९ ॥ सेसाए दीवाण तहो
 दहीणं, विचारविब्बारमणोरपारं ॥ सया सुयाउ परिभावयंतु, सबंपि सबंनुयइक्क
 चित्ता ॥ १६० ॥ सूरिहि जं रयणसेहरनामएहिं, अप्पढ मेव रइयं नरखित्तविकं
 ॥ तं सोहियं पयरणं सुयणाहि लोए, पावेउ तं कुसलरंगमयण्यसिर्दि ॥ १६१ ॥
 इति श्री क्षेत्रसमासप्रकरणं संपूर्णम् ॥ इयखित्त समास पकरणस्सबोण ॥

॥ श्रीजिनायनमः ॥ अथ श्रीदिवेंजसूरिकृतकर्मग्रंथमूलगाथाप्रारंभः ॥ आ
 र्पाद्यत्तम् ॥ सिखीरिणिं वंदिञ्च, कम्मविवागं समासतवुवं ॥ कीरइ जिण
 हेण्हिं, जेणतो नसए कम्मं ॥२॥ पयइ विइ रस पएसा, तं चउहा मोञ्जगस्स
 दिठंता ॥ मूलपगइठ उत्तर, पगई अडवन्न सयनेञ्चं ॥१॥ इह नाण दंसणा
 वर, ए, वेञ्च मोहाउ नाम गोआणी ॥ विग्घं च पण नव इञ्च, ठवीस चउ ति
 सय इ पण विहं ॥३॥ मइ सुञ्च उंही मणके, बलाणि, नाणाणि तह मइना
 ण ॥ वंजणवग्गह चउहा, मण नयण विणिंदिञ्च चउक्का ॥४॥ अहुग्गह ईहा
 वा, यथारणाकरण माणसेहिं उहा ॥ इञ्च अठवीस नेञ्चं, चउदसहा वीसहा च
 सुञ्चं ॥५॥ अकर सन्नी सम्मं, साईयं खलु सुपक्कवसिञ्चं च ॥ ममिञ्च अंगप
 विठं, सत्तवि एए सपडिवक्का ॥६॥ पक्कय अकर पय सं, घाया, पडिवत्ति तह
 य अपुणंगो ॥ पाहुडपाहुड पाहुड, वहु पुषाय ससमासा ॥ ७॥ अपुगामि

बहूमाणय, पडिवाई यरविहा बहा उही ॥ रिउमइ विउलमई मण, नाणं के
 वल मिगविहाणं ॥७॥ एसिंजं आवरणं, पडुव्व चकुस्स तं तथा वरणं ॥ दंसण
 चउ पण निहा, वित्तिसमं दंसणावरणं ॥ ९॥ चकु व्हिठि अचकू, सेसिंदिय
 उहिं केवलोहिं च ॥ दंसण मिह सामन्नं, तस्सावरणं तयं चउहा ॥ १० ॥ सुह
 पडिबोहा निहा, निहा निहा य डुकपडिबोहा ॥ पयला तिउवविठ, स्स, पयल
 पयला य चंकमउ ॥ ११ ॥ दिण चिंतिअन्न करणी, थीणधी अरुचक्कि अरु
 बला ॥ महुलित्त खग्गधारा, लिहिणं व डुव्वउ वेअणिअं ॥ १२ ॥ उसन्नं सु
 रमणुए, सायमसायं तु तिरिअ निरएसु ॥ मज्जव मोहणीअं, डुविहं दंसण च
 रण मोहा ॥ १३ ॥ दंसणमोहं तिविहं, सम्मं मीसं तदेव मिहत्तं ॥ सुंधं अरु
 विसुंधं, अवि सुंधं तं हवइ कमसो ॥१४॥ जिअ अजिअ पुसु पावा, सव संव
 र बंध सुक निजरणा ॥ जेणं सहहइ तयं, सम्मं खइगाइ बहुनेअं ॥१५ ॥ मी

मा न रागदोसो, जिणधम्मं अंतमुहु जहा अन्ने ॥ नालिअर दीवमणुणो, मि
 ढं जिणधम्म विवरीअं ॥ १६ ॥ सोलस कसाय नव नो, कसाय इविहं चरित्त
 मोहणियं ॥ अण अप्पच्चखाणा, पच्चखाणाय संजलणा ॥ १७ ॥ जा जीव वरि
 स चउमा, स पक्कगा निरय तिरिय नर अमरा ॥ सम्माणु सव्वविरई, अ
 ह्वाय चरित्त घायकरा ॥ १८ ॥ जल रेणु पुढवि पवय, राईसरिसो चउव्विहो को
 हो ॥ तिणि सिलया कठठिअ, सेलहंभो वमोमाणो ॥ १९ ॥ माया वलेहि गो
 मु, तिभिंढसिंण घणवंसमूलसमा ॥ लोहो हलिह खंजण, कदम किमिराग सा
 माणो ॥ २० ॥ जस्सुदया होइ जिए, हास रइ अरइ सोग जय कुढा ॥ सनिमि
 त्त मन्नहा वा, तं इह हासाइ मोहणिअं ॥ २१ ॥ पुरिसिन्धि तल्लभयं पइ, अहि
 लासो जव सा हवइ सोउ ॥ धी नर नपुंवेउदउ, कुंजुम तए नगरदाहसमो
 ॥ २२ ॥ सुर नर तिरि निरयाउ, हडिसरिसं नामकम्म चित्तिसमं ॥ बायाल ति

नवइविहं, तिउत्तरसयं च सत्तठी ॥ १३ ॥ गइ जाइ तणु उवंगा, बंधण संघाय
 णाणि संघयणा ॥ संवाण वस्स गंध र, स फास, अणुपुवि विहगगई ॥ १४ ॥ पि
 न्पयडिति चउदस, परधा उस्सास आय बुज्जोअं ॥ अगुरुलडु तिउ निमिणो,
 वघाय मिअ अठपत्तेआ ॥ १५ ॥ तस बायर पज्जत्तं, पत्तेय थिरं सुभं च सुभगं
 च ॥ सुसरा इज्ज जसं तस, दसगं थावरदसं तु इमं ॥ १६ ॥ थावर सुहुम अ
 पज्जं, साहारण अधिर असुभ उभगाणि ॥ इसर अणाइज्जा जस, मिअनामि
 सेअरा वीसं ॥ १७ ॥ तसचउ थिरबक्कं अधि, रबक्क, सुहमतिग थावरचउक्कं ॥ सु
 जगतिगाइ विभासा, तथाइ संखाहि पयडीहिं ॥ १८ ॥ वन्नचउ अगुरुलडु चउ,
 तसाइ इति चउर बक्क मिच्चाइ ॥ इअ अन्नावि विभासा, तथाइ संखाहि पय
 डीहिं ॥ १९ ॥ गइआइअणुक्कमसो, चउ पण पण ति पण पंच ष बक्कं ॥ पण इ
 ग पण ठ चउ दुग, इअ उतरभंअ पणसठी ॥ २० ॥ अडवीस जुआ तिनवइ,

संतेवा पनर बंधणे तिसयं ॥ बंधण संघाय गहो, तणुसु सामण वण चक्र
 ॥३१॥ इअ सत्त ठी बंधो,दएअ नय सम्म मीसया बंधे ॥ बंधुद ए सताए,
 वीस ड्वीसठवणसयं ॥ ३२ ॥ नैरय तिरि नर सुरगई, इग विअ तिअ चउ
 पणिदि जाईउ ॥ उराल विजवा हा, र तेअ कम्मण पण सरीरा ॥ ३३ ॥ वा
 हू रु पिठि सिर उर, उअरंउग उवंग अंगुली पसुहा ॥ सेसा अंगोवंगा, पढ
 म तणुतिगस्सुवंगाणि ॥ ३४ ॥ उरलाइ पुग्गलाणं, निवध बअंतयाण संबंधं ॥
 जं कुणइ जउ समंतं, बंधण सुरलाइ तणु नामा ॥ ३५ ॥ जं संघायइ उरला,इ
 पुग्गले तिरणणं वदंताली ॥ तं संघायं बंधण,मिव तणु नामेण पंचविहं ॥ ३६ ॥
 उराल विजवा हा, र याण सग तेअ कम्मजुताणं ॥ नव बंधणाणि इअर, ड
 सहि आणि तिन्नि तेसिं चा ॥ ३७ ॥ संघयण मठिनियउ, तं उधा वज्जरिसह् ना
 रायं ॥ तहय रिसह् नारायं, नारायं अधनारायं ॥ ३८ ॥ कीलिअ ठेवठं इह,

रिसहो पद्मे अ कीलिआवळं ॥ उमन मकडबंधो, नारायं इममुरावंगे ॥३९॥
 सम चउरंसं निगो, हा. साइ खुजाइ वामाणं हुंमं ॥ संवाणा वसु किरह, नी
 ल लोहिय हलिह सिआ ॥४०॥ सुरही डरही रस पण, तित कडु कसाय अं
 बिला मडुरा ॥ फासा गुरु लडु मिउ खर, सी उषह सिणिध रुकठा ॥ ४१ ॥
 नील कसिणं डगंधं, तितं कडुअं गुरुं खरं रुकं ॥ सीअं च असुह नवगं, इका
 रसगं सुनं सेसं ॥४२॥ चडहगइवणुषी, गइ पुवि डुगं तिगं निआजुअं ॥
 पुषी उदउ वके, सुह असुह वसु इ विहग गई ॥ ४३ ॥ परघा उदया पाणी,
 परेसि बलिणंपि होइ छुडरिसो ॥ कससिण लडिजुत्तो, हवेइ कसासनामवसा
 ॥४४॥ रविबिंबेज जिअंगं, तावजुअं आयवाउ नउजलणे ॥ जमुसिण फास
 स्स तहिं, लोहिअवसुस्स उदउत्ति ॥४५॥ अणुसिण पयासरुवं, जिअंगमुजो
 आइ हुजो आ ॥ जइ देवुत्तर विकिअ, जोइस स्वजोअ माइव ॥४६॥ अंगं न

कर्मण
॥५४॥

युरु न लडुअं, जायइ जीवस्स अगुरु लहु उदया ॥ तिहेण तिहुअणस्सवि,
पुज्जो से उदउं केवलिणो ॥४९॥ अंगोवंग निअमिणं, निम्माणं कुणइ सुत्तहा
रसमं ॥ उवघाया उव हम्मइ, सतपु अवयवलोबि गाईहिं ॥४९॥ बि ति चउ
पणोदितस्सा, बायरउं बायरजिअ थूला ॥ निअ निअ पज्जति जुआ, प
ज्जा लधिक्करोहिं ॥४९॥ पत्ते अ तए पत्ते, उदएणं दंतअठिमाइ थिरं ॥ ना
नुवरि सिराइ सुहं, सुजगाउं सव्वजणइठो ॥५०॥ सुसरा मदुर सुहजुणी, आ
इजा सव्वलोअ गिप्पवउं ॥ जसउं जस किंतीउं, थावर दसगं विवज्जहं ॥
॥५१॥ गोअं उहुअ नीअं, कुलाल इव सुघड मुंजलाईअं ॥ विग्घं दाणे लान्ने,
भोगु व भोगेसु विरिएअ ॥५२॥ सिरि हरिअसमं एअं, जह पडिक्खलेण तेण
रायाई ॥ न कुणइ दाणाई अं, एवं विग्घेण जीवो वि ॥५३॥ पडिणीअत्तण नि
न्हव, उवघाय पउंस अंतराएणं ॥ अच्चा सायणयाए, आवरण इगं जिउज

यई ॥ ५४ ॥ गुरुभति खति करुणा, वय जोग कसायविजय दाण जुते ॥ दढ
 धम्मार्ई अज्जइ, सायमसायं विवज्जयते ॥ ५५ ॥ उम्मग्ग देसणामग्ग नासणा दे
 वदधहरणेहिं ॥ दंसणमोहं जिण सुणि, चेइअ संघाइ पडिणीते ॥ ५६ ॥ उव्हिहं
 पि चरणमोहं, कसाय हासाइ विसय विव समणो ॥ बंधइ निरयाज महा, रंज
 परिग्गहरते रुदो ॥ ५७ ॥ तिरिआज गूढहिअते, सबो ससद्धो तहा मणुस्साते ॥
 पयई य तणुकसाते, दाणरुई मस्सिमणुणो अ ॥ ५८ ॥ अविरइमाइ सुराते,
 बालतवोऽकाम निजरोज्जयइ ॥ सरलो अगार विद्धो, सुहनामं अन्नहा अ
 सुहं ॥ ५९ ॥ गुण पेहीमय रहिते, अप्पयण प्रावणा रुई निच्चं ॥ पकुणइ जि
 णाइ भत्तो, उच्चं नीच्चं इअरहाते ॥ ६० ॥ जिणपूआविग्घकरो, हिंसाइपराय
 णो जयइ विग्घं ॥ इय कम्मविवागोयं, लिहिते देविंदसूरीहिं ॥ ६१ ॥ इति
 कर्मविपाकनामा प्रथमः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ २ ॥ ॥ ६१ ॥

॥ श्री जिनाय नमः ॥ अथ श्रीद्वितीयकर्मग्रंथप्रारंभः ॥ आर्यावृत्तम् ॥
 तद् द्युणिमो वीरजिणं, जह् द्युणवाणेषु सयलकम्माइ ॥ बंधुदयोदीरणया,
 सत्ता पत्ताणि खविआणि ॥२॥ मिहे सासणमीसे, अविश्य देसे पमत्त अपम
 ते ॥ निअट्ठि अनिअट्ठि सुहु, सुवसम खीण सजोणि अजोणि गुणा ॥ ३ ॥ अ
 भिनव कम्मग्गहणं, बंधो उहेण तब् वीस सयं ॥ तिब्बयरा हारग हुग, वळ
 मिहंमि सतर सयं ॥३॥ नरय तिग जाइ थावर, चउ हुंजा यव विवठ नपु मि
 हं ॥ सोलं तो इगहिअसय, सासणि तिरि घीण इहग तिगं ॥४॥ अण मशा
 गिइ संघय, ण, चउ नि उळोअ कुवगइ ठित्ति ॥ पणवीसंतो मीसे, चउसअरि
 उहाउअ अबंधा ॥५॥ सम्मे सग सयरि जिणा, उबंधि, वइर नर तिअ विअ
 कसाया ॥ उरल उगंतो देसे, सत्तठी तिय कसायं तो ॥६॥ तेवठि पमत्ते सो,
 ग अरइ अधिर हुग अजस अस्सायं ॥ बुडिळ बच्च सत्तव, नेइ सुराउ जया

निष्ठं ॥ ७ ॥ गुणसृष्टि अप्समत्ते, सुराज बंधं तु जइ इहा गढे ॥ अन्नह अछाव
ना, जं आहारग डुगं बंधे ॥७॥ अडवन्न अपुषा इमि, निह डुगंतो ढपन्न पण
भाग्ने ॥ सुर डुग पणिदि सुखगंइ, तस नव उरल विणु तणु वंगा ॥८॥ समच
उर निमिण जिण व,न्न अगुरु लहु चउ ढलंसि तीसंतो ॥ चरमे ढवीस बंधो,
हास रई कुव नय भेउ ॥२०॥ अनिअट्टि भाग पणगे, इगेगहीणो डुवीसविह
बंधो ॥ पुम संजलण चउण्हं, कमेण तेउ सतर सुहुमे ॥२१॥ चउ दंसणुच्च ज
स ना, ए विग्घ दसगंति सोलसु हेउ ॥ तिसु साय बंध तेउ, सजोगि बंधंत अ
णंतो अ ॥२२॥ बंधो संमत्तो ॥२॥ उदउ विवाग वेअण, सुदीरण मपत्ति इह ड
वीस सयं ॥ सतर सयं मिठे मी, स, सम्म आहार जिणणुदया ॥ २३ ॥ सुहुम
तिगा यव मिठं, मिठंतं सासणे इगारसयं ॥ निरयाणु पुविणुदया, अण थाव
र इग विगल अंतो ॥२४॥ मीसे सय मणु पुषी, एदया मीसो दएण मीसंतो ॥

चञ्चसय मजए सम्मा, ए पुषि खेवा विञ्च कसाया ॥ २५ ॥ मणुतिरिणु पुषि
विजव, ठ, ड्हग अणाइज्जग सतर बेउ ॥ सगसीइ देसि तिरि गइ, आउ नि
उज्जोच्च ति कसाया ॥ २६ ॥ अठ्ठेउइगसी, पमत्ति आहार जुअल पखेवा ॥
धीण तिगा हारग ड्ग, बेउ व सयरि अपमत्ते ॥ २७ ॥ समत्तं तिमसंघय, ए
तिअग बेउ बिसत्तरि अपुषे ॥ हासाइ बक्क अंतो, बसठ्ठि अनिअड्ढिवेअ तिगं
॥ २८ ॥ संजलण तिगं व बेउ, सठी सुहुमम्मि तुरिअ लोभंतो ॥ उवसंत गुणे
गुण स, ठि रिसह, नाराय ड्ग अंतो ॥ २९ ॥ सगवन्न खीण ड्ग चरिमि, निह ड्
गंतो अचरिमि पणवन्ना ॥ नाणंतराय दंसण, चउ बेउ सजोगि बायाळा ॥ ३० ॥
तिहुदया उरला धिर, खगइ ड्ग परित्त तिग व संगणा ॥ अगुरु लहु वन्न
चउ निमि, ए तेअ कम्माइग संघयण ॥ ३१ ॥ सूसर दूसर साया, साए गयरं च
तीस बुहेउ ॥ बारस अजोगि सुजगा, इज्ज जसन्नयर वेअणिअं ॥ ३२ ॥ तस

तिग परिंदि मणुआ, उ गइ जिणु चंति चरिम समयंतो॥ उदउ समत्तो॥ १॥ उद
उवुदीरणया, परम पमत्ताइ सग गुणेषु॥ पावांतरो॥ परम पमत्ताइ सग तिगुणा॥ २३
पावांतरगाथा ॥ जं वेअणिआहारइ, गथीणतिगनराउअडपमत्ता॥ गुणयाल
सजोगिउदी, रणं तु अणुदीरगु अजोगी ॥ २४॥ एसा पयडी तिगुणा, वेअणि
आहार उअल थीण तिगं ॥ मणुआउ पमत्ता, अजोगि अणुदीरगोअय
वा॥ २५॥ उदीरण सम्मत्ता॥ ३॥ सत्ता कम्माण विई, बंधाइअ लइ अत्त लाना
णं ॥ संते अडयाल सयं, जा उवससु विजिणु बिअ तइए ॥ २६ ॥ अपूवाइअ
चउकंके, अण तिरि निरयाउ विणु बिआलसयं ॥ सम्माइ चउसु सत्तग, खयं
मि इग चत्तसय महवा ॥ २७॥ खवंगंतु पप चउसुवि, पणयालं निरय तिरि सु
राउ विणा ॥ सत्तग विणु अडतीसं, जा अनिअही पढम भागो ॥ २८॥ धावर
तिरि निरया यव, उग थीण तिगे ग विगल साहारं ॥ सोल खव उविस सयं,

विद्यांसि विद्म्य तिच्च कसायंतो ॥१७॥ तद्दद्याद्भु चउदस ते, र बार ढ पण च
 उ तिह्निच्च सय कमसो ॥ नपु इहि दासढग पुस, तुरिच्च कोहो मय माय ख
 डे ॥३०॥ सुद्धमि डसय लोहंतो, खीण ड चरिमेगसय ड निह खड ॥ नवनव
 इ चरिमि समए, चउ दंसण नाण विग्धंतो ॥३१ ॥ पणसीइसजोगि अजो, गि
 ड चरिमे देव खगइ गंध ड्हां ॥ फासठ वसु रस तणु, बंधण संघाय पण निमि
 णं ॥ ३२ ॥ संघयण अधिर संवा, ए. बक्क अगुरुलडु चउ अपकृतं ॥ सायं च
 असायं वा, परिनुवंगातिग सुसर निअं ॥३३॥ विसयरि खड अचरिमे, तेरस
 मणुअ तस तिग जसाइकं ॥ सुजग जिणुच्च परिदिअ, सायासा एगयर हेउ
 ॥३४॥ नर अणुपुवि विणा वा, बारस चरिम समयमि जो खविड ॥ पत्तो सिधिं
 देविं, द वंदियं नमह तं वीरं ॥३५॥ सत्ता सम्मत्ता ॥३६॥ इति कर्मस्तवाख्यो द्विती
 यः कर्मग्रंथः संपूर्णः ॥ बंधविहाणविमुक्तं, वंदिअ सिरिधमाण जिणचंदं ॥ गइ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

आर्दिसु बुढं, समासउ बंधसामितं ॥२॥ गइइदीए काए, जोए वेए कसाय नाणे
 य ॥ संजमदंसणलेसा, नवसम्मै सन्निआहारै ॥ १ ॥ जिण सुर विजवाहारग,
 देवालअनिरय सुहुम विगल तिगं ॥ एगिंदि थावरा यव, नपुमिढं हुंनवेवठं ॥३॥
 अण मथागिइ संघय, ए, कुखगइ निअ इढि इहग घीण तिगं ॥ उज्जेअ तिरि
 इगं तिरि, नराउ नर उरल इग रिसहं ॥४॥ सुर इगुण वीस वज्जं, इगसउ उ
 हेण बंधहिं निरया ॥ तिउविणा मिठि सयं, सासणि नपु चउविणा बनुइ ॥५॥
 विणु अण उवीस मीसे, विसयरि सिम्ममि जिण नराउ जुअ ॥ इअ रयाणइ
 सु मंगो, पंकाइसु तिउयरहीणो ॥ ६ ॥ अजिण मणु आउ उहे, सत्तमिए नर
 इगुअ विणु मिठे ॥ इग नवई सासाणे, तिरिआउ नपुंस चउवज्जं ॥ ७॥ अण
 चउवीस विरहिया, सनर इगुअाय सयरि मीस इगे ॥ सतरसउ उहि मिठे,
 पज तिरिआ विणु जिणाहारं ॥८॥ विणु निरय सोद सासणि, सुराउ अण ए

गतीस विष्णु मीसे ॥ ससुराउ सयरि सम्मे, बीअ कसाए विणा देसे ॥ ए॥ ६
 अ चउगुणेसु वि नरा, परमजया सजिण उहु देसाइ ॥ जिण इक्कारस हीणं,
 नव सय अपजत्त तिरिअ नरा ॥ २० ॥ निरयव सुरा नवरं, उहे मिहे इगिंदि
 तिग सहिआ ॥ कप डगे विअ एवं, जिणहीणो जोइ भवण वणे ॥ २१ ॥ स्य
 शुव सणं कुमारा, इ आणयाइ उजोअ चउरहिआ ॥ अपक्क तिरिअव नव स
 य, मिगिंदि पुढवि जल तरु विगले ॥ २२ ॥ अबनवइ सासणि, विष्णु सुहु, म तेर के
 इ पुण बिंति चउनवइ ॥ तिरिअ नरा ऊहि विणा, तणु पक्कत्तिं न जंति जउ ॥
 ॥ २३ ॥ उहु परिंदि तसेगइ, तसे जिणिकार नर तिगुअ विणा ॥ मणवय जोगे
 उहे, उरले नरअंगु तम्मिस्से ॥ २४ ॥ आहार ढग विणेहे, चउदससउ मिहि
 जिण पणगहीणं ॥ सासणि चउ नवइ विणा, तिरिअ नराउ सुहुम तेरा ॥ २५ ॥
 अण चउवीसाइ विणा, जिणपण जुअ सम्मि जोगिणो सायं ॥ विष्णु तिरि न

रात्र कम्मे, विः एवमाहारङ्गि उहो ॥ २६ ॥ सुरब्रह्मो वेज्वे, तिरिञ्च नरात्र र
 द्विञ्च तस्मिस्से ॥ वेञ्च तिगा इम विञ्च तिञ्च, कसाय नव इ चत्र पंच गुणा
 ॥ २७ ॥ संजलण तिगे नव दस, लोन्ने चत्र अजइ इ ति अनाण तिगे ॥ बार
 स अचकु चकुसु, पढमा अहखाइ चरिम चक्र ॥ २८ ॥ मणनाणी सग जया
 इ, समइञ्च ठेञ्च चत्र इन्नि परिहारोकेवल इनि दो चरिमा, अजयाइ नवमइ
 सु उहि इगे ॥ २९ ॥ अड उवसमि चत्र वेञ्चनि, खइए इक्कार मिह तिनि देसे
 ॥ सुहुमि सवाणं तेरस, आहारग निञ्च निञ्च गुणोहो ॥ ३० ॥ परसुवसमि वडं
 ता, आत्र न बंधंति तेण अजयगुणे ॥ देवमणुआत्र हीणो, देसाइसु पुण सुरां
 उविणा ॥ ३१ ॥ उहे अठारसयं, आहार इगुणमाइ लेसतिगे ॥ तं तिबोणं मि
 वे; साणाइसु सवहिं उहो ॥ ३२ ॥ तेक निरय नवूणा, उक्कोञ्च चत्र निरय बार
 विणु सुक्का ॥ विणु निरय बार पम्हा, अजिणाहारा इमा मिहो ॥ ३३ ॥ सब गुण

कर्म
॥५९॥

भवसन्निभु, उदु अजवा असन्नि मिहिसमा ॥ सासणि असन्नि सन्निव, कम्म
एअंगो अणाहारे ॥५४॥ तिसु इसु सुक्काइ गुणा, चउ सग तेरत्ति बंधसामित्तं
॥ देविंदसूरि रइअं, नेयं कम्मढयं सोउं ॥५५॥ इति बंधस्वामित्वाख्यस्तृतीयः
कर्मग्रंथः समाप्तः ॥३॥ ॥ ६३ ॥ ॥६४ ॥ ॥६५ ॥ ॥६६ ॥
नमिअ जिणं जिअमग्गए, गुणवाणुवउंग जोग लेसाउ ॥ बंध पबहु भावे, सं
खिजाई किमवि बुहं ॥२॥ नमिअ जिणं वत्तवा, चउदस जिअवाणएसु गुणवा
णा ॥ जोयुवउंगो लेसा, बंधोदउ दीरणा सत्ता ॥३॥ (पावांतरं) चउदसजियवा
णेषु, चउदसगुणवाणगणिजो गाय ॥ उवउंगलेसबंधो, दउदीरणसंत अछप
ए॥१॥ तह मूल चउद मग्गण, ठाणेषु बासठि उतरेसु यवि ॥ जिय गुण जोयुवउ
गा, लेस पबहुं च बठाणा ॥३॥ पावांतरं ॥ चउदस मग्गणवाणे, सुमूलपएसु बिस
ठि इयरेसु ॥ जियगुणजोयुवउंगा, लेसपबहुत्तबठाणा ॥ ३ ॥ चउदस गुणेषु

जिअ,जो,गु वडंग लेसाथ बंधहेऊ थ ॥ बंधाइअ चउ अण्णा, बहुं च तो भाव
 संखाई ॥ ४ ॥ (पावांतरं) चउदसगुणवाणेषु, जियजोगुवडंग लेसबंधाय ॥
 बंधुद दीरणाउ, संतप्पबहुत्तदसवाणा ॥ ४ ॥ दार गाहाउ ॥ अथ जी
 वस्थानानि उच्यन्ते ॥ इह सुहुम बायरेणि, दि वि ति चउ असन्नि सन्नि पं
 चिदी ॥ अपजत्ता पऊता, कमेण चउदस जिअठाणा ॥ ५ ॥ बायर अस
 न्नि विगले, अपऊि पढम विअसन्नि अपजत्ते ॥ अजय जुअ सन्निपऊे,
 सधगुणा मिठ सेसेसु ॥ ६ ॥ अपजत्त बक्कि कम्मुर, ल मीस जोगा अपऊ
 सन्नीसु ॥ ते सवि उवमीस एसु, तणु पऊेसु उरलमन्ने ॥ ७ ॥ सेवे सन्नि
 पजत्ते, उरलं सुहुमे सन्नासु तं चउसु ॥ बायरि सविउवि डंगं, पज सन्निसु
 बार उवडंगा ॥ ८ ॥ पज चउरिंदि असन्निसु, ड दंसइअणाए दससु चकु
 विणा ॥ सन्निअपऊे मण ना, ए, चकु केवल डग विहूणा ॥ ९ ॥ सन्नि

दुग्नि ष लोस, अप, ऊ बाथरे पढम चउ तिसेसेसु ॥ अथ बंधादीनि चत्वारि
 धाराणि प्रारभ्यन्ते ॥ सत्तठ बंधुदीरण, संतु दया अठ तेरससु ॥ १० ॥
 सत्तठ भेग बंधा, संतु दया सत्त अठ चत्तारि ॥ सत्तठ ष पंच डुगं,
 उदीरणा सन्निपज्जते ॥ ११ ॥ गइ इंदिएअ काए, जोए वेए कसाय नाणे
 सु ॥ संजम दंसण लेसा, भव सम्मे सन्नि आहारे ॥ १२ ॥ सुर नर तिरि निर
 य गइ, इग बिअ तिअ चउ पणिंदि बक्काया ॥ भूजल जलणाफ़निल वण, त
 सा य मण वयण तणु जोगा ॥ १३ ॥ वेअ नरि ढि नपुंसग, कसाय कोह मय
 माय लोभित्ति ॥ मइ सुअवहि मण केवल, विभंग मइ सुअ नाण सागारा
 ॥ १४ ॥ सामाइअं ठेअ परिहा, र, सुहुम, अहखाय देस जय अजया ॥ चकु अ
 चकू उही, केवल दंसण अणागारा ॥ १५ ॥ किष्हा नीला काऊ, तेऊ पम्हा
 य सुक भविअरा ॥ वेअण सइयुवसम, मि, ढ मीस सासाण सन्निअरे ॥ १६ ॥

आहारे अर भेआ, सुर निरय विभंग मइसु उहि डगे ॥ सम्मत तिगे पम्हा,
 सुक्का सन्नीसु सन्निङ्गं ॥२७॥ तमसन्नि अप्पकजुअं, नरे सवायर अप्पक ते
 ऊए ॥ थावर इग्गिदि पढमा, चउ वार आसन्नि डुडु विगले ॥२८॥ दस चरिम
 तसे अजया, हारग तिरि तएु कसाय डु अनाणे ॥ पढमति लेसा भविअर,
 अचकु नपु मिठि सवेवि ॥२९॥ प्पक सन्नि केवल डग, संजम मएनाए देस
 मण मीसे ॥ पण चरिम प्पक वयणे, तिय ठवि प्पकिअर चकुंमि ॥३०॥ छी न
 र पणिदि चरमा, चउ अएहारे डुसन्नि ठ अप्पका ॥ ते सुहुम अप्पक विणा,
 सासणि इत्तो गुणे बुवं ॥३१॥ पण तिरि चउ सुर निरए, नर सन्नि पणिदि न
 व तसि सवे ॥ इग विगल भूदगवणे, डु डु एगं गइ तस अन्नवे ॥ ३२ ॥ वेअ
 ति कसाय नव दस, लोभे चउ अजइ डु ति अनाए तिगे ॥ बारस अचकु
 चकुसु, पढमा अहवाइ चरिम चऊ ॥ ३३ ॥ मएनाणि सग जयाई, समइअ

बेअ चउ डुनि परिहारे ॥ केवल डुनि दो चरिमा, जयाइ नव मइसु उहि डुने
 ॥१४॥ अड उवसमि चउ वेअगि, खइइ इकार मिठ तिगि देसे ॥ सुहुमे स्स
 छाण तेर, स, जोग आहार सुक्काए ॥ १५ ॥ असन्निसु पढम डुगं, पढम तिले
 सासु बच्च इसु सत्त ॥ पढमं तिम डुग अजया, अणहारे मगणासु गुणा ॥
 ॥१६॥ सच्च अर मीस अस, च मोस, मणवय विउवि आहारा ॥ उरलं मीसा
 कम्मण, इअ जोगा कम्म अणहारे ॥१७॥ नर गइ परिणंदि तस तणु, अचकु
 नर नपु कसाय सम्मडुगे ॥ सन्नि बलेसा हारग, भव मइ सुअ उहि डुनि स
 वे ॥१८॥ तिरि इठि अजय सासण, अनाण उवसम अन्नव मिहेसु ॥ तेराहार
 डुगणा, ते उरलडुगण सुर निरए ॥१९॥ कम्मुरलडुगं यावरि, ते सविउवि डुग
 पंच इग पवणे ॥ व असन्नि चरिम वइडुअ, तेविउवि डुगण चउविगले ॥२०॥
 कम्मुरलमीस विणु मण, वय समइअ बेअ चकु मणनाणे ॥ उरल डुग कम्म

पढमं, तिम, मण वय केवल डुगंमि ॥३२॥ मणवय उरला परिहार, सुहुमि नव
 तेज मीसि सविज्वा ॥ देसे सविज्वा डुगा, सकम्भुरज मीस अहखाए ॥३३॥
 ति अनाण नाण पण चउ, दंसण बार जिअलकणु वउगा ॥ विणु मण नाण
 डु केवल, नव सुर तिरि निरय अजएसु ॥३३॥ तस जोअ वेअ सुक्का, हार न
 र पणिंदि सन्नि नवि सवे ॥ नयणे अरपण लेसा, कसाय दस केवल डुगूणा
 ॥३४॥ चउरिंदि असनि डु अना, ए, डुदंस इग वि ति थावरि अचकु ॥ ति
 अनाण दंसण डुगं, अनाण तिगि अन्नवि मिठ डुगे ॥३५॥ केवलडुगं निअ
 डुगं, नव ति अनाणविणु खइअ अहखाए ॥ दंसण नाण तिगं दे, सि मीसि
 अनाण मीसंतं ॥३६॥ मण नाण चकु वज्जा, अणहारे तिन्नि दंस चउ नाणा
 ॥ चउ नाण संजमो वस, म वेअगे उहि दंसेअ ॥३७॥ दो तेर तेर वारस, म
 ऐकमा अछ डु चउ चउ वयणे ॥ चउ डु पण तिन्नि काए, जिअ गुण जोगोव

उगन्ने ॥३७॥ वसु लेसासु सवाणं, एगेंदि असन्नि भूदगवणेसु ॥ पढमा चउ
 रो तिन्निउ, नारय विगलग्गि पवणेसु ॥३९॥ अहस्वाय सुहुम केवल, डगि सु
 का गवि सेस ठाणेसु ॥ नर निरय देव तिरिआ, थोवा ड असंखणंतगुणा ॥
 ॥४०॥ पण चउ ति ड एगिंदी, थोवा तिन्नि अहिआ अणंत गुणा ॥ तस थो
 व असंखग्गी, नू जला निल अहिअ अणंता ॥४१॥ मण वयण काय जोगी,
 थोवा असंख गुणा अणंतगुणा ॥ पुरिसा थोवा इठी, संखगुणाणंतगुण कीवा
 ॥४२॥ माणी कोही माई, लोनी अहिअ मणनाणियो थोवा ॥ उहि असंखा
 मइ सुअ, अहिय सम असंख विअंगा ॥ ४३ ॥ केवलियोणंतगुणा, मइ सुअ
 अन्नाणिणंतगुण तुह्ना ॥ सुहुमा थोवा परिहा, र संख अहस्वाय संखगुणा ॥४४॥
 ठेआ समइअ संखा, देस असंखगुणडणंत गुण अजया ॥ थोव असंख डणंता,
 उहि नयण केवल अचखू ॥४५॥ पढापु पुधि, लेसा, थोवा दोसंखणंत दो अ

ह्रिया ॥ अन्नवि अर थोवडणंता, सासण थोवो वसमसंखा ॥ ४६ ॥ मीसा सं
 खा वेअग, असंख गुण खइअ मिठ ड अणंता ॥ सन्नि अर थोवणंता, अण
 हार थोवेअर असंखा ॥ ४७ ॥ सब जिअठाण मिठे, सग सासणि पण अपऊ
 सन्नि डगं ॥ सम्मे सन्नी डविहो, सेसेसु सन्नि पऊत्तो ॥ ४८ ॥ मिठ डगिअ जइ
 जोगा, हार डगूणा अपुव पण गेउ ॥ मणवय डरल सविज्जि, मीसी सविउ
 वि डग देसे ॥ ४९ ॥ साहारडग पमत्ते, ते विउवाहार मीस विणु इअरो ॥ कम्मुरल
 डगंता इम, मण वयण सजोगि न अजोगि ॥ ५० ॥ ति अनाण डुंदसा इम,
 डुगे अजय देसि नाण दंस तिगं ॥ ते मीसि मीस समणा, जयाइ केवल ड अं
 त डुगे ॥ ५१ ॥ सासण नावे नाणं, विउव गाहारगे डरल मिससं ॥ नेगिंदिसु
 सासाणो, नेहाहि गयं सुअ मयंपि ॥ ५२ ॥ बसु सबा तेउ तिगं, इगि बसु सुक्का
 अजोगि अद्धेसा ॥ बंधस्स मिठ अविरइ, कसाय जोगत्ति चउ हेऊ ॥ ५३ ॥ अ

त्रिगहिञ्च मणस्त्रिगहिञ्चा, त्रिनिवेशिञ्च संसद्ञ मणा भोगा ॥ पण मिह्ण बा
र अविरेइ, मण करणनिञ्चसु ष जिञ्चवहो ॥ ५४ ॥ नव सोल कसाया पन,
रि जोग इञ्च उत्तरा जसगवक्खा ॥ इग चउ पण ति गुणेषु, चउ ति इ.इग पञ्च
उ बंधो ॥५५॥ चउ मिह्ण मिह्ण अविरेइ, पञ्चइआ साय सोल पणतीसा ॥ जो
ग विणु ति पञ्चइआ, हारग जिण वज्ज सेसाउ ॥५६॥ पणपन्न पन्न तिञ्च बहि,
अचत्त गुणचत्त ष चउ इगवीसा ॥ सोलस दस नव नव स, त हेउ णो नउ अ
जोगस्मि ॥५७॥ पणपन्न मिह्णि हारग, इगूण सासाणि पन्न मिह्णविणा ॥ मीस
इग कम्म अण विणु, तिचत्त मीसे अह ष चत्ता ॥५८॥ सडुमीस कम्म अज
ए, अविरेइ कम्मुरलमीस बिकसाए ॥ सुतु गुण चत्त देसे, षवीस साहार इ
पमत्ते ॥५९॥ अविरेइ इगार तिकसा, य वज्ज अपमत्ति मीस इग रहिञ्चा ॥ च
उवीस अपुंषे पुण, इवीस अविउषि आहारा ॥६०॥ अ बहास सोल बापरि,

सुद्धुमे दस वेअ संजलण ति विणा ॥ खीणु वसंति अलोजा, सजोगि पुवुत्त
सग जोगा ॥६२॥ अपमत्तंता सत्त, ठ म्मीस अपुव वायरा सत्त ॥ बंधइ वरुसु
इमो ए, गं सुवरिसाबंधगा जोगी ॥ ६२ ॥ आसुद्धुमं संतुदए, अठवि मोह वि
णु सत्त खीणंति ॥ चउ चरिम डुगे अठउ, संते उवसंति संतुदए ॥ ६३ ॥ उइरं
ति पमत्तंता, सगठ मीसठ वेअ आउ विणा ॥ ठग अपमत्ताइ तउ, ठ पंच सु
द्धुमो पणु वसंतो ॥६४॥ पण दो खीण ड जोगी, पुदीरगु अजोगि थोव उव
संता ॥ संख गुण खीण सुद्धुमा, निअट्टि अपुव सम अट्टिआ ॥६५॥ जोगि अ
पमत्त इयरे, संख गुणादेस सासणा मीसा ॥ अविरइ अजोगि मिवा, असंख
चउरो डुवेणंता ॥६६॥ उवसम खय मीसोदय, परिणामा ड नव ठारइगवीसा
॥ तिअ नेअसन्नि वाइअ, सम्मं चरणं पढम भावे ॥६७॥ बीए केवल सुअलं,
सम्मं दाणाइ लाधि पण चरणं ॥ तइए सेसुव उंगा, पण लईही सम्म विरइ ड

कर्म०
॥६४॥

गं ॥ ६७ ॥ अन्नाण मसिद्धता, संजम लेसा कसाय गइ वेअ्या ॥ मिठे छुरिए
नवा, नवत जिअत परिणामे ॥ ६९ ॥ चउ चउ गर्इसु मीसग, परिणामुइएहि
चउसु खइएहि ॥ उवसम जुएहि वा चउ, केवल परिणामुदय खइए ॥ ७० ॥
खय परिणामे सिधा, नराण पण जोगु वसम सेठीए ॥ इअ पनर संनिवाइअ,
नेअ्या वीसं अंसंनविणो ॥ ७१ ॥ मोहो वसमो मीसो, चउघाइसु अठ कम्मसु
असेसा ॥ धम्माइ पारिणामिअ, जावे खंधा उइइ एवि ॥ ७२ ॥ सम्माइ चउ
सु तिग चउ, जावा चउ पणु वसामगुवसंते ॥ चउखीणा पुवे ति, न्निसेस गुण
वाणो गजिए ॥ ७३ ॥ संखिजेग मसंखं, परित्तजुत्त निअ पय जुअं तिविहं ॥
एव मणंतं पि तिहा, जहन्न मवुक्कसा सब्बे ॥ ७४ ॥ लहु संखिजं उच्चिअ, अउ
परं मक्षिमंतु जागुरुअं ॥ जंबूदीवपमाणय, चउपत्त पखुवणाइ इमं ॥ ७५ ॥ प
द्धाणवठिअ सिला, ग पडिसिवागा महासिवागका ॥ जोअए सहसो गाढा,

सवेद अंता ससिह भरिआ ॥७६॥ तो दीबुदहिसु इक्कि,क्क सरिसवं खीवि अ
 निठिए पढमे ॥ पढमं व तदंतं चिअ,पुण भरिए तंमि तह खीणे ॥७७॥ खिप्प
 इ सिलाग पद्धे,गु सरिसवोइय सिलाग खिवणेणं ॥ पुसो बीउ अ तउ,पुबंधि
 व तंमि उधरिए ॥७८॥ खीणे सिलागि तइए, एवं पढमेहि बीअयं भरसु ॥ ते
 हिअ तइअं तेहिअ, तुरिअंजा किरपुडा चउरो ॥७९॥ पढमति पल्लुधरिआ,
 दीबुदही पद्ध चउ सरिस वाय ॥ सवो वि एस रासी,रूवूणो परमसंखिळं॥८०॥
 रूव जुअंतु परिता, ऽसंखं लहु अस्सरसि अप्पासे ॥ जुता संखिळं लहु,
 आवदिआ समय परिमाणं ॥८१॥ वि ति चउ पंचम गुणणे, कम्मासग संख
 पढम चउ सत्त ॥ एंता ते रूवजुआ, मबारूवूण गुरुपढा ॥ ८२ ॥ इय सुत्तं
 अणे, वग्गिअ मिक्कसि चउउय मसंखं ॥ दोइ अंसंखासंखं, लहु रूवजुअं तु
 तं मयं ॥८३॥ रूवूण माइमं गुरु, तिवग्गिउ तविमे दसकेवे ॥ लोगागासए

कर्म ०
॥६५॥

सा, धम्माधम्मेगजिञ्च देसा ॥७४॥ विद् बंधश्चसाया, अणुनागा जोग ठेञ्च
पडिजागा ॥ छश्चय समाण समया, पत्तेञ्च निगोञ्चए खिवसु ॥७५॥ पुण तं
मि ति वग्गिञ्चए, परित्तणंतं लहु तस्स रासीणं ॥ अप्पासे लहु जुत्ता, अंतं
अन्नव जिञ्चमाणं ॥७६॥ तवग्गे पुण जायइ, एंता एंत लहु तंच तिकुत्तो ॥
वग्गसु तह वित्तंतं होइ, एंत खेवे खिवसु व इमे ॥७७॥ सिञ्च निगोञ्च जीवा,
वणस्सई काव पुग्गला चेव ॥ सब मळोग नहं पुण, तिवाग्गिगं केवल डुगंमि
॥७८॥ खित्ते एंताणंतं, हवेइ जिठं तु ववइरइ मत्तं ॥ इय सुहमह विञ्चारो, लि
हिं देविंदसूरीहिं ॥ ७९ ॥ इति षडशीतिकाख्यश्वतुर्थः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥
॥ ४ ॥ अथ शतकनामा पंचमः कर्मग्रंथः प्रारभ्यते ॥ नमिञ्च जिणं
धुव बंधो, दय सत्ता धाइ पुस्स परिञ्चता ॥ सेञ्चर चउह विवागा, वुहं
बंधविह सामी अ ॥ २ ॥ वस्स चउ तेञ्च कम्मा, गुरु लहु निमिणो वघाय

नय कृत्वा ॥ मित्र कसाया वरणा, विगधं ध्रुवबंधि सगचत्ता ॥१॥ तणु वंग्गा गिइ
 संघय, ए जाइ गइ खगइ पुबि जिणु सासं ॥ उज्जो आयव परघा, तसवीसा
 गोअ वेयणियं ॥ ३ ॥ हासाइ जुअल डुग वे, अ आज तेजतरी अधुव बंधो ॥
 भंग्गा अणाइ साई, अणतं संतुतरा चजरो ॥४ ॥ पढम बिआ धुव उदइसु, धु
 वबंधिसु तइअ वज्ज भंग्गतिगं ॥ मिहंमि तिन्नि भंग्गा, इहावि अधुवा तुरिअ
 भंग्गा ॥५ ॥ निमिण थिर अथिर अगुरुअ, सुह असुहं तेअ कम्म चउवत्ता ॥
 नाणंतराय दंसण, मिहं धुव उदय सगवीसा ॥६ ॥ थिर सुन्नि अर विणु अडुव,
 बंधी मित्र विणु मोह ध्रुवबंधी ॥ निहोव घाय मीसं, सम्मं पण नवइ अधुव
 दया ॥ ७ ॥ तस वस्स वीस सगते, अ, कम्म धुव बंधि सेस वेय तिगं ॥ आगिइ
 तिग वेअणिअं, इ जुअल सग उरल सास चऊ ॥८ ॥ खगई तिरि डुग नीअं,
 धुव सत्ता सम्ममी स मणुअ डुगं ॥ विजधिकार जिणान, हारस गुच्चा अधुवस

ता ॥१॥ पढम तिगुणेषु मिहं, निअमा अजयाइ अठ गे नऊं ॥ सासाणे ख
 लु सम्मं, सत्तं मिहाइ दसगेवा ॥२०॥ सासणें मीसेसु धुवं, मीसं मिहाइ नव
 सु नयणाए ॥ आइ डुग अण नियमा, नइआ मीसाइ नवगम्मि ॥२१॥ आ
 हार सत्तगं वा, सव गुणे वि ति गुणे विणा तिहं ॥ नो नय संते मिहो, अंत
 सुहुत्तं नवे तिहं ॥२१॥ केवल खुअला वरणा, पण निहा बारसाइम कसाया
 ॥ मिहंति सव घाई, चउ नाण ति दंसणा वरणा ॥२३॥ संजलण नो कसाया,
 विगधं इअ देस घाइअ अघाइ ॥ पतेअ तणु ठाऊ, तस वीसा गोअ डुग व
 णा ॥२४॥ सुर नर तिगुच्च सायं, तस दस तणु वंग वइर चउरंसं ॥ परघासग
 तिरिआऊ, वसु चउ पाणेंदि सुभखगइ ॥२५॥ बायाल पुसु पगइ, अपढम
 संवाण खगइ संघयणा ॥ तिरि डुग असाय नीडि, वघाय इग विगल निरय
 तिगं ॥२६॥ थावर दस वन्न चउ, क्क घाय पणयाल सहिअ बासीई ॥ पाव पय

डिति दोसु वि, वसाइगहा सुहा असुहा ॥२७॥ नाम ध्रुव बंधि नवगं, दंसण
 पण नाण विगधपरघायं ॥ नय कुठ मिठ सासं, जिण गुण तीसा अपरियत्ता
 ॥२८॥ तणु अठ वेअ इ सुअल, कसाय उज्जेअ गोय डग निदा ॥ तस वीसा
 न परित्ता, खित्तविवागाणुपुवीत्ति ॥ २९ ॥ घणघाइ इ गोअ जिणा, तसिअर
 तिगसुन्नग डन्नग चउ सासं ॥ जाइ तिग जिअ विवागा, आऊ चउरो भव वि
 वागा ॥ ३० ॥ नाम ध्रुवोदय चउ तणु, वघाय साहारणियजोअतिगं ॥ पु
 गल विवागि बंधो, पयइ ठिइ रस पएससि ॥ ३१ ॥ मूल पयडीण अड स,
 त वेग बंधेसु तिन्नि भूगारा ॥ अप्पतरा तिअ चउरो, अवठिअ नहु अवत
 वी ॥३२॥ एगादहिगे नूत्ते, एगाई ऊणगम्मि अप्पतरो ॥ तम्मत्तो अवठिय
 ते, पढ्मे समए अवत्तवी ॥३३॥ नव ठ चऊदंसे डड, ति इ मोहे इ इगवीस
 सत्तरस ॥ तेरस नव पण चउ ति इ, इक्को नव अठ दस इन्नि ॥३४ ॥ ति पण

त्व अठ नवहिया, वीसा तीसगतीस इग नामे ॥ ठस्सग अठ तिबंधो, सेसे
 सु ठाणमिक्किं ॥१५॥ वीसयर कोडि कोडी, नामे गोए य सत्तरी मोहे ॥ ती
 सयर चउसु उदही, निरय सुराउमि तितीसा ॥१६॥ सुत्तूअ कसाय छिइ, बार
 सुहुत्ता जहन्न वेयणिए ॥ अठ ठ नाम गोए, सु सेसएसु सुहुत्तं तो ॥१७॥ वि
 रघा वरण असाए, तीसं अठार सुहुम विगल तिगे ॥ पढमा गिइ संघयणे, द
 स इसु चरिमेसु इग बुढी ॥१८॥ चालीस कसाएसु, मिउ लंहु निधुण्ह सुरहि
 सिय महुरे ॥ दसदो सह समहिया, ते हलिवं बिलाईणं ॥१९॥ दस सुह विह
 गइ उच्चै, सुरइग धिर बक्क पुरिस रइ हासे ॥ मिहे सत्तरि मणु इग, इढी सा
 एसु पसरस ॥२०॥ त्रय कुह अरइ सोए, विउवि तिरि उरल निरय इग नीए ॥
 तेअ पण अधिर बक्के, तस चउ थावर इग पणिदि ॥ ३१ ॥ नपु कुखगइ सा
 सचउ, उरु करकडरुक सीय इगगंधी ॥ वीसंकोडा कोडी, एवइ आबाह वाससया

॥३९॥ गुरु कोडि अंतो, तिढाहाराण निन्न सुह बाहा ॥ लहु विइ सं
 ख गुपूणा, नर तिरियाणाउ पद्ध तिगं ॥३३॥ इग विगल पुष कोडी, पलिया
 संखंस आउ चउ अमणा ॥ निरुवक्कमण ठमासो, अबाह सेसाण भवंतंसो ॥
 ॥३४॥ लहु तिइ बंधो संजल, ए लोह पण विग्घ नाण दंसेसु ॥ निन्न सुहुत्तं
 तेअ, ठ जसुच्चै बारसय साए ॥३५॥ दो इग मासो पस्को, संजलण तिगे पुम
 ठ वरिसाणि ॥ सेसाणुक्कोसाउ, मिठत्तछिइ ए जलंधं ॥३६॥ अय सुक्कोसो गिं
 दिसु, पलियाऽसंखं सहीण लहु बंधो ॥ कमसो पणवीसाए, पन्नासय सहस
 संगुणिउ ॥३७॥ विगल असन्निसु जिठो, कणिठउ पद्धसंख चागूणो ॥ सुर नि
 रयाउ समादस, सहस्स सेसाउ खुद्द नवं ॥३८॥ सवाणवि लहु बंधे, निन्न सु
 हु अ बाह आउ जिठेवि ॥ केइ सुराउ समजिण, मंत सुहु विति आहारं ॥
 ॥३९॥ सत्तरस समहिआ किर, इ गाणु पाणंमि हुंति खुद्दजवा ॥ सगतीस स

य तिरुत्तर, पाणू पुण इग्ग सुहुत्तंमि ॥४७॥ पणसठि सहस पण सय, ठत्तीसा
 इग सुहुत्त खुद्दन्नवा ॥ आवलियाणं दोसय, ठप्पन्ना एग खुद्दन्नवे ॥ ४१ ॥ अ
 विय सम्मो तिहं, आहार इगा मराड अपमत्तो ॥ मिह्हादिठी बंधइ, जिठ
 ठिइ सेस पयडीणं ॥४२॥ विगल सुहुमाजग तिगं, तिरि मणुयाऽसुर विजवि नि
 रय इगं ॥ एग्गिदि थावरा यव, आईसाणा सुरुक्कोसं ॥ ४३ ॥ तिरिजल इगु
 जोच्चं, विवठ सुरनिरय सेसचल गइआ ॥ आहार जिण मपुवो, नियहि संज
 लण पुरिस लहू ॥४४॥ सायजसु चावरणा, विग्घं सुहुमो विजवि ठ असन्नि ॥
 सन्निविआ न बायरं, पक्केग्गिदीडि सेसाणं ॥४५॥ उक्कोस जहूसीयर, नंगासा
 इ अणाइ धुव अधुवा ॥ चउहा सग अजहन्ना, सेसतिगे आउ चउसु इहा
 ॥४६॥ चउन्नेव अजहन्तो, संजलणा वरण नवग विग्घाणं ॥ सेस तिगिसाइ
 अधुवो, तह चउहा सेस पयडीणं ॥ ४७ ॥ साणाइ अपुवंतो, अयरंतो कोडि

कोडित नहिगो ॥ बंधो नहु हीणो नय, मिढे नवियरसन्निमि ॥४७॥ जइ लहु
 बंधो बायर, पक असंख गुण सुहुम पकहिगो ॥ एसि अपकाण लहु, सुहुमे
 अर अपक पक गुरु ॥४८॥ लहु बिअ पक अपको, अपकि अर बिअ गुरु
 अहिगो एवं ॥ ति चउ असन्निमु नवरं, संख गुणा बिअ अमण पके ॥५०॥
 तो जइ जिठो बंधो, संख गुणो देस विरय हस्सिअरो ॥ सम्म चउ सन्नि
 चउरो, विइ बंधाणु कम संखगुणा ॥५१॥ सवाणवि जिठठिइ, असुहा
 जं साइ संकिलेसेणं ॥ इअरावि सोहिउ पुण, सुतं नर अमर तिरिअउ
 ॥५२॥ सुहुम निगोआइ खण, णजोग बायरपविगल अमणमणा ॥ अपक लहु
 पढम ड गुरु, पजहस्सि अरो असंखगुणो ॥५३॥ असमत तमुक्कोसो,
 पक जहनिअर एव विइ ठाणा ॥ अपजेयर संख गुणा, परमपज बिए
 असंख गुणा ॥५४॥ पइखिण मसंख गुणविरि, य अपक ठिइ असंख

कर्म०
॥६९॥

लोग समा ॥ अश्वसाया अहिया, सत्तसु आउसु असंख गुणा ॥ ५५ ॥
अथोक्छंस्थित्यंतरबंधमाह ॥ तिरि निरय त्रिजोयाणं, नरभवञ्जुअ सच
उपह्व तेसठं ॥ थावर चउ इग विगला, यवेसु पणसीइ सय मयरा ॥ ५६ ॥
अपढम संघयणा गिइ, खगई अण मिह्व डमग थीण तिगं ॥ निअ नपु इह्वि
इतीसं, पणिदि सुअबंध विइ परमा ॥५७॥ विजयाइसु गेविके, तमाइ दहि
सय इतीस तेसठं ॥ पणसीइ सयय बंधो, पह्वतिगं सुर विउवि डुगे ॥ ५८ ॥
समया दसंख काळं, तिरि डुग नीएसु आउ अंत सुहू ॥ उरलि असंख पर
हा, साय ठिइ पुष कोडूणा ॥ ५९ ॥ जलहि सयं पणसीयं, परचुस्सासे पणिदि
तस चउगे ॥ बत्तीसं सुह विहगइ, पुम सुमग त्रियुच्च चउरंसे ॥६०॥ असुहख
गइ जाइ आगिइ, संघयणा हारनिरयुजो य डुगं ॥ थिर सुम जस थावर द
स, नप्र इन्ही डु सुअल मसायं ॥६१॥ समयादंत सुदत्तं, मणु डुग जिण वइर

अथ ५

॥६९॥

उरलुवगेसु ॥ तिली सयरा परमो, अंत सुहू लडु विआउ जिणा ॥ ६२ ॥ इति
 स्थितिवंधः ॥ तिवो असुह सुहाणं, संकेत विसोहि उविवज्जयउ ॥ मंदरसोगि
 रि महिरय, जल रेहा सरिस कसाएहि ॥ ६३ ॥ चउ वाणाइ असुहो, सुहन्नहा
 विग्घ देस आवरणा ॥ पुम संजलणिग डु ति चउ, वाण रसा सेस डुगमाइ ॥
 ॥ ६४ ॥ निबुइवुरसो सहजो, डु ति चउ भाग कढि इक्क भागं तो ॥ इग वाणा
 ई असुहो, असुहाण सुहो सुहाणं तु ॥ ६५ ॥ तिक्किमिग थावरायव, सुर मिन्ना
 विगल सुहुम निरय तिगं ॥ तिरि मणुआउ तिरिनरा, तिरि डुग वेवठ सुर
 निरया ॥ ६६ ॥ विउवि सुराहारग डुग, सुख गइ वन्न चउ तेय जिण सायं ॥ स
 मचउ परघा तस दस, पणिंदि सासु च खवगाउ ॥ ६७ ॥ तमतमगा उज्जीयं,
 सम्मसुरा मणुय उरल डुग वइरं ॥ अपमत्तो अमराउ, चउ गइ मिन्नाउ से
 साणं ॥ ६८ ॥ थीण तिगं अण मिठं, मंद रसं संजमुम्सुहो मिन्ना ॥ बिय तिय

कसाय अविश्य, देस पमत्तो अरइ सोए॥६॥ अपमाइ हारग डुगं, छनिह असु
 वन्न हासरइ कुब्बा ॥ अय सुवघाय मधुवो, अनियद्धि पुरिस संजलणे ॥ ७० ॥
 विग्घावरणे सुहुमो, मणु तिरिआ सुहुम विगल तिग आउ ॥ वेउवि ठक्क म
 मरा, निरया उज्जोय उरल डुगं ॥७१॥ तिरि डुग नियं तमतमा, जिण मविर
 य निरय विणिग थावरयं ॥ आसुहु मायवसम्मो, वसाय थिर सुह जसा सियरा
 ॥७२॥ तस वन्न तेअचउ मणु, खगइ डुग परिंदि सास परधुच्चं ॥ संघयणा नि
 इ नपु थी, सुन्नगि अरति मिह चउ गइआ ॥७३॥ चउ तेअ वन्न वेअणि, अ
 नाम पुक्कोस सेस धुवबंधी ॥ धाईणं अजहन्नो, गोए डुविहो इमो चउहा ॥७४॥
 सेसंमि डुहा इग डुग, णुथाइ जा अन्नवणंत गुणिआणू ॥ खंधा उरलो चि अ
 व, गगणउ तहअगहणतिरिया ॥७५॥ एमेव विउवाहा, र तेअ चासाणु पाए
 मण कम्मे ॥ सुहुमा कमावगाहो, ऊणूणं गुल असंखंसो ॥७६॥ इक्किक्क हिया

सिन्धा, एतंसो अंतरेसु अगगहणा ॥ सव्व जहनुचिया, नियणंतं साहिआ
 जिआ ॥७७॥ अंतिम चउ फास डुगं, ध पंचवन्नरस कम्म खंध दणं ॥ सब जि
 यणंत गुण रस, अपुञ्जुत्त मणंतय पएसं ॥७८॥ एग पएसो गाढं, निअ सब
 पएसन्नं गहेइ जिउ ॥ धोवो आउ तदंसो, नामे गोए समो अहिउ ॥७९॥ वि
 ग्यावरणे मोहे, सवोचरि वेअणीइ जेण्ये ॥ तस्स कुडतं न हवइ, छिई विसे
 सेण सेसाणं ॥८०॥ निअ जाइ लध दलिआ, एतंसो होई सब घाईणं ॥ बझं
 तीण विअज्जइ, सेसं सेसाण पइ समयं ॥८१॥ सम्मदेस सब विरइ, उअण
 विसंजोअ दंस खवगेअ ॥ मोह सम संत खवगे, खीण सजोगि अर गुण से
 ढी ॥८२॥ गुणसेढी दल रयणा, एसमयमुदया दंसख गुणणाए ॥ एअगुणा
 पुण कमसो, असंख गुण निज्जरा जीवा ॥८३॥ पलिआ संखंसमुहु, सासण
 इअर गुण अंतरंहस्सं ॥ गुरु मिळि वे बसठी, इयरगुणे पुग्गलधंतो ॥८४॥ उ

शर अर्ध स्वित्तं, पलिय तिहा समय वाससय समए ॥ केसव हारो दीवो, इ
 हि आउ तसाय परिमाणं ॥७५॥ दवे स्वित्ते काले, नावे चउह इह बायरो सु
 दुमो ॥ होइ अणंतुस्सप्पिणि, परिमाणो पुग्गल परद्धो ॥ ७६ ॥ उरलाइ सत्त
 गेणं, एग जिउ मुअइ फुसिअ सब अणु ॥ जित्तिअ कालिसथूलो, दवे सुहुमो
 सगन्नयरा ॥ ७७ ॥ लोण परसो सप्पिणि, समयअणुभाग बंध वाणा य ॥
 जह तह कम मरणेणं, पुछा स्वित्ताइं थूलियरा ॥७८॥ अप्पयर पयडिबंधी, उ
 क्कड जोगी अ सन्नि पक्कतो ॥ कुणइ पर सुक्कोसं, जहन्नयं तस्स वच्चासे ॥७९॥
 मिह अजय चउ आउ, वि ति गुण विणुमोहि सत्त मिहाइ ॥ बण्हं सतरस सु
 दुमो, अजया देसा वि ति कसाए ॥८०॥ पण अनिअट्टि सुखगई, नराउ सुर
 सुभग तिग विडवि डुगं ॥ सम चउरंस मसायं, वइरं मिहो व सम्मोवा ॥८१ ॥
 निहा पयजा उ सुअल, भय कुवा तिह संमगो सुजई ॥ आहार डुगं सेसा,

उक्तेस पएस गामिहो ॥ए५॥ सुसुणी इनि असन्नी, नरय तिग सुराज सुर वि
 उवि डुगं ॥ सम्मो जिणो जह्मं, सुहुम निगोआइ खणि सेसा ॥ ए३ ॥ दंसण
 बग नय कुन्हा, वि ति तुरिअ कसाय विग्घ नाणाणं ॥ मूल बगेणुक्कोसो, चउ
 ह इहा सेसि सबहं ॥ ए४ ॥ सेढि असंखिज्जंसे, जोगठाणाण पयडि विइ ने
 आ ॥ विइ बंधस्सवसाया, अपुनागवाण असंख गुणा ॥ ए५ ॥ ततो कम्म पएस,
 अणंत गुणिया तउ रसहेया ॥ जोगा पयडि पएसं, विइ अपुनागं कसाया
 उ ॥ ए६ ॥ चउदस रज्जू लोको, बुद्धिक्कउ सत्त रज्जू माण घणो ॥ तद्वहिग पए
 सा, सेढी पयरो अ तवंगो ॥ ए७ ॥ अण दंस नपुंसि ढी, वेअ ढक्कं च पुरिस
 वेअं च ॥ दोदो एगं तिरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥ ए८ ॥ अण मिह मीस
 सम्मं, तिअउ इग विगल धीण तिगु जोअं ॥ तिरि निरय थावर डुगं, साहा
 रायव अड नपुंसि ढी ॥ ए९ ॥ बग पुम संजलणा दो, निहा विग्घा वरण खए

कर्म०
॥७२॥

नाणी॥ देविदसूरि विद्विञ्चं, सयगमिणं आय सरण्ठा ॥२००॥ इति शतकना
मा पंचमः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ५ ॥
॥ अथ श्री सप्ततिकानामा षष्ठः कर्मग्रंथः प्रारभ्यते॥ सिद्धपण्डि महबं, बंधोद
य संत पयडि वाणाणं ॥ बुढं सुण संखेवं, नीसंदं दिठि वायस्स ॥२॥ कइ बंधं
तो वेअइ, कइ कइ वासंत पयडि वाणाणि ॥ मूळुत्तर पगईसु, भंग विगणा सु
णेअवा ॥१॥ अठ विह सत्त बब्बं, धएसु अठे च उदय संतंसा ॥ एग विहे ति
विगणा, एग विगणा अबंधंमि ॥३॥ सत्तठ बंध अहुद, यसंत तेरस सुजीवि वा
णेसु ॥ एगंमि पंच भंगा, दो भंगा हुंति केवलिणो ॥४॥ अठसु एग विगणो, ठ
स्सु विगुण सन्निएसु उ विगणा ॥ पत्तेयं पत्तेयं, बंधोदय संत कम्माणं ॥ ५ ॥
पंच नव झसि अठा, वीसा चजरो तहेव बायाला ॥ झसिय पंच य जणिया, प
यडीउ आणुपुवीए ॥६॥ बंधोदय संतंसा, नाणावरणं तराइए पंच ॥ बंधो चरमे

वि उदय, संतंसा हुंति पंचेवा॥७॥बंधस्स य संतस्स य, पगइ छाणाइ तिन्नि तु
 ह्वाइं ॥ उदयछाणाइ छवे, चउ पणग दंसणा वरणे ॥ ७ ॥ बीयावरणे नव बं, ध
 एसु चउ पंच उदय नव संता ॥ ठच्चउ बंधेचेवं, चउ बंधुदये उ लंसाय ॥ ८ ॥
 उवरय बंधे चउ पण, नवंस चउ रुदय ठच्च उंसंता ॥ वेयणियाउ अ गोए, वि
 भक्क मोहं परं बुहं ॥ १० ॥ गोअम्मि सत्त भंगा, अठय भंगा हवंति वेयणिए
 ॥ पण नव नव पण भंगा, आउ चउक्केवि कमसोउ ॥ ११ ॥ बावीस इक्कवीसा,
 सत्तरसं तेरसे व नव पंच ॥ चउ तिग डुगं च इक्कं, बंधछाणाणि मोहस्स ॥ १२ ॥
 एगं च दोव चउरो, एत्तो एगाहिआ दसुक्कोसा ॥ उहेण मोहणिके, उदए वा
 णाणि नव हुंति ॥ १३ ॥ अठय सत्तय ठच्चउ, तिग डुगएगाहिआ भवे वीसा ॥
 तेरस बारिक्कारस, इत्तो पंचाइ एगुणा ॥ १४ ॥ संतस्स पयडिठाणा, णि ताणि
 मोहस्स हुंति पन्नरस ॥ बंधोदय संते पुण, भंगा विगण्णे बहू जाण ॥ १५ ॥ ठब्बा

वीसे चउ इग, वीसे सत्तरस तेरसे दोदो ॥ नव बंधगे वि छणित, इक्किअ अउ
परं भंगा ॥२६॥ दस बावीसे नव इग, वीसे सत्ताइ उदय कम्मंसा ॥ ताइअ
नव सत्तरसे, तेरं पंचाइ अठेव ॥२७॥ चत्तारि आइ नव बंध, एसु उक्कोस स
त्त सुदयंसा ॥ पंच विह बंधगे पुण, उदयो इस्सहं सुणेअवो ॥२८॥ इत्तो चउ वं
धाइ, इक्किअदया ह्वंति सवे वि ॥ बंधो चरमे वि तहा, उदया भावे विवाहुजा
॥२९॥ इक्कग ठक्किआस, दस सत्त चउक्क इक्कगं चेव ॥ एए चउवीस गया, वा
र इगिक्कम्मि इक्कारा ॥३०॥ नव तेसीइ सएहिं, उदय विगपेहि मोहिआ जी
वा ॥ अउणुत्तरि सीआला, पयविंद सएहि विनेआ ॥३१॥ नव पंचाण उस
ए, उदय विगपेहि मोहिआ जीवा ॥ अउणत्तरि एउत्तरि, पय विंद सएहि वि
नेआ ॥३२॥ तिनेवय बावीसे, इगवीसे अठवीस सत्तरसे ॥ उअवे तेर नव वं,
धएसु पंचेव वाणाणि ॥३३॥ पंचविह चउविहेसु, उ ठक्क सेसेसु जाण पंचेव ॥

पत्तेअं पत्तेअं, चत्तारि अ बंधु बुद्धेए ॥१४॥ दस नव पन्नरसाई, बंधोदय संत
 पयडि वाणाणि ॥ न्णणिआणि मोहणिके, इत्तो नामं परं बुढं ॥१५॥ तेवीस प
 न्नवीसा, ठवीसा अठवीस गुणतीसा ॥ तीसेगतीस मेगं, बंध छाणाणि नामस्स
 ॥१६॥ चउ पणवीसा सोलस, नव बाण उई सयाय अडयाला ॥ एयालुत्तरा
 या, लसयाइक्किक्कि बंध विही ॥१७॥ वीसिगवीसा चउवी, स गाउ एगाहियाय
 इगतीसा ॥ उदय छाणाणि भवे, नव अठय दुंति नामस्स ॥१८॥ इक्क बयालि
 क्कारस, तितीसा ठस्सयाणि तितीसा ॥ बारस सत्तरससया, एहि गाणि विपं
 च सीईहिं ॥१९॥ अउणत्ती सिक्कारस, सयाणि हिय सतर पंच सठीहिं ॥ इक्कि
 क्क गंच वीसा, दठुदयंतेसु उदयविही ॥२०॥ ति उनउई गुण नउई, अडसी ठ
 लसी असीइ गुणसीई ॥ अठय ठप्पन्नत्तरि, नव अठय नाम संताणि ॥२१॥
 अठय बारस बारस, बंधोदय संत पयडि वाणाणि ॥ उहेणाएसेणय, जठ ज

हा संज्ञवं विज्ञजे ॥३१॥ नव पणगोदय संता, तेवीसे पखवीस लवीसे ॥ अठ
 चउरठवीसे, नव सत्ति गुण तीस तीसंमि ॥३३॥ एगेगमेगतीसे, एगे एगुदय
 अठ संतंमि ॥ उवरय बंधो दस दस, वेयग संतंमि वाणाणि ॥३४॥ तिविगण
 पगइ वाणे, हिं जीव गुणसन्निएसु वाणेषु ॥ भंगापठ जियवा, जळ जहा संज्ञ
 वो भवइ ॥३५॥ तेरस सुजीव संखे, वएसु नाणंतराय तिविगण्यो ॥ इक्कंमिति
 इ विगण्यो, करणं पइ इळ अविगण्यो ॥३६॥ तेरे नव चउ पणगं, नव सत्ते ग
 भिम भंगमिक्कारा ॥ वेअणिअआउ गोए, विभज्जमोहं परं बुळं ॥३७॥ पज्जत
 ग सन्निअरे, अठ चउक्कं च वेयणिय भंगा ॥ सत्तय तिगं च गोए, पत्तेअं जीव
 वाणेषु ॥३८॥ पज्जता पज्जतग, समणा पज्जत अमण सेसेसु ॥ अठवीसं दस
 गं, नवगं पणगं च आउसस ॥३९॥ अठसु पंचसु एगे, एग इगं दसय मोह
 बंध गए ॥ तिग चउ नव उदय गए, तिग तिग पन्नरस संतंमि ॥४०॥ पण इ

ग पणं पण चउ, पणं पणगा हवंति तिसेव ॥ पण ढपणं ढह, पणं
 अठ ठ दसगंति ॥४२॥ सत्तेव अपज्जता, सामी सुहुमा य बायरा चेव ॥ विणि
 लिदिआउ तिन्निउ, तह्य असन्नी अ सन्नी अ ॥४३॥ नाएंतराय ति विहम,
 वि दससु दो हुंति दोसु ठाणेसु ॥ मिवा साणे बीए, नव चउ पण नवय संतं
 सा ॥४३॥ मिरसाइ नियडीउ, ढ चउपण नवय संत कम्मंसा ॥ चउ बंध तिगे
 चउ पण, नवंसु इसु सुअल बस्संता ॥४४॥ उवसंते चउपण नव, खीणे चउ
 रुदय ढअ चउसता ॥ वेअणिअ आउ गोए, विज्ज मोहं परं बुहं ॥४५॥ च
 उ वस्सु इन्नि सत्तसु, एगे चउ गुणिसु वेअणि अ भंगा ॥ गोए पण चउ दो
 तिसु, एगठसु इन्नि इक्कंमि ॥४६॥ अठठाहिगवीसा, सोलस वीसं च वारस ढ
 दोसु ॥ दो चउसु तीसु इक्कं, मिवाइसु आउए भंगा ॥४७॥ गुणठाणगेसु अठ
 ग, इक्किकं मोह बंध वाणं तु ॥ पंचानिअहि गाणा, बंधोवरमो परं तत्तो ॥४८॥

सत्ताइ दसल मिठे, सासायण मीसए नवुक्कोसो ॥ ताई नव उअ विरई, देसे
पंचाइ अठेव ॥४९॥ विरए खडवसमिए, चउराई सत बच्च पुवंमि ॥ अनियडि बा
यरे पुण, इक्कोवडवेव उदयंसा ॥५०॥ एगं सुहुम सरागो, वेएइअ वेअगा न
वे सेसा ॥ नंगणं च पमाणं, पुवुद्विठेण नायवं ॥५१॥ इक्कग बडिक्कियारि, का
रसइक्कारसेव नव तिन्नि ॥ एए चउवीस गया, बारडुगं पंच इक्कमि ॥५२॥ बा
रस पणसठिसया, उदय विगण्णेहिं मोहिआ जीवा ॥ चुलसीई सत्तुत्तरि, पय
विंद सएहि विन्नेआ ॥५३॥ अठग चउ चउ चउ, ठगाय चउरो अ हुंति च
उवीसा ॥ मिन्नाइअ पुवंता, बारस पणगंच अनिअट्टी ॥५४॥ अठठीवत्तीसं,
वत्तीसं सठि मेव वावन्ना ॥ चोआल दोसुवीसा, मिन्नामाईसु सामन्नं ॥५५॥ जो
गोवत्तंग लेसा, इएहिं गुणिआ हवंति कायवा ॥ जे जळ गुणठाणे, हवंति ते
तळ गुणकारा ॥५६॥ तिन्नेगे एगेगं, तिगमीसे पंच चउसु तिग पुंवे ॥ इक्कार

वायरंमिड, सुदुमो चउ तिमि उवसंते ॥ ५५ ॥ बन्नव ठक्क तिग सत, डुगं डुगं
 तिग डुगं तिअठ चउ ॥ डुग ठ चउ डुग पण चउ, डुग चउ चउ चउ पणग एग च
 उ ॥ ५६ ॥ एगेग मठ इगेग, मठठ ठउमठ केवल जिणणं ॥ एगं चउ एगं च
 उ, अठ चउ डुठक्क सुदयंसा ॥ ५७ ॥ चउ पणवीसा सोलस, नव चत्तालासयाय
 वाणउइ ॥ वत्तीसुत्तर बाया, लसया मिठस्स बंध विही ॥ ६० ॥ अठसया चउ
 सठी, वत्तीस सयाइ सासणे नेअ ॥ अठावीसाईसु, सवाणठाहि बन्नउइ
 ॥ ६१ ॥ इग चत्ति गार वत्ती, ठसय इगतिसिगार नव नउइ ॥ सत्तरि गंसि गुत्ति
 स, चउदइगार चउसठि मिठदया ॥ ६२ ॥ वत्तीस डुन्नि अठय, बासीइ सयाय
 पंच नव उदया ॥ वारहिअ तेवीसं, बावन्निक्कारससयाय ॥ ६३ ॥ दो ठक्क ठ च
 उक्कं, पण नव इक्कार ठक्कं उदया ॥ नेरइअइसु सत्ता, ति पंच इक्कारस चउक्कं
 ॥ ६४ ॥ इग विगलिंदिअ सगले, पण पंचय अठ बंध ठाणणं ॥ पण ठक्किक्कारुद

सत्ताइ दसउ मिठे, सासायण मीसए नबुक्कोसो ॥ ठाई नव उअ विरई, देसे
 पंचाइ अठेव ॥४९॥ विरए खनवसमिए, चउराई सत्त ठअ पुवंमि ॥ अनियहि बा
 थरे पुण, इक्कोवडवेव उदथंसा ॥५०॥ एगं सुहुम सरागो, वेएइअ वेअगा म
 वे सेसा ॥ मंगणं च पमाणं, पुवुदिठेण नायवं ॥५१॥ इक्कग ठडिक्कियारि, का
 रसइक्कारसेव नव तिन्नि ॥ एए चउवीस गया, बारडुगं पंच इक्कमि ॥५२॥ वा
 रस पणसठिसया, उदय विगण्णेहिं मोहिअ जीवा ॥ चुजसीई सत्तुत्तरि, पय
 विंद सएहि विन्नेअ ॥५३॥ अठग चउ चउ चउर, ठगाय चउरो अ हुंति च
 उवीसा ॥ मिठाइअ पुवंता, बारस पणगंच अनिअही ॥५४॥ अठठीवत्तीसं,
 वत्तीसं सठि मेव बावन्ना ॥ चोअज दोसुवीसा, मिठामाईसु सामन्नं ॥५५॥ जो
 गोवउग लेसा, इएहिं गुणिअ हवंति कायवा ॥ जे जउ गुणठाणे, हवंति ते
 तउ गुणकारा ॥५६॥ तिन्नेगे एगेगं, तिगमीसे पंच चउसु तिग पुवे ॥ इक्कार

वायरंमिड, सुहुमो चउ तिननि उवसंते ॥ ५७ ॥ बन्नव बक्क तिग सत, डुगं डुगं
 तिग डुगं तिअठ चउ ॥ डुग ठ चउ डुग पण चउ, डुग चउ चउ पणण एण च
 उ ॥ ५७ ॥ एगेग मठ इगेग, मठठ उउमठ केवल जिणणं ॥ एगं चउ एगं च
 उ, अठ चउ डुवक्क सुदयंसा ॥ ५८ ॥ चउ पणवीसा सोलस, नव चत्तालासयाय
 वाणउइ ॥ वत्तीसुत्तर वाया, लसया मिहस्स बंध विही ॥ ६० ॥ अठसया चउ
 सठी, वत्तीस सयाइ सासणे भेअ ॥ अठ्ठावीसाइसु, सवाणठाहि बन्नउइ
 ॥ ६२ ॥ इग चत्ति गार वत्ती, बसय इगतिसिगार नव नउइ ॥ सत्तरि गंसि युत्ति
 स, चउइइगार चउसठ्ठि मिठदया ॥ ६५ ॥ वत्तीस डुन्नि अठ्ठय, वासीइ सयाय
 पंच नव उदया ॥ बारहिअ तेवीसं, वावन्निक्कारससयाय ॥ ६३ ॥ दो बक्क ठ च
 उक्कं, पण नव इक्कार बक्कं उदया ॥ नेरइअइसु सत्ता, ति पंच इक्कारस चउक्कं
 ॥ ६४ ॥ इग विगलिंदिअ सगले, पण पंचय अठ बंध वाणणं ॥ पण बक्किक्कारुद

या, पण पण बारसय संताणि ॥ ६५ ॥ इय कम्मपणइ ताणा, णि सुट्ठु बंधुदय संत
 कम्माणं ॥ गइअएहि अठसु, चउपयारेण नेआणि ॥ ६६ ॥ गइ इंदिए अ काए,
 जोए वेए कसाय नाणे अ ॥ संयम दंसण लेसा, जव संमे सन्नि आहारे ॥ ६७ ॥
 संतपथं परूवणया, दध पमाणं च खित्त कुसणा य ॥ कालंतरं च जावो, अप्पा
 बहुयं च दाराइ ॥ ६८ ॥ उदयस्सुदीरणए, सामित्तउ नविक्कइ विसेसो ॥ सुत्तणय
 इगयालं, सेसाणं सब पयडीणं ॥ ६९ ॥ नाणंतराय दसगं, दंसण नव वेयणिक्क
 मिहत्तं ॥ सम्मत्त लोभ वेअ, उअणि नव नाम उच्चं च ॥ ७० ॥ मणुयगइ जा
 इ तस वा, यरं च पक्कत सुनग आइक्कं ॥ जसकित्ती तिह्यरं, नामस्स हवंति
 नव एया ॥ ७१ ॥ तिह्यरा हारग विर, हिअउ अश्लेइ सब पयडीउ ॥ मिहत्तवे
 अगोसा, साणो गुणवीस सेसाउ ॥ ७२ ॥ बायाल सेस मीसो, अविरय सम्मो
 तिअाल परिसेसा ॥ तेवन्न देस विरउ, विरउ सगवन्न सेसाउ ॥ ७३ ॥ इय स

ठि मपमत्तो, बंधइ देवाउ अस्सइअरोवि ॥ अठावन्न मपुवो, लपन्नं वावि ठ
 वीसं ॥१५॥ बावीसा एगूणं, बंधइ अठारसंत अनिअही ॥ सत्तर सुहुम स
 रागो, सायममोहो सजोगिन्ती ॥१५॥ एसोल बंध सामि, त उहु गइ आइए
 सुवि तदेव ॥ उहा उसा दिज्जइ, जठ जहा पयडि सप्पावो ॥१६॥ तिहयर देव
 निरिआ, उअंच तिसु तिसु गर्इसु बोधबंधं ॥ अवसेसा पयडीउ, हवंति सवासु
 विगर्इसु ॥१७॥ पढम कसाय चउकं, दंसण तिग सत्तगा वि उवसंता ॥ अवि
 रय सम्मत्ताउ, जाव नियठिन्ति नायवा ॥ १७ ॥ सत्तठ नवय पनरस, सोलस
 अठारसे व इगुवीसा ॥ एगाहि इ चउवीसा, पणवीसा बायरे जाण ॥ १८ ॥
 सत्तावीसं सुहुमे, अठावीसं च मोहपयडीउ ॥ उवसंत वीअरागे, उवसंता हुं
 ति नायवा ॥१९॥ पढम कसाय चउकं, इत्तो मिहत्त मीस सम्मत्तं ॥ अविरय
 सम्मे देसे, पमत्ति अपमत्ति खीयंति ॥२०॥ अनिअहि बायरेथी, ए गिधि ति

ग निरय तिरिञ्च नामाउ ॥ संखिज्ज इमे सेसे, तपाउ गाउ खीधंति ॥ ८२ ॥ इ
तो हणइ कसाय, ठगंपि पत्ता नपुंसगं इढी ॥ तो नोकसाय उकं, बुशइ संज
जणकोदम्मि ॥ ८३ ॥ पुरिसं कोहे कोहं, माणे माणं च बुहइ मायाए ॥ मायं
च बुहइ जोहे, जोहं सुहुमंपि तो हणइ ॥ ८४ ॥ खीण कसाय इ चरिमे, निदं प
यलं च हिणइ उजमढां ॥ आवरणमंतराए, उजमढो चरम समयमि ॥ ८५ ॥
देवगइ सहगयाउ, इ चरिम समयम्मि चविञ्च खीञ्चंति ॥ सविवाणे अर ना
मा, नीञ्चा गोअंपि तढेव ॥ ८६ ॥ अन्नयर वेअणिज्जं, मणुआउअ सुअगोअ
नवनामे ॥ वेएइ अजोगि जिणो, उक्कोस जहन्न भिक्कारे ॥ ८७ ॥ मणुअ गइ जा
इ तस वा, यरं च पज्जत सुन्नग आइज्जं ॥ जस किन्ती तिहयरं, नामस्स हवंति
नव एअ ॥ ८८ ॥ तच्चाणुपुवि सहिया, तेरस भव सिद्धिअस्स चरमंमि ॥ सं
तं सग सुक्कोसं, जहन्नयं वारस हवंति ॥ ८९ ॥ मणुअ गइ सहगयाउ, भव खि

त्त विवाग जिञ्च विवागान् ॥ वेञ्चणिञ्च अन्न रुद्धं, चरम समयंमि खीयंति
 ॥एण॥ अह सुइञ्च सयल जग सिंह, र मरुञ्च निरुवम सहाव सिधि सुहं ॥
 अनियण मवावाहं, तिरयणसारं अपुहवंति ॥ए२॥ डुरहिगम निञ्चण परम,
 त रुइर बहु भंग दिठि वायाउ ॥ अन्ना अपुसरिञ्चवा, बंधोदय संत कम्मा
 णं ॥ए५॥ जो जठ अपडिपुन्नो, अन्नो अप्पा गमेण बंधोति ॥ तं खमिऊण ब
 हुसुञ्चा, पूरेऊणं परिकहंतु ॥ ए३ ॥ गाहगं सयरीए, चंद महत्तर मयाणु
 सारीए ॥ टीगाइ नियमिञ्चाणं, एयूणा होइ नउईउ ॥ए४॥ ॥ इति श्री
 सप्ततिकानामा पठः कर्मग्रंथः समाप्तः ॥ ६ ॥ ॥ ६४ ॥
 अथ श्रीरत्नाकरसूरिकृतरत्नाकरपंचविंशिकाप्रारंभः॥ उपजातिब्दः॥ श्रेयः श्रि
 यां मंगलकैलिसद्व नरेण्डवैघ्नतांघ्रिपद्मा॥ सर्वज्ञ सर्वातिशय प्रधान चिरं जय
 ज्ञानकलानिधान ॥ २ ॥ जगत्रयाधार कृपावतार डुर्वारसंसारविकारवैद्य ॥

श्रीवीतराग त्वयि सुगन्धभावाधिज्ञ प्रभो विज्ञपयामि किञ्चित् ॥ ९ ॥ किं
 बाललीलाकलितो न बालः पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः ॥ तथा यथार्थं
 कथयामि नाथ निजाशयं सानुराशयस्तवाग्रे ॥३॥ दत्तं न दानं परिशीलितं च
 न शालि शीलं न तपोऽन्नित्तमम् ॥ शुभ्रो न भ्रान्तोऽप्यन्नवन्नवेऽस्मिन् विजो
 मया भ्रान्तमहो सुधैव ॥ ४ ॥ दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो छुष्टेन लोन्नाख्यम
 होरगेण ॥ अस्तोऽग्निमानाजगरेण मायाजालेन बद्धोऽस्मिन्कथं भजे त्वाम् ॥५॥
 कृतं मया सुत्र हितं न चेद् लोकैऽपि लोकेश सुखं न मेऽभूत् ॥ अस्मादृशां
 केवलमेव जन्म जिनेश जज्ञे भवपूरणाय ॥६॥ मन्ये मनो यन्न मनोऽदृष्टं त्व
 दास्यपीयूषमयूखलाभ्रात् ॥ द्रुतं महानंदरसं कठोरमस्मादृशां देव तदश्मतो
 ऽपि ॥७॥ त्वत्तः सुङ्घः प्रापमिदं मयाप्तं रत्नत्रयं त्रूरि भवभ्रमेण ॥ प्रमादनिष्ठा
 वशतो गतं तत् कस्याग्रतो नायक पूल्करोमि ॥८॥ वैराग्यरंगः परबंधनाय ध

मोंपदेशो जनरंजनाय ॥ वादाय विद्याध्ययनं च मेऽमृतं कियद्भुवे हास्यक
 रं स्वमीश ॥९॥ परापवादेन सुखं सदापं नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन ॥ चेतः परा
 पायविचिन्तनेन कृतं नविज्यामि कथं विभोऽहं ॥२०॥ विनंबितं यत्स्मरथस्मरा
 त्तिदशावशास्त्वं विपयांधलेन ॥ प्रकाशितं तन्नवतो द्वियैव सर्वज्ञ सर्वं स्वय
 मेव वेत्सि ॥२१॥ ध्वस्तोऽन्यमंत्रैः परमेष्ठिमंत्रः कुशास्त्रवाक्यैर्निहितागमोक्तिः
 ॥ कर्तुं वृथा कर्म कुदेवसंगादवांबि हे नाथ मतिभ्रमो मे ॥ २२ ॥ विमुच्य हृण
 लक्ष्यगतं भवंतं ध्याता मया मूढधिया हृदंतः ॥ कटाक्षवह्नोजगनीरनाञ्जिकटी
 तटीयाः सुदृशां विलासाः ॥ २३ ॥ लोलोत्क्षणावक्त्रनिरीक्षणेन यो मानसे राग
 लवो विलसः ॥ न शुभसिंशंतपयोधिमध्ये धौतोऽप्यंगात्तारक कारणं किम् २४
 अंगं न चंगं न गणो गुणानां न निर्मलः कोपि कलाविलासः ॥ स्फुरत्प्रधान प्र
 भुता च कापि तथाप्यहंकारकद्धिंतोऽहं ॥ २५ ॥ आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि

र्गतं वयो नो विपयान्निजापः ॥ यत्नश्च त्रैपज्यविधौ न धर्मे स्वामिन्महामोह
 विडम्बना मे ॥ २६ ॥ नास्मा न पुण्यं न भवो न पापं मया विटानां कटुगीरपी
 यं ॥ अधारि कर्णे त्वयि केवलाके परिरस्फुटे सत्यपि देव धिङ् माम् ॥ २७ ॥ न दे
 वपूजा न च पात्रपूजा न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः ॥ लब्ध्वापि मानुष्यमिदं
 समस्तं कृतं मयाऽरण्यविजापतुल्यम् ॥ २८ ॥ यत्रे मया सत्त्वपि कामधेनुकल्प
 द्युचितामणिषु स्पृहार्तिः ॥ न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि जिनेश मे पश्य विमूढ
 भ्रावं ॥ २९ ॥ सन्नोगलीला न च रोगकीला धनागमो नो निधनागमश्च ॥
 द्वारा न कारा नरकस्य चित्ते व्यचिंति नित्यं मयकाऽधमेन ॥ ३० ॥ स्थितं न सा
 धोर्बुद्धि साधुवृत्तात् परोपकारान्न यशोऽर्जितंच ॥ कृतं न तीर्थोद्धरणदि कृत्यं
 मया सुधा हारितमेव जन्म ॥ ३१ ॥ वैराग्यरंगो न गुरुद्वितेषु न दुर्जनानां
 वचनेषु शान्तिः ॥ नाऽध्यात्मलोको मम कोपि देव तार्यः कथंकारमयं भवा

धिः ॥ २२ ॥ पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्यमागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये ॥
 यदीदृशोहं मम तेन नष्टा भूतो भवन्नाविभवत्रयीश ॥ २३ ॥ किंवा मुधाऽहं ब
 हुया सुधाभुक्कूपूज्य त्वदग्रे चरितं स्वकीयं ॥ जलपामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप
 निरूपकत्वं कियदेतदत्र ॥ २४ ॥ शार्दूलविक्रडितं वंदः ॥ दीनो धार धुरंधर स्व
 दंपरो नास्ते मदन्यः कृपापात्रं नात्रजने जिनेश्वर तद्याज्येतां न यचि श्रियम् ॥
 किंत्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिवं श्रीरत्नाकरमंगलैकनिलयश्रेयस्करं
 प्रार्थये ॥ २५ ॥ इति श्रीबीतरागस्तोत्रं समाप्तम् ॥ इति श्रीरत्नाकरसूरिकृता
 रत्नाकरपंचविंशतिका समाप्ता ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

॥ अर्थ ॥ ज्ञान अने आनंद तेहिज स्वरूप ठे जेजुं, वली औदारिकादिक रूपयकी रहि त ठे, तथा रक्तक ठे अने सर्वथी उच्छृष्ट तेज ठे जेजुं एवा श्रीपरमेश्वर परमात्मने महारो नमस्कार हो ॥ १ ॥ ॥ जेना स्वरूपने ध्यान रूपिणी दृष्टियें करीने मन नी छुदिने धरता योगीश्वर देखे ठे, ते परमेश्वरने हुं सतुं हुं ॥ २ ॥ ॥ सर्व प्राणी चिदानंदस्वरूपाय, रूपातीताय तायिने ॥ परमज्योतिषे तस्मै, नमः श्रीपर मात्मने ॥ २ ॥ पश्यन्ति योगिनो यस्य, स्वरूपं ध्यानचक्षुषा ॥ दधाना म नसः शुद्धिं, तं स्तुवे परमेश्वरम् ॥ २ ॥ जन्तवः सुखमिबन्ति, नुः सुखं त विवे भवेत् ॥ तद्ध्यानात्तन्मनःशुद्ध्या कषायविजयेन सा ॥ ३ ॥ सखिद्विय मात्र सुखनी वांढा करे ठे, ते संपूर्ण सुख तो जीवने मोक्षमां ठे, ते मोक्षनी प्राप्ति आ नथी थाय ठे, अने ध्यान मननी छुद्धिथी थाय ठे, अने मनःछुद्धि कषाय जीतवाथी थाय ठे ॥ ३ ॥ ॥ ते कषायजुं जीतुं पांच इंद्रियना जीतवाथी थाय ठे, अने ते इंद्रियजय रूढा आचारथी थाय ठे, ते रूढी आचार मजा उपदेशथी होय ठे, ते उपदेश

मनुष्यने गुणनो कारणचूत होय ॥ ४ ॥ ॥ उपदेशथी रूढी बुद्धि आय, रुढी बुद्धि
 थी सारा गुणोनो उदय आय, ते माटे उपदेश सांचलवा संजलाववा माटे आ आचा
 रोपदेशनामें ग्रंथ प्रारंभीयें ठेयें ॥ ५ ॥ ॥ रूढा आचारना विचारें करीने जलो
 जयेन स्यात्, सदाचारदसौ भवेत् ॥ स जायते तूपदेशानृणां गुणनिबन्धन
 म् ॥ ४ ॥ सुशुद्धिश्चोपदेशेन, ततोऽपि च गुणोदयः ॥ इत्याचारोपदेशाख्य,
 ग्रन्थः प्रारभ्यते मया ॥ ५ ॥ सदाचारविचारेण, रुचिरश्चतुरोचितः ॥ देवा
 नन्दकरो ग्रन्थः, श्रोतव्योऽयं शुभात्मभिः ॥ ६ ॥ पुजलानां परावृत्त्या, दुर्लभं
 जन्म मानुषम् ॥ लब्ध्वा विवेकेन धर्मे, विधेयः परमादरः ॥ ७ ॥ ॥

जने पंफितने जणया वांचवा योग्य तथा देवताने आनंदकारी एवो आ ग्रंथ ते पुण्य
 वंत मनुष्यें सांचलवो ॥ ६ ॥ ॥ पुजल परावृत्तकारी पामवो दुर्लभ एवो आ मनुष्य
 नो जय ते, ते पामी करीने विवेककारी मनुष्यें धर्मेने विषे धणो आदर करवो ॥ ७ ॥

धर्म जे ठे, ते सांजव्यो, पोते जाण्यो, पोतें कीथो, बीजाने कराव्यो, अने अनु
मोद्यो थको निश्चें सात कुलने पवित्र करे ठे ॥ ८ ॥ ॥ धर्म, अर्थ, अने काम ए त्र
ए साथा विना मनुष्यनो जन्म ते पयुनी परें निःफल जाणवो, ते त्रणसां पण उच
म धर्म ठे, केमके, धर्म विना बीजा बे न पामीयें ॥ ए ॥ ॥ एक मनुष्यनो जव, बीजो

धर्मः श्रुतोऽपि दृष्टोऽपि, कृतोऽपि कार्स्तिोऽपि च ॥ अनुमोदितो नियतं, पुनात्या
सप्तमं कुलम् ॥ ८ ॥ विना त्रिवर्गं विफलं पुंसो जन्म पश्योऽसि ॥ तत्र स्याद्भूतसो
धर्मस्तं विना न यतः परौ ॥ ए ॥ मानुष्यमार्थदेशश्च, जातिः सर्वात्पाटव
म् ॥ आयुश्च प्राप्यते तत्र, कथं चित्कर्मलाघवात् ॥ १० ॥ प्राप्तेषु पुण्यतस्ते

आर्यदेश, त्रीज्जी उत्तमजाति, चोथी इंडियोनी सहढता, पांचसुं महोदुं आयुष्य, एट
लां वानां केम पामीयें! जो कांश्क कर्म हलवां होय तो पामीयें ॥ १० ॥ ॥ ए स
र्वे वानां पुण्यथकी प्राप्ते अक्रे प्रण श्रीतीतरागना वचन उपर श्रद्धा आववी कुर्वन ठे,

ते अथा आत्र्या पत्नी लडा गुरुनो योग जो मोहोदुं जाण्य होय तो पामीयें ॥ ११ ॥
ए सर्व वस्तु पामी, पण जेम राजा न्यायें करी शोचे, फूल सुगंधें करी शोचे, नोल
न घृतेंकरी शोचे, तेम नला आचारें करी शोचतुं एवी साम्नी पामवी दुर्लन ठे ॥ १२ ॥

पु, अधा भवति दुर्लजा ॥ ततः सजुरुसंयोगो, लभ्यते गुरुजाग्यतः ॥ १२ ॥
लब्धं हि सर्वमप्ये तत्सदाचारेण शोभते ॥ न्यायेनेव नृपः पुष्पं, गन्धेना
ज्येन भोजनम् ॥ १७ ॥ शास्त्रे दृष्टेन विधिना, सदाचारपरो नरः ॥ परस्परा
विरोधेन, त्रिवर्गं साधयेन्मुदा ॥ १३ ॥ तुर्ये यामे त्रियामाया, ब्राह्मे काले कृ
तोद्यमः ॥ मुञ्चेन्निजां सुधी पञ्च, परमेष्ठिस्तुतिं पठन् ॥ १४ ॥ ॥ ॥

माटे जेयो विधि शास्त्रमां दीतो, तेवा विधियें करी जे सदाचारमां तत्पर रहे, ते प्राणी,
मांहीमांहे विरोध विना त्रिवर्गिनं हर्षं करी साधे ॥ १३ ॥ ॥ जे पंक्ति ठे, ते रात्रिने
चोथे पोहोरे ब्राह्मकाले एटले ने घडी पाठली रात्रें उठवानो उद्यम करीने नयकारनी

स्तुति जगतो शको निदानो त्याग करे ॥१४॥ ॥ सदा सर्वदा शय्याधी उवतां मारी
 अथवा जमखी, जे नासिका बहेती होय, ते तरफनो पग उठती वखत प्रथम धरतीउपर
 आपे ॥१५॥ ॥ पढी रात्रें सूतानां वस्त्र मूक्रीनें बीजां वस्त्र पहेरीने जला स्थानकें बेसीने
 वामा तु दक्षिणा वापि, या नाडी बढते सदा ॥ शंख्योहितस्तमेवादौ, पादं द
 श्याद्भुवस्तले ॥१५॥ सुक्का शयनवस्त्राणि, परिधायपराणि च ॥ स्थित्वा सुस्थ्या
 नके धीमान् ध्यायेत्पञ्चनमस्क्रियाम् ॥१६॥ उपविश्य च पूर्वोशान्निमुखो वाप्यु
 दञ्जुखः ॥ पवित्राङ्गः शुचिस्थाने, ज्येष्मन्त्रं समाहितः ॥ १७ ॥ अपवित्रः प
 वित्रो वा, सुस्थितो ह्यस्थितोऽपि वा ॥ ध्यायेत्पञ्चनमस्कारान्, सर्वपापैः प्र
 बुद्धिवंत जीव प्रथम नवकारतुं ध्यान करे ॥१६॥ ॥ ते पूर्वदिशि संमुख अथवा उत्तर
 दिशि संमुख, पवित्र शरीरें पवित्र स्थानकें बेसी मन स्थिर राखीने श्रीनवकार मंत्रनो
 जाप करे ॥ १७ ॥ ॥ अपवित्र अथवा पवित्रपणें सुखियो अथवा दुःखियो शको

पण जे प्राणी नवकार प्रत्ये ध्यावे, ते प्राणी सर्व पापथकी मूकाय ॥ १७ ॥ अंगु
 लीने टेरवे जे नवकारनो जाप करे, जे मेरु उलंघीने जाप करे, वली जे संस्वारहित
 जाप करे, तेलुं प्राये अल्प फल होय ॥ १९ ॥ ॥ जाप त्रण प्रकारें थाय, एक उ
 ल्कृष्टो, वीजो मध्यम अने व्रीजो अधम, ए त्रण जेद जाणवा. तेमां कमलादिकना
 सुच्यते ॥ २७ ॥ अङ्गुल्यग्रेण यज्जप्तं, जप्तं यन्मेरुलङ्घनैः ॥ संख्याहीनं च य
 ज्जप्तं, तत्प्रायोऽल्पफलं भवेत् ॥ २९ ॥ जपो भवेद्विधोल्कृष्ट, मध्यमाधमजे
 दतः ॥ पद्मादिविधिना सुख्यो, मध्यः स्याज्जपमालया ॥ ३० ॥ विना मौनं
 विना संख्यां, विना चेतोनिरोधनम् ॥ विना स्थानं विना ध्यानं, जघन्यो
 विधिर्न जे गुणे, ते प्रथम सुख एतन्ने उल्कृष्ट जाप जाणवो, तथा नोकरवाजीयें गुणे,
 ते वीजो मध्यम जाप जाणवो ॥ ३० ॥ ॥ तथा मौन धारण कला विना, संख्या
 विना, मन स्थिर राखा विना, स्थानक विना अने ध्यान विना जे गुणे, ते व्रीजो ज

घन्य जाप जाणवो ॥ ११ ॥ ॥ तेवार पढी उपाशरे अथवा पोताना घरने विपे ज
इने पोतानां पाप शुद्ध करवाने अर्थे पंक्ति पुरुष, पडिक्कमणुं करे ॥ ११ ॥ ॥ एक
रात्रिपडिक्कमणुं, वीजुं देवसिकपडिक्कमणुं, त्रीजुं पाली पडिक्कमणुं चोथुं चौमासी पडिक्क
जायते जपः ॥ १२ ॥ ततो गत्वा मुनिस्थान, मधवात्मनिकेतने ॥ निजपाप
विशुध्यर्थी, कुर्यादावश्यकं सुधीः ॥ ११ ॥ रात्रिकं स्यादैवसिकं, पादिकं चातु
र्मासिकम् ॥ सांवत्सरं चेति जिनैः, पंचधावश्यकं कृतम् ॥ १३ ॥ कृतावश्यक
कर्मा च, स्मृतपूर्वकुलक्रमः ॥ प्रमोदमेडुरस्वान्तः, कीर्तयेन्मङ्गलस्तुतिम्
॥ १४ ॥ मङ्गलं भगवान् वीरो, मङ्गलं गौतमः प्रभुः ॥ मङ्गलं यूलित्रजाद्या,
मणुं अने पांचसुं संवहरी पडिक्कमणुं, ए जगवंते पांच प्रकारे पडिक्कमणुं करहुं कथुं ठे
॥ १३ ॥ ॥ पडिक्कमणुरूप कर्म करीने पोतानो कुलक्रम संनारतो हर्षे करी पुष्ट ठे चित्त
जेनुं एवो जन ते मांगलिकनी स्तुति जणे ॥ १४ ॥ ॥ मांगलिक श्रीजगवंत महावीर

सामीजी, मंगलिक श्रीगौतमस्वामीजी, श्रीशूलचन्द्रादिक साधुजी, अने मंगलिक जैनधर्म
 मंगलिक करो ॥ १५ ॥ ॥ श्रीऋषनादिक चोवीश तीर्थंकर, चरतादिक बार चक्रवर्ति तथा
 वासुदेव अने बलदेव, ए सर्वे मंगलिक करो ॥ १६ ॥ ॥ नाचिराजा, सिद्धार्थ राजा
 आदिक चोवीश जिनना पिता, जेमणें अखंड राज्य पाव्यां ठे, ते मुज्जे जय
 जेनो धर्मोऽस्तु मङ्गलम् ॥ १७ ॥ नाचियाद्या जिनाः सर्वे भरताद्याश्च च
 क्रिणः ॥ कुर्वन्तु मङ्गलं सर्वे, विष्णवः प्रतिविष्णवः ॥ १६ ॥ नान्निसिद्धार्थ
 भूपाद्या, जिनानां पितरः समे ॥ पालिताखंभसाद्याज्या, जनयन्तु जयं भम
 ॥ १७ ॥ मरुदेवीत्रिशालाद्या, विख्याता जिनमातरः ॥ त्रिजगज्जनितानन्दा,
 मङ्गलाय नवन्तु मे ॥ १८ ॥ श्रीपुंनरीकिन्धञ्चूति, प्रसुखा गणधारिणः ॥ श्रु
 आप्यो ॥ १९ ॥ ॥ मरुदेवीजी, त्रिशला प्रसुख जे जगतमां प्रसिद्ध, जेमणें त्रण जगते
 आनंद आप्यो एवी जिनजीनी चोवीश माताड ते मुज्जे मंगलिक माटे हो ॥ १८ ॥
 पुंनरीक गणधर, गौतम गणधर आदे देईनें चौदशें वाचन गणधर बीजा पण श्रुतकेव

ली साधु, चौह पूर्वधर ते मुजने मंगलिक प्रत्ये आपो ॥ ३९ ॥ ॥ ब्राह्मी, चंदनबाला
दिक जे महोटी साधवीयो अखंद शीलनी लीला जेमनी ठे एवी ते सर्वे मुजने मंग
लिक प्रत्ये आपो ॥ ३० ॥ ॥ चक्रेश्वरी देवी, सिंहायिका प्रमुख चोवीश देवी जे स
तकेवलिनोऽपीह, मङ्गलानि दिशन्तु मे ॥ ३९ ॥ ब्राह्मीचन्दनबालाद्या, महा
सत्यो महत्तराः ॥ अखंफरीलालीलाद्या यंहंतु मम मंगलम् ॥ ३० ॥ चक्रे
श्वरीसिंहायिकासुर्यः शासनदेवताः ॥ सम्यग्दृशां विघ्नहरा रचयन्तु जय
श्रियम् ॥ ३२ ॥ कपर्दिमातंगसुर्या यद्वा विख्यातविक्रमाः ॥ जैनविघ्नहरा
नित्यं दिशन्तु मंगलानि मे ॥ ३१ ॥ यो मङ्गलाष्टकमिदं पठुधीरधीते, प्रातर्नरः

स्मग्दृष्टि जीवोना विघ्ननी हरनारी ते जयलक्ष्मी रचो अथवा करो ॥ ३१ ॥ ॥ कपर्दि,
मातंग प्रमुख चोवीश यद् प्रसिद्ध पराक्रमना धणी जिनशासनना विघ्नना हरनार ठे,
ते मुजने सदा मंगलिक आपो ॥ ३१ ॥ ॥ जे जली बुद्धिनो धणी, पुष्टे जावित ठे मननी

शुनि जेनी, सौभाग्य भाग्य सहित एवो अने गया ठे सर्व विघ्न जेनां एवो पुरुष ए पूर्वं
कह्या जे मंगलिकना आव श्लोक तेने प्रजाते नशे, ते मनुष्य जगतने विषे नित्ये घणां
मंगलिक पासे ॥३३॥ ॥ तेवार पढी देरासरें जाय, त्यां कीधी ठे निसिहीनी क्रिया जेणे

सुकृतजावितचित्तवृत्तिः ॥ सौभाग्यभाग्यकलितो ध्रुतसर्वविघ्नो, नित्यं सम
इलमलं लभते जगत्याम् ॥ ३३ ॥ ततो देवालये यायात् कृतनैपेधिकीक्रियः ॥
त्यजन्नाशातनाः सर्वोस्त्रिः प्रदक्षिणथेज्जिनम् ॥ ३४ ॥ विलासहासनिठीवा
निचाकलहडःकथाः ॥ जिनेचमवने जह्यादाहारं च चतुर्विधम् ॥ ३५ ॥ नम
स्तुभ्यं जगन्नाथेत्यादिस्तुतिवद्वदः ॥ फलमद्वैतपूगं वा ढोकथेजूजिनाग्रतः

एवो ते समस्त देरासरनी आशातनाजने दालतो श्री जगवंतं त्रण प्रदक्षिणा दीये
॥ ३४ ॥ ॥ स्त्री साथे विलास, हास्य, श्लेष, त्याग, निश, कलह, मावी कथा अने
चार प्रकारनो आहार जगवंतने देहेरे बांमे ॥ ३५ ॥ ॥ 'नमो जिनाय' इत्यादिक स्तु

तीनां पदं जगती शको फल, अद्वैत अथवा सोपारी श्रीजगवंतने आगल मूके ॥३६॥
 गले द्वार्ये न जाय राजाने, देवने, गुरुने, नैमित्तिक जे आशुष्य जाये ते ज्योतिषीने
 गले द्वार्ये न जोवा. फले करीने फलनी प्राप्ति थाय ॥३७॥ ॥ जमये पासै पुरुष, मने
 पासै स्त्री कनी रहिने जगवंत प्रत्ये वांटे. जद्यव नव द्वाथथी मांकी साव हाथ अथ
 ॥ ३६ ॥ रिक्तपाणिर्न पश्येत्तु राजानं देवतं गुरुम् ॥ नैमित्तिक विशेषेण फलेन
 फलमादिशेत् ॥ ३७ ॥ दक्षवामांगभागस्थो नरनारीजनो जिनम् ॥ वन्देता
 वग्रहं भुक्त्वा षष्टिं नव करान्विभो ॥३८॥ ततः कृतोत्तरासंगः स्थित्वा सद्योग
 सुधया ॥ ततो मधुरया वाचा कुरुते चैत्यवन्दनम् ॥ ३९ ॥ उदरे कूर्परौ न्य
 स्य कृत्वा कोशाकृती करौ ॥ अन्योन्याङ्गुलिसंश्लेषाद्योगमुद्रा भवेदियम्
 ग्रह मूकी एटले जगवंतथी वेगला रहिने वांटे ॥ ३८ ॥ ॥ तेवार पढी उत्तरासण करे,
 ते करीने जली योगमुद्रायें रहिने पढी मीठी वाणीयें करी चैत्यवन्दन करे ॥३९॥ ॥ पे
 ट उपर बे कोणी मूकीने कमलना मोमानें आकारें मांहे मांहे दश आंगुली जेनी क

रीयं ते योगसुंश होय ॥ ४० ॥ ॥ पढी पोतानें घेर जईने प्रचात समथनी क्रिया
 करे, पढी नोजन, बख तथा घरना माणसनी चिंता करे ॥ ४१ ॥ ॥ बांधवने तथा
 दास प्रसुवनें पोत पोताना कार्यने विपे धायीनें आठ बुद्धिना गुणें सहित थकी यली
 पोशालें एटले उपासरे जाय ॥ ४२ ॥ ॥ एक गुरुनी सेवा, बीजो धर्म सांजलवो, बीजो
 ॥ ४० ॥ पश्चान्निजालयं गत्वा कुर्यात्प्राजातिकीं क्रियाम् ॥ विदधीत गेहचि
 न्तां नोजनात्तादनादिकाम् ॥ ४१ ॥ अनादिस्वस्वकार्येषु बंधून् कर्मकरान
 पि ॥ पुण्यशाळां पुनर्यायादष्टत्रिंशोर्गुणैर्युतः ॥ ४२ ॥ शुश्रूषा श्रवणं चैव
 ब्रह्मणं धारणं तथा ॥ ऊहापोहोऽर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः ॥ ४३ ॥
 श्रुत्वा धर्मं विजानाति श्रुत्वा त्यजति दुर्मतिम् ॥ श्रुत्वा ज्ञानमवाप्नोति श्रुत्वा
 ग्रहण करवो, चोथो धारवो, पांचमो “विचारवो” ठणे ऊहापोह करवो, सातमो अर्थ
 जाणवो, अने आठमो तत्त्वज्ञान ए आठ बुद्धिना गुण जाणवा ॥ ४२ ॥ ॥ शाल
 सांजल्या थकी धर्मनो जाण थाय, सांजलवाथी इष्टमतिहुं गंमहुं थाय, सांजल्या थकी

ज्ञान पामे, सांचल्याथी वैराष्य पामे. ॥ ४४ ॥ ॥ बे हाथ, बे पग अने मस्तक ए
 पंचांग खमासमण गुरु अने बीजा साधुने देखिनें गुरुनी आशातना बांढतो थको धर्म
 सांचलवा बेसे ॥ ४५ ॥ ॥ मस्तकें बे हाथ लगाडीने बे टिंचरीं करी धरती प्रत्ये विधि
 वैराग्यमेव च ॥ ४४ ॥ पंचाङ्गप्रणिपातेन गुरुन् साधुन्परानपि ॥ उपावि
 शन्नमस्कृत्य त्यजन्नाशातना गुरोः ॥ ४५ ॥ उत्तमाङ्गेन पाणिभ्यां जानुभ्यां
 च भ्रुवस्तले ॥ विधिना स्पृशतः सम्यक्पंचाङ्गप्रणतिर्भवेत् ॥ ४६ ॥ पर्यस्थ
 कां न बध्नीयान्न च पादौ प्रसारयेत् ॥ पादोपरि पदं नैव दोर्मूलं न प्रदर्शयेत्
 ॥ ४७ ॥ न पृष्ठे न पुरो वापि, पार्श्वयोरुभयोरपि ॥ स्थेयान्नालापयेदन्य, मा
 सहित सम्यक् प्रकारं फरसीये, ते पंचांग नमस्कार कहीये ॥ ४६ ॥ ॥ गुरुपासें बेठा
 पग न बांधीये, पग लांबा पसारीये नही, पग उपर पग न चढावीये, बे कांख उंची
 करिने नही देखाडीये ॥ ४७ ॥ ॥ गुरुनी पाबल बेसे नही, आगल बेसे नही, जमणे

तथा मावे ए वे. पासं पण वेरो नही. वीजा आच्या माणसनें गुरुना बोलाव्या विना
 प्रथम पोतें न बोलावें ॥ ४७ ॥ ॥ नाचचेद जाणवामां निपुण एवो पंक्ति जे ठे ते
 गुरुना सुख उपर दृष्टि राखतो मन एकाग्र करीनें धर्मशास्त्रने सांजले ॥ ४८ ॥ पोताना
 मनना संदेह टाळे, वखाण ऊठ्या पढी पंक्ति होय ते देव गुरुना गुण गानारनें एटले
 गतं पूर्वमात्मना ॥ ४९ ॥ सुधीं गुरुसुखन्यस्तद्विष्टिरेकाग्रमानसः ॥ शृणुयाद्भर्म
 शास्त्राणि भावभेदविचक्षणः ॥ ४९ ॥ अपाकुर्यात्स्वसंदेहान् जाते व्याख्यानके
 सुधीः ॥ सुर्वद्वंजुणगातृभ्यो, दद्याद्दानं निजोचितम् ॥ ५० ॥ अकृतावश्यको
 दत्ते गुरुणां वन्दनानि च ॥ प्रत्याख्यानं यथाशक्ति विदध्याद्विरतिप्रियः
 ॥ ५१ ॥ तिर्यग्योनिषु जायन्ते विरतादानिनोऽपि ह ॥ गजाश्वादिभ्रवे भोगा
 चाट नोजकनें यथा शक्तियें पोताने आपवा योग्य दान आपे ॥ ५० ॥ ॥ जेणें पडि
 क्रमणुं नशी कीडुं, ते गुरुनें पगें वांढणा आपे, पढी जेने विरति पणुं बाहाडुं ठे, ते नो
 कारसी प्रमुख यथाशक्तियें पचस्काण करे ॥ ५१ ॥ ॥ विरति विना जे दातार होय

ते पण तिर्यचनी योनिमां जइ ऊपजे. हाथी बोडानो चव पासे. त्यां जोग जोगवता
 पण बंधनमां पळ्या थका रहे ॥ ५२ ॥ ॥ जे दातार होय ते नरकें न जाय, जे प
 च्चक्राण सहित होय ते तिर्यचमां न जाय, जे दयावंत होय, ते आयुष्यहीन न होय,
 अने जे सत्यवादी होय तेनो मावो स्वर न होय ॥ ५३ ॥ ॥ तपस्या जे ठे ते सर्व

नू शुञ्जाना बन्धनान्वितान् ॥५२॥ न दाता नरकं याति न तिर्यग् विरतो न
 वेत् ॥ दयादुर्नायुपा हीनः सत्यवक्ता न दुःस्वरः ॥ ५३ ॥ तपः सर्वाहिसारंग
 वशीकरणवागुरा ॥ कपायतापमृद्घीका कर्मान्नीर्णहरीतकी ॥ ५४ ॥ यद्वुरं य
 दुराराध्यं यत्सुरैरपि दुष्करम् ॥ तत्सर्वं तपसा साध्यं तपो हि दुर्तिक्रमम्

इंद्रियरूप जे मृगलां तेने वश करवाने जालसमान ठे, तथा कपायरूप ताप टाल
 वाने शाक्ता समान ठे, अने कर्मरूप अजीर्ण टालवाने हरडे समान ठे ॥ ५४ ॥ ॥
 जे वस्तु वेगली होय, दूर होय के दुःखें आराध्य होय, तथा जे देवताने पण दुर्जन

होय, ते सर्व तपस्थायें करी सथाय ठे. ते तपने पोताना गुणें करी उल्लंघन करी जाय
एवुं वीजुं साधन नथी ॥ ५५ ॥ ॥ हवे वजारमां जइ धर्मनो विधिंयें करीने पं
मित, इव्य कमावानो पोत पोतानो व्यापार करे ॥ ५६ ॥ ॥ मित्रना उपकारने
अर्थ, वंसु एटले जाइना उदयने अर्थ, उत्तम पुरुष लक्ष्मी उपार्जन करे, केवल पो

॥ ५५ ॥ चतुष्पथं ततो यायात् कृतधर्मविधिः सुधीः ॥ कुर्यादर्थार्जनीपायं
व्यवसायं निजं निजम् ॥५६॥ सुहृदासुपकाराय बन्धूनासुदयाय च ॥ अर्ज्यते
विचवः सद्भिः स्वोदरं को विचर्ति न ॥ ५७ ॥ व्यवसायभवा वृत्तिः सोल्लुष्टा
मथ्यना कृपिः ॥ जघन्या नृचि सेवा तु निह्ना स्यादधमाधमा ॥ ५८ ॥

तासुं पेट तो कोण नथी चरतो? ॥ ५७ ॥ ॥ व्यापारनी आज्ञीविकायें पेट चराय,
ते उल्लुष्ट आज्ञीविका जाणवी, खेतिवाडी करी आज्ञीविका चलाववी ते मथ्यम
जाणवी, पारकी सेवा करी आज्ञीविका चलाववी, ते वृथिवीने विपे जघन्य जाणवी,

आ०३०
॥८८॥

अने निहा मागी पेट जरतुं ते अथमाथम आजीविका जाणवी ॥ ५८ ॥ ॥ ते
माटे नीच व्यापार पोतें न करे, बीजा पासें न करावे, लक्ष्मी पुस्त्यथी प्राप्त थाय पण
पापथी क्यारें पण वधे नही ॥ ५९ ॥ ॥ घणा आरंजरूप महापाप जेसां ठे, लोकसां
जेनी निंदा थाय ठे, तथा जे उच्यलोक विरुध होय, ते कर्म आचरे नही ॥ ६० ॥
व्यवसायमतो नीचं न कुर्यान्नापि कारयेत् ॥ पुण्यानुसारिणी संपत् न पापाधर्धते
क्वचित् ॥ ५९ ॥ बहारंभमहापापं जने चेज्जनगर्हितम् ॥ इहामुत्रविरुधं यत्
तत्कर्म न समाचरेत् ॥ ६० ॥ लोहकारचर्मकारमथकृत्तैलिकादिभिः ॥ स
त्यप्यर्थ्यागमे कामं व्यवसायं परित्यजेत् ॥ ६१ ॥ एवं चरन् प्रथमयामविधिं

लोहार साथें, सोची अथवा चमार साथें, मद्यना करनार साथें अने तेनी आदिक
साथें जो घणुं धन प्राप्त थतुं होय तो पण व्यापार न करे ॥ ६१ ॥ ॥ ए प्रकारें
प्रथम पोहोरनो सर्व विधि प्रत्ये करतो, श्रद्धायुक्त, जला विनयनो धणी, न्यायें करी

गोजतो, विज्ञानने मान आपवुं तथा लोकने रीजवुं तेनेविपे सावधान, एयो आ
 नक इद लोक अने परलोकसंबंधि पोताना वे जन्म सफल करे ॥ ६१ ॥ ॥ इति श्री
 रत्नसिंहसूरि, तत् शिष्य श्रीचारित्र सुंदरगणिना विरचित आचारोपदेशग्रंथमां प्रथमपो
 समग्रं श्राद्धो विद्गुविनयो तथराजमानः ॥ विज्ञानमानजनरंजनसावधा
 नो जन्मद्वयं विरचयेत्सफलं स्वकीयम् ॥ ६२ ॥ इति श्रीरत्नसिंहसूरिशिष्य
 श्रीचारित्रसुन्दरगणिविरचिते आचारोपदेशे प्रथमप्रहर्वर्गः ॥ २ ॥ अ
 थ स्वमन्दिरे यायाद् द्वितीये प्रहरे सुधीः ॥ निर्जन्तुञ्जुवि पूर्व्याशाभिसुखः स्ना
 नमाचरेत् ॥ २ ॥ सप्रणालं चतुष्पादं स्नानार्थं कारयेद्घरम् ॥ तच्छुद्धे जले य
 होरवर्गनो बालान्वोध संपूर्ण ॥ १ ॥ ॥ हवे बीजे पोहारे ते पंकित पोताने घरे जइ जीव
 रदित धरतीने विपे पूर्वद्विनि संमुख त्रेशीने स्नान करे ॥ १ ॥ ॥ चला परनाला सहित
 बाजोठ स्नानने अर्थ करावे, ते उष्ण पाणी बाजोठमां रखाथी जीवनी हिंसा न थाप ॥ १ ॥

॥ रजस्वलास्त्रीनो अथवा चंदालनो स्पर्शो होय अथवा घरमां सूतक यशु होय,
तथा स्वजनाविकलुं मृत्यु यशु होय तो मस्तकशी मांनिने सर्वांगे स्नान करे ॥ ३ ॥
अन्य अवसरें मस्तक वर्जीने वीजुं शरीर पखाजे, एटलुं विशेष जाणुं, तथा कांइक
उष्ण एवा थोडे पाणीयें करी पुष्पवंत जीव देवपूजाने अर्थे स्नान करे ॥ ४ ॥ ॥
स्माजंतुवाधा न जायते ॥ १ ॥ रजस्वलाया मलिनस्पर्शो जाते च सूतके ॥
मृतस्वजनकार्ये च सर्वाङ्गस्नानमाचरेत् ॥ ३ ॥ अन्यथा शीर्षवर्जे च वपुः
प्रक्षालयेत्परम् ॥ कर्षोष्णेनाल्पपयसा देवपूजाकृते कृती ॥ ४ ॥ चन्द्रादि
त्यकरस्पर्शात्पवित्रं जायते जगत् ॥ तदाधारं शिरो नित्यं पवित्रं योगिनो
विडः ॥ ५ ॥ दयासाराः सदाचारास्ते सर्वे धर्महेतवे ॥ शिरःप्रक्षालनान्नि
चंद्रमा अने सूर्यना किरण स्पर्शीथी सर्वे जगत् पवित्र थाय ठे, ते जगत्नो आधार
मस्तक ठे माटे ते मस्तक निरंतर पवित्र ठे, एम योगीश्वर कहे ठे ॥ ५ ॥ ॥ जीवदया
ठे तारनूत जेमां एवा सर्वे आचार धर्मेनां कारण ठे, ते माटे मस्तक धोवाशी नित्य

मस्तकना जीवने उपश्व होय तेथी अथर्म धाय, माटे मस्तक स्नान नित्य करतुं वर्ज्य ठे ॥६॥ ॥ मस्तक क्यांदि अपवित्र न होय. केमके ! सदा ते लुगडाथी वीटगुं रहे, वली निर्मल तेजनो धरनार एवो आत्मा जे जीव, तेनी स्थिति एटले रहेतुं ते निरंतर मस्तक ठे, माटे क्यांरे पण मस्तक अपवित्र थतुं नथी ॥७॥ ॥ स्नानने अर्थ पाणी नाखा

त्यं तल्लीवोपश्ववो भवेत् ॥ ६ ॥ नापवित्रं भवेत्तीर्षं नित्यं वस्त्रेण वेष्टितम् ॥ अ
प्यात्मनः स्थितेः सत्वनिर्मलद्युतिधारिणः ॥ ७ ॥ स्नानयेति जलोत्सर्गाद्
न्नंति जन्तून् बहिर्मुखान् ॥ मखिनं कुर्वते जीवं शोधयंति वपुर्हि ते ॥८॥ विहाय
पोतकं वस्त्रं परिधाय जिनं स्मरन् ॥ यावज्जलादूर्ध्वं चरणौ तावत्सत्रावतिष्ठते

थी जीव ह्णाय ठे, एवा स्नान धर्मथी मिष्याली जनो पोताना जीवने मलीन करे ठे,
अने शरीरने पवित्र करे ठे ॥ ७ ॥ ॥ स्नान करेतुं पोतीतुं मूकीने वीजुं वस्त्र पहरीने
जिनेथरतुं स्मरण करतो ठतो ज्यांसुधी नीना पण होय त्यां सुधी त्यांज उचो रहे ॥९॥

अन्यथा नीना पग उपर मल लागे, तेव्हा रें वली पग अपवित्र थाय, तथा ते नीजेला पगे जीव लागे तेमनी घात थाय, तेशी महोडुं पाप लागे ॥ १० ॥ ॥ घरना देग सर पासें जडने धरती पूंज्या पढी धोथेलां पूजानां वख पहेरीने आठ पडनी सुखको श बांधे ॥ ११ ॥ ॥ देव पूजाने अवसरें एक मन, वीजुं वचन, त्रीजी काथा, चोछुं

॥ ९ ॥ अन्यथा मलसंश्लेषादपवित्रौ पुनः पदौ ॥ तद्धीनजीवघातेन जवे वा पातकं महत् ॥ १० ॥ गृहचैत्यांतिकं गत्या भूमिसंमार्जनादनु ॥ परिधा य च वस्त्राणि सुखकोशं दद्यात्यथ ॥ ११ ॥ मनोवाक्कायवस्त्रेषु भूपूज्योपकर स्थितौ॥शुद्धिः सप्तविधा कार्या देवतापूजनक्षणे॥ १२॥पुमान् परिदधेन्न स्त्रीवस्त्रं

वस्त्र, पांचमी भूमि, ठरां पूजानां उपकरण अने सातमी स्थिति स्थैर्य, ए सात वानां देव पूजवाने अवसरें शुद्ध कार्या ॥ ११ ॥ ॥ पूजा करती वखतें क्यारें पग पुरुषें स्त्रीतुं वख पहेरुंतुं नही, अने स्त्रीयें पुरुषतुं वख न पहेरुंतुं. जो पहेरे, तो कामनी त

या रागनी वृद्धि आय ॥१३॥ ॥ जारीयेँ करी पाणी लावी ते पाणीयेँ करी जगवंतनी
 अंग पखान करीने अंगलूहणे करी जगवंतनुं शरीर लूछुं करे. तेवार पठी अष्ट प्रकारनी
 पूजा करे, ते कहे ठे ॥ १४ ॥ ॥ कस्वूरी केशर कपूर तेऐकरी मिश्रित करेलुं एहुं
 पूजाविधौ क्वचित् ॥ न नारी नरवस्त्रं तु कामरागविवर्धनम् ॥ १३ ॥ जंगा
 रानीतनीरेण संस्नाप्यांगं जिनस्य तु ॥ रूढीकृत्य सुवस्त्रेण पूजां कुर्यात्ततोऽष्ट
 धा ॥ १४ ॥ सच्चन्दनेन घनसारविमिश्रितेन कस्तूरिकाञ्चवयुतेन मनोहरेण ॥
 रागादिदोषरहितं महितं सुरेन्दैः श्रीमज्जिनं त्रिजगतः पतिमचर्यामि ॥ १५ ॥
 जातीजपावकुलयम्पकपाटलाथैर्मन्दारकुन्दशतपत्रवारारविन्दैः ॥ संसारनाश

मनोहर चंदन तेणें करीने, राग द्वेषादिके रहित अने जेने चोशत ईधें पूज्या एवा जे श्रीजग
 वंत त्रण जगतना स्वामी तेने हुं अर्चुं हुं ॥१५॥ इति प्रथमा चंदनपूजा ॥१॥ ॥ तेवा
 र पत्नी जाइना फूल, जासूलना फूल, बोलसिरि, चंपक, पापल, मंदार, मचकुंद, सो

पांखडीतां कमल, तथा बीजा पण फूलें करी, संसारना नाश करनार, करुणायें करी प्रधान, एवा जगवंतने हुं पूछें तुं ॥ १६ ॥ इति द्वितीया पुष्पपूजा ॥ ३ ॥ काला अग्रनो करेलो साकर सहित घणा कपूरें करी सहित घणा यलें कखो बहु दुर्ष आपनारो एवो धूप अक्षियें करी महारा पोताना पापनो नाश करवाने अर्थें हुं

करणं करुणाप्रधानं पुष्पैः परैरपि जिनेन्धमहं यजामि ॥ १६ ॥ कृष्णाणुरुप्रचु रितं सितया समेतं कर्पूरपूरमहितं विहितं सुयत्नात् ॥ धूपं जिनेन्द्रपुरतो गुरु तोषपोषं भक्तयोत्क्षिपामि निजलुष्कतनाशनाय ॥ १७ ॥ ज्ञानं च दर्शनमथो चरणं विचिन्त्य पुंजत्रयं च पुरतः प्रविधाय भक्त्या।चोद्गाढतैः कणगणैरपरै

जगवंत आगल उखेंतुं ॥ १७ ॥ इति तृतीया धूप पूजा ॥३॥ ॥ ज्ञान दर्शन अने चारित्र ए त्रण नाव मनमां चिंतवी त्रण ढगला आखे सब चोखायेंकरी तथा बीजा पण सारा कण धान्य तेणेंकरी जगवंत आंगल करीने ते जगवंत श्रीआदीश्वर प्रत्ये

अर्द्धं करीडुं पूजुं ॥ १८ ॥ इति चतुर्थी अर्द्धत पूजा ॥ ४ ॥ ॥ जलां एवां नालियेर, फनस,
 आमलां, बीजोरां, जंबीर, सोपारी अने आंबां प्रमुख फलैकरीने स्वर्गादिक देवल्लोका
 दिक घणां फलना देनार एवा श्रीदेवाधिदेव एटले सर्व देव थकी अधिक देव जे श्रीज
 रपीडु श्रीमन्तमादिपुरुषं जिनमर्चयामि ॥ २८ ॥ सन्नालिकेरपनसामलबीज
 पूरजंबीरपूगसहकारमुखैः फलैस्तैः ॥ स्वर्गाद्यनल्पफलदं प्रमदाप्रमोदं दे
 वाधिदेवमशुभप्रशमं महामि ॥ २९ ॥ इति फलपूजा ॥ सन्मोदकैवटकमंजुक
 शाखिदाखिसुखैरसंख्यरसशालिभिन्नभोज्यैः ॥ कुतूड्व्यथाविरहितं स्व
 हिताय नित्यं तीर्थार्थिधिराजमहमादरतो यजामि ॥ ३० ॥ इति नैवेद्यपूजा ॥
 गवंतते प्रत्ये हर्षी करीडुं पूजुं ॥ १९ ॥ इति पंचमी फल पूजा ॥ ५ ॥ ॥ जला एवा
 लाडया, वडां, मांजा, चोखा, वाज प्रमुख घणा रससहित शोचतां एवां नैवेद्य तेऐक
 रीने जूय अने दयानी पीडा रहित एवा भगवंत तीर्थकरने पोताना हितने अर्थे नि

स्य प्रत्ये हुं आदर्शकरी पूछुं हुं ॥१०॥ ॥इति षष्ठी नैवेद्य पूजा ॥ टाढ्यो ठे पापनो स
मूह जेणें, नित्यें उदयवंत, त्रण विधने एटले त्रण जगतने जोवानी कला तेणेकरी
सहित एवा जगवंत प्रत्ये नक्तियें करी महाहं तम जे अज्ञान ते शमाववामाटे शमताना
समुद् एवा जगवंत प्रत्ये नक्तियें करी हुं दीपक करुं ॥ ११ ॥ ॥इति सप्तमी दीपक

विध्वस्तपापपटलस्य सदोदितस्य विश्वावलोकनकलाकलितस्य भक्त्या ॥ उ
द्वयेतयामि पुरतो जिननायकस्य दीपं तमःप्रशमनाय शमंभुराशेः॥१२॥ इति
दीपकपूजा ॥ तीर्थोदकैर्धुतमलैरमलस्वप्नावं शश्वन्नदीह्रदसरोवरसागरोडैः ॥
ध्वारमारमदमोहमहाहिताक्ष्यै संसारतापशमनाय जिनार्चयामि ॥ १२ ॥

पूजा ॥हे जिन! निरंतर निर्मल ठे स्वभाव जेमनो, कंदर्प तथा आठ मव अने मोह रूप
सर्पतेने हणवाने गरुड समान एवा तमने नदी, झर,सरोवर अने समुद् तेना निर्मल
पाणीयें करी संसारनो ताप शमाववाने अर्थे हुं पूछुं हुं ॥ १३ ॥ ॥ इत्यष्टमी जल

पूजा ॥ एतजाना महोटां आठ काव्यनीस्तुति ते नणीने ए पूर्वे कथो जे नलो विधि, ते वि
 धियं करी जे पूजा करे, ते पुण्यवंत आवक देवताना तथा मनुष्यना अखंड सुख पूर्ण
 नोगवीनें थोडा कालमां मोहना सुख प्रत्ये पामे ॥ १३ ॥ ॥ इति पूजाष्टकम् ॥
 इति जलपूजा ॥ पूजाठकरस्तुतिमिमामसमामधीत्य योऽनेन चारुविधिना वित
 नोति पूजाम् ॥ नुक्का नरामरसुखान्यविविक्तानि धन्यः सुवासमचिराद्भ
 न्नते शिवेऽपि ॥ १३ ॥ इति पूजाठकम् ॥ शुचिप्रदेशे निःशक्ये कुर्याद्विवालयं सु
 धीः ॥ सौधे यातां वामभागे सार्धहस्तोच्चनूमिके ॥ १४ ॥ पूर्वोशाभिमुखोऽ
 र्यासु उत्तराभिमुखोऽथवा ॥ विदिशासंमुखो नैव दक्षिणां वर्जयेद्विशम् ॥ १५ ॥
 घरमां जातां ते माघे द्वाये दोह हाथ वंची धरतीने विषे शक्य रहित एवा पवित्र स्था
 नकं पंक्तिजन देरासर करे ॥ १४ ॥ ॥ पूजानो करनार पूर्वदिशि साहामो अथवा
 उत्तरदिशि साहामो वेसे; पण विदिशिनी साहामो न वेसे; अने दक्षिणदिशि वर्जे ॥

॥ १५ ॥ ॥ पूर्वदिशि साहसो वेसी पूजा करे तो लक्ष्मी पामे, अग्निखुरे संताप पामे, दक्षिण दिशिये मरण पामे, अग्ने नैरुते खुरे उपड्व उपजे ॥ १६ ॥ ॥ पश्चिम दिशिये पुत्रनुं डःख होय, वाडु खुरे संतान न होय, उत्तर दिशिये घणो लाज थाय, पूर्वस्यां लभते लक्ष्मीभक्तौ संतापसंभवः ॥ दक्षिणस्यां भवेन्मृत्युर्नैर्ऋते स्याड् पड्वः ॥ १६ ॥ पश्चिमायां पुत्रडुःखं वायव्यां स्यादसंततिः ॥ उत्तरस्यां महा लाज ईशान्यां धाम्नि नो वसेत् ॥ १७ ॥ अग्निजालुकरांसेषु मस्तके च यथा क्रमम् ॥ विधेया प्रथमं पूजा जिनेन्द्रस्य विवेकिनिः ॥ १८ ॥ सचंदनं च काश्मी रं विनार्चा न विरच्यते ॥ ललाटकं वहदये जठरे तिळकं पुनः ॥ १९ ॥ ॥

ईशान खुरे धरने धिपे न रहे ॥ १७ ॥ ॥ वे पण, वे ढीचण, वे हाथ, वे खजा अग्ने एक मस्तक ए नये अंगे अनुक्रमे नाबा पाथाथी विवेकी आवके श्रीजिनेइनी प्रथम पूजा करवी ॥ १८ ॥ ॥ ललाचंदन अग्ने सारा केशर विना पूजा न करवी, वली ल

लाटे, कंठे, हृदये अने पेट कपर श्रीजगवंतने तिलक करे ॥१९॥ ॥ प्रजातें पवित्र
 यास करे, वे पोहोरें फूलनी पूजा करे, तेम साजें धूप दीप करी पूजा करे एम पंनि
 तें त्रिकाल पूजा करवी ॥ ३० ॥ ॥ पूजा करतां एक फूलना बे कटका न करवा, क
 प्रजाते शुध्वासिन मध्यह्ने कुसुमैस्तथा ॥ संध्यायां धूपदीपाभ्यां विधेयार्चा
 मनीपिभिः ॥ ३० ॥ नैकं पुष्पं विधा कुर्यान्न विन्द्यात्कलिकामपि ॥ पत्रकुञ्जालभे
 देन हत्वावत्पातकं भवेत् ॥ ३१ ॥ हस्तात्प्रस्वखितं पुष्पं जग्ने पादेऽथवा मु
 वि ॥ शीर्षोपरि धृतं यच्च तत्पूजादौ न कर्द्दिचित् ॥३२॥ निर्गन्धमुग्रगन्धं च त
 त्याज्यं कुसुमं समम् ॥ स्पष्टं नीचजनैर्दष्टं कीटैः कुवसनैर्धृतम् ॥ ३३ ॥

डी पण ठेकवी नही, पत्रथी फूल जूडं न करबुं. एम करवाथी हत्या सरखुं पाप लागे
 ॥ ३१ ॥ ॥ हाथथी पडी गयेबुं, जेने पग लाग्यो, जे चूमियें पडबुं, तथा जे मस्तक
 उपर आबुं, एबुं जे फूल ते पूजायोम्य कहेवाय नही ॥ ३२ ॥ ॥ गंध रहित, उग्र

करी जे जगवंतनी पूजा ठे तेने रुडा जीव जला पर्वने दिवसं करे, अथवा तीर्थं जइने
 करे, अने प्रथम कही जे उत्तम आव प्रकारनी पूजा ते नित्य करवी, तथा बीजी
 पण वली जे जे नली वस्तु होय ते जावें करी पूजामां जोडीयें ॥ ३६ ॥ ॥
 तेवार पढी विशेष थकी धर्म पामवानी इहाएं अपवित्र मार्गं प्रत्ये मूक्तो, धौतवत्त्व
 यन्ति पूजां भव्याः सुपर्वदिवसेऽपि च तीर्थयोगे ॥ पूर्वोक्तचारुविधिनाष्टविधां
 च नित्यं यद्यद्वरं तद्विद् जाववशेन योज्यम् ॥ ३६ ॥ ग्रामचैत्यं ततो ग्रायाद्विशे
 पाधर्मलिप्सया ॥ त्यजन्नशुचिमध्वानं धौतवत्त्वेण शोभितः ॥ ३७ ॥ यास्या
 मीति हृदि ध्यायंश्चातुर्यं फलमभ्युते ॥ उचितो लभते पाठं त्वाष्टमं पथि च
 पहेरवे करी शोचतो गामना देरासरने विप्रे जाय ॥ ३७ ॥ ॥ देरासरें जइयुं एम मनमां
 धरतो थकी चोयनुं एटले एक उपवासनुं फल पामे, अने जेवारें देरासरें जावाने जते
 तेवारें बछुं फल थाय, देरासरने मांगें जातां अष्टम फलनो लाभ थाय ॥ ३७ ॥ ॥

देरासरने दीठे थके दशमनो एटले चार उपवासनो लाज थाय, देरासरने बारयो गया
थकां डुवादसनो लाज थाय, देरासरनी मांहे प्रवेश करे त्यारें पत्तर उपवासनो लाज
थाय, जगवानने पूजतां मासखमणनो लाज थाय ॥ ३ए ॥ ॥ पढी त्रणवार निसि
ही कहीने पंफित होय ते देरासरमां प्रवेश करे, तिहां देरासरनी विंता प्रत्ये करीने पढी
व्रजन ॥ ३७ ॥ दृष्टे चैत्ये च दशमं घारे दशकं लजेत् ॥ मध्ये पद्मोपवास
स्य मासस्य च जिनार्चने ॥ ३ए ॥ तिस्रो नैपेधिकीः कृत्वा चैत्यं तत्प्रविशेत्सु
धीः ॥ चैत्यचिंतां विधायाथ पूजयेद्भूजिनं मुदा ॥ ४० ॥ मूलनायकमश्र्यर्च्य
अष्टार्द्धत्प्रतिमाः पराः ॥ पूजयेच्चारुषुष्पौघैः शिष्टाश्चांतर्बहिःस्थिताः ॥ ४१ ॥
अवग्रहबहिर्गत्वा वन्देतार्द्धन्तमादरात् ॥ विधिना पुरतः स्थित्वा रचयेच्चैत्य
दूर्ध्वं करी श्रीजगवंतने पूजे ॥ ४० ॥ ॥ प्रथम आव प्रकारें जला फुलना समूहें करी
श्रीमूलनायकजीनी प्रतिमा पूजीने पढी अनुक्रमें बीजी आव बाहिरनी प्रतिमा प्रत्ये
पूजे ॥ ४१ ॥ ॥ पढी अवग्रहथी बाहेर जइने आवरथी श्रीअरिंहंतने वांटे, पढी

विधियै सहित आगल रहीने चैत्यवंदन करे ॥ ४१ ॥ ॥ एक नमोबुधैकरी प्रथम
 जधन्य चैत्यवंदन जाएहुं, वे नमोबुधैकरी वीजुं मथ्यम चैत्यवंदन जाएहुं, पांच न
 मोबुधैकरी वीजुं उत्तम चैत्यवंदन जाएहुं. वीजां पण त्रण प्रकारें चैत्यवंदन ठे,
 ते कहे ते ॥ ४३ ॥ ॥ नमोबुधैकरी पाठ योगमुशयें नशीजें, तथा जावंति चेश्चाइं
 वन्दनम् ॥ ४२ ॥ एकशस्तु जधन्या स्याद् द्वाभ्यां भवति मध्यमा ॥ पञ्चचि
 स्तूतमा शैवा जायते सा त्रिधा पुनः ॥ ४३ ॥ स्तुतिपाठे योगमुखा जिनमुखा
 तु वन्दने ॥ मुक्ताशुक्तिकमुखा तु प्रणिधाने प्रयुज्यते ॥ ४४ ॥ उदरे कूर्परी
 न्यस्य कृत्वा कोशाकृती करौ ॥ अन्योन्याङ्गुलिसंश्लेषाद्योगमुखा भवेदियम्
 ॥ ४५ ॥ पुरोगुलानि चत्वारि पश्चादूनानि तानि तु ॥ अचस्थितिः पादयोर्या
 ए पाठ जिनमुशयें नएवो, तथा जयवीररायनो पाठ मुक्ताशुक्ति मुशयें नशीयें ॥ ४४ ॥
 वेदने विषे कृणी यापीने कमलना मोफने आकारें वे हाथ करीने मांहीमांहे आं
 गली भेलियें ए प्रथम योगमुश होय ॥ ४५ ॥ ॥ चार अंगुल आगली आंगलीनी

देरासरने द्वीठे शके दशमनो एटले चार उपवासनो लाज थाय, देरासरने बारणो गया
 शकां डुवाइसनो लाज थाय, देरासरनी मांहे प्रवेश करे त्यारें पन्नर उपवासनो लाज
 थाय, जगवानने पूजतां मासखमणनो लाज थाय ॥ ३ए ॥ ॥ पढी त्रणवार निसि
 ढी कह्नीने पंफित होय ते देरासरमां प्रवेश करे, तिहां देरासरनी चिंता प्रत्ये करीने पढी
 व्रजन् ॥ ३७ ॥ दृष्टे चैत्ये च दशमं घारे घादशकं लभेत् ॥ मध्ये पद्दोपवास
 स्य मासस्य च जिनार्चने ॥ ३ए ॥ तिस्रो नैपेधिकीः कृत्वा चैत्यं तत्प्रविशोत्सु
 धीः ॥ चैत्यचिंतां विधायाय पूजयेद्ब्रूजिनं मुदा ॥ ४० ॥ मूलनायकमभ्यर्च्य
 अष्टार्द्धप्रतिमाः पराः ॥ पूजयेच्चारुपुष्पाधैः शिष्टाश्चांतर्बहिःस्थिताः ॥ ४१ ॥
 अवग्रहाब्दहिर्गला वन्देतार्द्धन्तमादरात् ॥ विधिना पुरतः स्थित्वा रचयेच्चैत्य
 हर्षे करी श्रीजगवंतने पूजे ॥ ४० ॥ ॥ प्रथम आठ प्रकारें जला फूलना समूहें करी
 श्रीमूलनायकजीनी प्रतिमा पूजीने पढी अनुक्रमें बीजी आठ बाहिरनी प्रतिमा प्रत्ये
 पूजे ॥ ४१ ॥ ॥ पढी अवग्रहथी बाहेर जइने आदरथी श्रीअरिहंतने वांढे, पढी

विधियं सहित आगल रहीने चैत्यवंदन करे ॥ ४२ ॥ ॥ एक नमोऽनुऐकरी प्रथम
 जगन्य चैत्यवंदन जाणहुं, वे नमोऽनुऐकरी वीछुं मध्यम चैत्यवंदन जाणहुं, पांच न
 मोऽनुऐकरी त्रीछुं उत्तम चैत्यवंदन जाणहुं. वीजां पण त्रए प्रकारं चैत्यवंदन ठे,
 ते कहे ठे ॥ ४३ ॥ ॥ नमोऽनुऐकरी पाठ योगसुशयें नएजिं, तथा जावंति चेश्चाइं
 वन्दनम् ॥ ४५ ॥ एकशस्तु जघन्या स्याद् षष्ठां भवति मध्यमा ॥ पञ्चमि
 स्तूतमा इया जायते सा त्रिधा पुनः ॥ ४३ ॥ स्तुतिपाठे योगसुश जिनसुश
 तु वन्दने ॥ सुक्ताशुक्तिकसुश तु प्रणिधाने प्रयुज्यते ॥ ४४ ॥ उदरे कूर्परौ
 न्यस्य कृत्वा कोशाकृती करौ ॥ अन्योन्याङ्गुलिसंश्लेषाद्योगसुश भवेदियम्
 ॥ ४५ ॥ पुरोगुलानि चत्वारि पश्चादूनानि तानि तु ॥ अवस्थितिः पादयोर्या
 ए पाठ जिनसुशयें नएवो, तथा जयवीथरायनो पाठ सुक्ताशुक्ति सुशयें नएयें ॥ ४४ ॥
 षेटने निणे कृणी थापीने कमलना मोराने आकारें वे हाथ करीने मांहोमांहे आं
 गली नेलियें ए प्रथम योगसुश होय ॥ ४५ ॥ ॥ चार अंगुल आगली आंगलीनी

बाजुयें पग पोहोला राखीयें, अने पावला पानीना जाग तरफ चार अंगुलथी कांइक उठा पग पोहोला राखीयें, ए रीतें जे पगलुं थापलुं, ते बीली जिनमुझा कहीयें ॥ ४६ ॥
 बे गोवणनी वच्चें रहेला तथा मोती पाकवानी बे ठीपो जेम जोडेली होय तेनी जेवा आकार वाला अने पोताना कपालने लगाडेला जेमां बे हाथ होय; ए जिनमुडेयमीरिता ॥ ४६ ॥ सुक्ताशुक्तिसमाकारौ जानुगर्भस्थितौ समौ ॥ लालजमौ हस्तौ यौ सुक्ताशुक्तिरियं मता ॥ ४७ ॥ नत्वा जिनवरं यायाजदन्ना वश्यकीं गृहम् ॥ अश्रीयाह्न्युभिः सार्धं नक्ष्यानक्षयविचक्षणः ॥ ४८ ॥ अर्धौतपादः क्रोधान्धो वदन् डुर्वचनानि यत् ॥ दक्षिणामिसुखो भुंक्ते तस्याघातं सुक्ताच्छक्ति नामक मुश इानी पुरुषार्थे मानेली ठे ॥ ४९ ॥ ॥ जगवंतने नमीनें आव साहि कहेतो थको पोताना घर प्रत्ये जाय, त्यां जइने ते माह्यो श्रावक नह अजदने उलखतो थको पोताना बांधवो सार्थे जसे ॥ ४९ ॥ ॥ पग धोया विना, रीतें अंध थको,

मुख्यमांश्री मातां वचन बोलतो थको जे दक्षिण दिशिनी साहासो वेसी जमे ते राक्षस
 नोजन कहीयें ॥ ४९ ॥ ॥ अंग पवित्र करी चुनस्थानकें, निश्चल आसने वेगो थको,
 देव गुरुने संचारतो थको जे जमे ते नोजनने मनुष्यनुं नोजन कहीयें ॥ ५० ॥ ॥
 स्नान, तथा देवपूजा करीने, पूज्य जे पोताना माता पिता आदि तेने नमीने, हर्ष सहित
 सनोजनम् ॥ ४९ ॥ पवित्रांगः शुभे स्थाने निविष्टो निश्चलः शनैः ॥ स्मृत
 देवगुरुर्भुङ्क्ते तत्स्थान्मानुषनोजनम् ॥ ५० ॥ स्नात्वा देवान् समभ्यर्च्य न
 त्वापूज्य जनान्मुदा ॥ दत्त्वा दानं सुपात्रेभ्यो भुङ्क्ते भुङ्क्ते तदुत्तमम् ॥ ५१ ॥ नोज
 ने मँद्युने स्थाने वमने दन्तधावने ॥ विष्णूत्रोत्सर्गकाले च मौनं कुर्यान्महाम
 सुपात्रने दान देशने जे जमबुं तेने उत्तम देवनोजन जाणुं ॥ ५१ ॥ ॥ महोटी बु
 धिना धणीयें एक नोजन करतां, वीजुं स्त्रीसेवा करतां, त्रीजा वमनने विपे, चोछुं
 दातण करतां, पांचमी वडीनीत करतां, ठठी लघुनीत करतां, एटले स्थानकें बोजुं

नही ॥ ५२ ॥ ॥ अग्निषुण, नैरुतसुण अने दक्षिणदिशि आत्रणदिशा जोजनमां
वर्ज्य ठे, तथा रविना अस्तवेलायें, उदय वेलायें, ग्रहण पर्व होय त्यारें अथवा आप
णां ज्ञाति बांधवमां शव ज्यां सुधी पढ्युं होय त्यां सुधी जमवुं नही ॥ ५३ ॥ ॥ जे
ठते इब्धें जोजनादिकने विपे कृपणपणुं करे, ते मूर्खबुधियालो जाणवो. ते देवने काजें धन
तिः ॥ ५५ ॥ आग्नेयीं नैर्ऋतिं नृको दक्षिणां वर्जयेद्विशम् ॥ सांध्ये ग्रहणका
ले च स्वजनादेः शवस्थितौ ॥५३॥ कार्पण्यं कुरुते यो हि भोजनादौ धने स
ति ॥ मन्ये मन्दमतिस्सोत्र देवाय धनमर्जति ॥ ५४ ॥ अज्ञातभ्राजने नाद्याद्
जातिअष्टगृह्णेऽपि च ॥ अज्ञातानि निषिद्धानि फलान्यन्नानि संत्यजेत् ॥५५॥
बालस्त्रीभ्रूणगोहृत्याकृतमाचारलोपिनाम् ॥ स्वगोत्रभेदिनां पत्नी जानन्नोपवि
कमावे ठे? ॥५६॥ ॥ अजाणा शाली प्रमुख चाजनमां जमवुं नही, जे ज्ञाति थकी
त्रष्ट थयो होय तेने घेर जमवुं नही. अजाण्यां, जगवतें नियेथ्यां एवां फल तथा अन्न
ढांने, त्याग करे ॥५५॥ ॥ जे पंक्ति होय ते, १ बाल, २ स्त्री, ३ गर्भ, ४ गो, एनी

हत्याना करनार, आचारना लोपनार, अथवा पोताना कुंलनो त्याग करनार एटला
नी पंक्तिमां जाणतो थको जमवा वेसे नही ॥ ५६ ॥ ॥ मडिरा, मांस, माखण,
मधु, पांच जातिनां चंवरनां जाडनां फल, अनंतकाय, सर्व जातिनां अजाण्यां फल त
था रात्रें नोजन ए सर्वदा वर्ज्य ठे ॥ ५७ ॥ ॥ काचो गोरस ते बास दहि इत्यादि

शेत्सुधीः ॥ ५६ ॥ मद्यं मांसं नवनीतं मधुंशुवरपञ्चकम् ॥ अज्ञातकायमज्ञा
तफलं रात्रौ च नोजनम् ॥ ५७ ॥ आमगोरससंयुक्तं विदलं पुष्पितौदनम् ॥ द
भ्यहोदितयातीनं कुथितान्नं च वर्जयेत् ॥ ५८ ॥ जन्तुमिश्रं फलं पुष्पं पत्रं चा
न्यदपि त्यजेत् ॥ संधानमपि संसक्ति जिनधर्मपरायणः ॥ ५९ ॥ ॥

तेणें करी सहित कवोन चीज, सडी गयेलुं अन्न, वे दिवस उपरांतुं दही तथा को
दीयुं कुत्सित अन्न ए सर्व वर्जन करे ॥ ५८ ॥ ॥ श्रीलिन धर्मने विषे रक्त धर्येलो
आनक फल कून तथा पान अने बीजा पण जे पदार्थ जीवाहिसहित होय ते सर्व

आ०३०
॥९८॥

त्यागे, न खाय; तथा अथाणा प्रमुख बायीश अचक्ष्य बांके ॥ ५९ ॥ ॥ नोज
न करतां तथा वडी नीत करतां घणो वयत लगाडे नही, तथा पाणी पीवुं, अने स्ना
न करवुं, ए वे वानां स्थिरतायें हलवे हलवे करीयें ॥ ६० ॥ ॥ नोजननी आदिमां
पाणी पीवुं ते विप सरखुं ठे, तथा नोजननें अंतें पाणी पीवुं ते शिला सरखुं ठे, अने
नोजनं विड्विमोदं च कुर्यादितिचिरं नहि। वारिपानं तथा स्नानं पुनः स्थिरतया
सृजेत् ॥ ६० ॥ नोजनादौ विपसमं नोजनान्ते शिलोपमम् ॥ मध्ये पीयूषसदृशं
वारिपानं त्रवेद्विधा ॥ ६१ ॥ अजीर्णीं नोजनं जह्यात् कालेऽक्षीयाच्च साम्प्रतः ॥
भुक्तोऽहितो वक्रगुर्धि पत्रपूगादिभिः सृजेत् ॥ ६२ ॥ विवेकवान्न ताम्बूलम
नोजननी वचसां पाणी पीवुं ते अमृत सरखुं ठे. ए रीतें पाणी पीवानुं फल जाणवुं
॥ ६१ ॥ ॥ अजीर्णं होय तेवारें नोजन न करवुं, जेवुं रुचे तेवुं नोजन कार्जे करे. जमी
उठ्या पठी मुख धोइने पान सोपारीयें करी मुख शुध करे ॥ ६२ ॥ ॥ विवेकी पुरुष

वर्ग २

॥९८॥

मार्गं चालतो थको नंबोल न खाय, तथा पुण्यवंत होय ते आखी सोपारी वगेरेने दांतें
 करी जांजे नही ॥ ६३ ॥ ॥ जम्या पठी उनाजाविना निश करे नही, केमके, दिवसें
 सूवा थकी शरीरने विपे रोगोत्पत्ति आय ॥ ६४ ॥ ॥ इति श्रीआचारोपदेशे द्वितीय
 श्रीत्राधिकरण्यत्रि ॥ पूगाद्यमहत्तं दंतैर्दलयेन्न तु पुण्यवित् ॥ ६३ ॥ भोजनादनु
 नो स्वप्याधिना ग्रीष्मं विचारवान् ॥ दिवा स्वपयतो देहे जायते व्याधिसंभवः
 ॥ ६४ ॥ इति श्रीआचारोपदेशे द्वितीयर्गः समाप्तः ॥ ७ ॥ अथ तृतीयव
 र्गप्रारंभः ॥ ततो गेहे श्रियं फयन् विघ्नोष्ठीपरायणः ॥ सुतादिभ्यो दद्विह्नां
 मुखं तिष्ठेद्वटीद्वयम् ॥ २ ॥ अल्मायत्ते गुणश्रामे देवायत्ते धनादिके ॥ वि
 वर्गे संपूर्णः ॥ ३ ॥ तेवार पठी वरनी शोचाप्रत्यं जोतो थको पंभित्तनी साथे वात चित कर
 तो, पुत्रादिकने शीखामण देतो सुखें समाधें ने घडी पर्यंत घरने विपे रहे ॥ १ ॥
 गुणनो समूह पोताने वश ठे, अने धनादिक तो चायने हाथें ठे, एम समस्त

तत्त्व जाय्यां ठे जेणे एवा माणसने गुणनी हाणी न थाय ॥ ३ ॥ ॥ कुलहीन मा
 णस पण गुणै करी उत्तमता पामे, जेम कचराशी उत्पन्न थयेल्लुं कमल मस्तकें चढे
 ठे, अने कचरो ठे ते पणें घसाय ठे ॥ ३ ॥ ॥ उत्तम माणसनी कोइ खाण नथी,
 संसारमां उत्तम माणसहुं कोइ कुल नथी, मनुष्य मात्र पोताने सचावें गुणेकरीज
 डाताखिलतत्वानां नृणां न स्याद्गुणच्युतिः ॥ २ ॥ गुणैरुत्तमतां याति वंशही
 नोऽपि मानवः ॥ पंकर्जं ध्रियते मूर्ध्नि पङ्कः पादेन घृष्यते ॥ ३ ॥ न काचिद्धत्तमा
 नां स्यात् कुलं वान्यगतिः क्वचित् ॥ प्रकृत्या मानवा एव गुणैर्यीति जगन्नु
 तित्म् ॥४॥ सत्वादिगुणसंपन्नो राज्याहः स्याद्यथा नरः ॥ एकविंशतिगुणः स्या
 धर्मर्ही मानवस्तथा ॥ ५ ॥ अद्भुत्तद्भयः सौम्यो रूपवान् जनवद्वचनः ॥ अ
 जगत्मां स्तववा योग्य थाय ठे ॥ ४ ॥ ॥ सत्वादिक गुणें संपन्न पुरुष ते जेम रा
 ज्ययोग्य होय, तेम श्रावकना एकविंश गुणें सहित माणस ते धर्मयोग्य होय
 ॥ ५ ॥ ॥ जेहुं कुइ तद्भय न होय ते अद्भुत् नामा प्रथम गुण, १ सौम्य होय,

३ रूपवन्त होय, ४ सर्वलोकने वाहालो होय, ५ क्रूर न होय, ६ संसारथी वीथे, ७ मू-
 र्ख न होय, ८ सदा दाक्षिण्यवन्त होय ॥ ६ ॥ ॥ ए लज्जावन्त होय, १० दया सहि-
 त होय, ११ कोइ ऊपर राग द्वेष न करे, १२ सौम्य नजर होय, १३ गुणनो रागी
 होय, १४ चली धर्मकथा सहित होय, १५ चला परिवारवालो होय, १६ दीर्घदृष्टि
 करी भवनीरुआशतो दाक्षिण्यवान् सदा ॥ ६ ॥ अपत्रपी च सदयो मध्यस्थः
 सौम्य एव च ॥ गुणरागी सत्कथश्च सुपत्नो दीर्घदर्शपि ॥ ७ ॥ वृक्षानुगतो
 विनीतः कृतज्ञः सुद्वितीऽपि च ॥ लब्धलक्षो धर्मरत्नयोग्य एभिर्गुणैर्भवेत्
 ॥ ८ ॥ प्रायेण राजदेशस्त्रीभक्तवार्ता त्यजेत्सुधीः ॥ ततो नार्यागमः कश्चित्
 ते नृनो विचार करनार होय ॥ ७ ॥ ॥ १७ वृद्ध माणसने माननार होय, १८ वि-
 नयवन्त होय, १९ करेला उपकारनो जाण होय, २० परम हितार्थ होय, २१ सर्व
 नातना चेदमां समजे ए एकवीणि गुणें करी सहित आवक धर्मरत्नने योग्य होय ॥ ८ ॥
 जे पंक्ति ते प्रायें राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा अने भक्तकथानो त्याग करे, केम के,

तेषी अर्थप्राप्ति कंइ धंती नथी अटलुंज नही, परंतु सामो अनर्थ उपजे ठे ॥ए॥ ॥
रूढा मित्र सार्थे जाइ सार्थे मांहोमांहे धर्मवार्त्ता करे, जे धर्मानां शास्त्र जाणतो होय
तेनी पासें बेसे, तत्त्वना जाव जाणे, विचारे ॥ १० ॥ ॥ जेथकी पापनी बुद्धि ऊप
जे तेनी संगति न करे, कोइ कोधने वचनें कहे तोपण पोतें न्यायमार्ग न सूके ॥११॥
प्रत्युतानर्थसंभवः ॥ ए ॥ सुमित्रैर्बन्धुभिः सार्धं कुर्याद्धर्मकथामपि ॥ तद्विदा
सह शास्त्रार्थरहस्यानि विचारयेत् ॥ १० ॥ पापबुद्धिर्भवेद्यस्माद्धर्जयेत्तस्य सं
गतिम् ॥ कोपेन वचनेनापि न्यायं मुञ्चेन्न कर्हिचित् ॥ ११ ॥ अवरणवादकस्या
पि न वदेद्धतमाग्रणीः ॥ पित्रागुरोः स्वामिनोऽपि राजादिषु विशेषतः ॥ १२ ॥
मूर्खैर्दुष्टैरनाचारैर्मलिनैर्धर्मनिन्दकैः ॥ दुःशीलैर्लोभनिश्चरैः संगतिं वर्जयेद्
जे उत्तम मनुष्य पंथित ते कोइनो अवगुण कहे नही; माता, पिता, गुरु, शेर अने
स्वामीना अवगुण बोले नही, वली विशेषे राजादिकनो अवगुण न बोले ॥ १२ ॥
मूर्खनी, दुष्टनी, अनाचारीनी, मलीननी, धर्मेना निंदकनी, कुशीलवालानी, लोनी

नी. चोरनी एटलानी संगति वर्द्धन करे ॥ १३ ॥ ॥ अजाण्या माणसनी प्रशंसा क
 र्थी, अजाण्या माणसने पोताना घरमां रहेया स्थानक आपडुं, अजाण्यां कुलसार्थे
 सगाई करवी, अजाण्या माणसने चाकर राखवो, पोताथी मोहोटा माणस उपर कोप
 करयो, पोताथी मोटा बेरी साथे मत्सर राखवो, गुणवान् सार्थे विवाद करवो, पोता
 थी मोढोदो चाकर राखवो, सार्थे देडुं करीने धर्म करवो, व्याजें उढीतुं उधारुंधन आ
 वाम् ॥ १३ ॥ अज्ञातस्योल्कीर्तनं यत् स्यानदानं तथाविधम् ॥ अज्ञातकुल
 संबन्धोऽज्ञातभृत्यस्य रक्षणम् ॥ १४ ॥ महत्सु कोपकरणं महता विशद्वस्त
 आ ॥ विवादो गुणिनिः सार्धं स्वोच्चभृत्यस्य संग्रहः ॥ १५ ॥ कृणुं कृत्वा धर्म
 पी मागवुं नही, स्वजन सार्थे विरोध करवो, पारका माणस सार्थे स्नेह प्रीति राखवी,
 नंचा क्रियायें न चढे मोदने अर्थे. चाकरने दंभीने धन चोगवुं, दारिद्र आवे थके जाई
 चांथवनो आश्रय करवो, पोते पोताना गुणनां बखाण करवां, पोतें वात कही पोते
 ज हसवुं, जे ते वस्तु खावी, ए सर्व आलोकमां तथा परलोकमां विरुद्ध एवां मूर्खनां

आ० उ०
॥१०१॥

लक्ष्मणो तद्वन त्याग करवो ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥
 न्यायं धन उपार्जे, चर्यायं चालतो धको देश विरुद्ध अने कालविरुद्ध कार्यने बांने,
 त्यागे; राजाना वैरीनी संगत न करे, घणा माणस सार्थे विरोध न करे ॥ १९ ॥ ॥ कुल
 कृत्यं कुसीदिस्याप्ययाचनम् ॥ विरोधः स्वजनैः सार्धं मैत्री चापि परैर्नरैः ॥
 ॥ २६ ॥ ऊर्ध्वारोहणमोक्षार्थं भुक्तिर्भृत्यस्य दंरुनात् ॥ दौस्थ्ये बंधोराश्रयश्च
 स्वयं स्वयुएवर्षणम् ॥ २७ ॥ उक्त्वा स्वयं च हसनं यस्य कस्यापि नक्षणम् ॥
 एतानि च विरुधानि मूर्खचिह्नानि संत्यजेत् ॥ २८ ॥ न्यायार्जितधनश्चर्या
 मदेशकालकौ त्यजेत् ॥ राजविधेपिभिः संगं विरोधं च गणैः समम् ॥ २९ ॥ अ
 न्यगौत्रैर्विवाहं च शीलाचारकुलैः समैः ॥ सुभ्रातिवेश्मके स्थाने कृतवेश्मान्वि
 अने आचार जे शील ते जेना पोता सरखा होय एवा अव्यगोत्र सार्धं विवाह करे,
 बली जला पाडोशीने स्थानकें घर वनावीने बांधव सहित रहे ॥ ३० ॥ ॥ ॥ ॥

उपद्रवना स्थानकनो त्याग करे, तथा आवक योग्य स्वरच करे, इव्यने अनुसारे वस्त्रा
 दिक पहेरवां, लोक निंदा करे ते काममां प्रवर्ते नही ॥ ११ ॥ ॥ देशने आचा
 रं चालतो पोतानो धर्म न मूके, जे पोताने आशरे रह्यो होय तेनुं हित करे, पोतानुं
 वज्र अने निर्वाज पणुं जाणे, वज्री हित अने अहितनी वातने विगोपें जाणे ॥ १२ ॥
 तः स्वकैः ॥ १० ॥ उपद्रुतस्य त्यजनं, यथायं च व्ययं चरेत् ॥ वेपं वित्तानुसारे
 णाप्रवृत्तो जनगर्हिते ॥ १२ ॥ देशचारं चरन् धर्मममुंचन्नाश्रिते हितः ॥ बजा
 वजं विजानन् स्वं विशेषाच्च हिताहितम् ॥ ११ ॥ वशीकृतेन्द्रियो देवे गुरो
 च गुरुचकिमान् ॥ यथावत्स्वजने दीनेऽतिथौ च प्रतिपत्तिकृत् ॥ १३ ॥ एवं
 विचारचातुर्यं रचयंश्चतुरैः समम् ॥ कियतीं कामयेद्द्र वेजां शृण्वन् शास्त्राणि
 पांच इंद्रियने नरा करे, देव गुरुनें विषे वणी नक्ति राखे, यथा योग्य पणे स्वजननी,
 वीननी अने अतिथीनी सेवा करे ॥ १३ ॥ एवा कह्या जे विचार तेनी चतुर्गई प्रत्यें करे,
 शास्त्रनें सांचलतो अथवा नणतो थको, चतुर माणसनी साथें केटलोएक बक्षत गमा

वे ॥ १४ ॥ ॥ बलतो इव्य कमाववानो उपाय करे परंतु जे जाग्यमां हशे ते मलशे
 एम कहीनें बेसी न रहे, केमके, उद्यम कशा विना जाग्यवंत पुरुषनुं जाग्य केवारें फले
 नही ! माटे उद्यम करवो ॥ १५ ॥ ॥ शुद्ध चोखे व्यवहारें करी व्यापार करतो सदै
 व रहे; खोटा तोल, खोटा माप, खोटां लेख प्रत्ये वजें ॥ १६ ॥ ॥ १ लीहालातुं
 वा नएणन् ॥१७॥ कुर्वन्नर्थार्जनोपायं न तिष्ठैद्वैवतत्परः ॥ उपक्रमं विना भाग्यं
 पुंसां फलति न क्वचित् ॥१८॥ शुद्धेन व्यवहारेण व्यवसायं सृजन् सदा ॥ कूट
 तोलं कूटमानं कूटलेख्यं च वर्जयेत् ॥१९॥ अंगारवनशकटनाटकस्फोटजीवि
 काम् ॥ दंतलादारसंकेशविषवाण्डिकानि च ॥ २० ॥ यंत्रपीडां निर्लीबन
 कर्म, १ वन कर्म, २ गाढातुं कर्म, ४ चाढातुं कर्म, ५ धरती फोडवातुं कर्म, ६ दांत
 कुवाण्डिक्य, ७ लाख कुवाण्डिक्य, ८ घृत तेल मधादिकतुं कुवाण्डिक्य, ९ केश कुवा
 ण्डिक्य अने १० विष कुवाण्डिक्य एना अपारनो त्याग करे ॥२१॥ ॥११ घाणीयंत्रमुख

१३ बलद्व समारवा कर्ण कंबल ठेदवा, १३ असती ते डुष्टदासी श्वान मार्जार प्रसुख
 पापीजीवोनुं पोषण करतुं, १४. दव लगाडवा, अने १५ सर, इह तथा तलावादिकता
 शोषण करवा ए पन्नरे कर्मादान पाप जाणीनें बांफवा ॥ ३७ ॥ ॥ लोखंफ, महुडा
 नां फूल, मदिरा, मधु प्रत्ये पण तेमज वली कंदमूल पान प्रसुख वस्तु व्यापार कर
 न, मसतीपोषणं तथा ॥ दवदानं सरःशोष इति पंचदश त्यजेत् ॥ ३८ ॥ ॥
 लोहं मधुकपुष्पाणि मदनं मात्तिकं तथा ॥ वाणिज्याय न गृह्णीयात् कंदान् प
 त्राणि वा सुधीः ॥ ३९ ॥ न रक्षेत्फाल्युनादूर्ध्वं न तिलानतसीमपि ॥ गुडदुप्परका
 दीनि जन्तुभानि घनागमे ॥ ३९ ॥ शकटं वा बलीवर्दान् नैव प्रावृषिवाहयेत् ॥

वाने अर्थे ग्रहण करे नही ॥ ३९ ॥ ॥ जे माह्यो श्रावक ते फागुण मास उपरांत
 तिल, अजशी, गोल, टोपरा प्रसुखने, घणां जीवोनी घात जाणीने चोमासे न राखे
 ॥ ३९ ॥ गाडी अथवा पोवीया प्रसुख चोमासामां खेडावे नही, तथा जीवनी हिंसा

नुं प्रायें कारण एतुं खेत्रवाडीनुं कर्म न करे ॥ ३१ ॥ ॥ व्याजबी मूल आवते व
 स्तु वेचवी, अधिको अधिको लान वांढवो नहा. केमके, घणुं मूल खावा जतां प्रायें
 मूलगा नाणानो पण नाश थाय ॥ ३२ ॥ ॥ कोइने उधारे आपीयें नही, घणो
 लान थाय तोपण घरेणा राख्या विना लोनेकरी निश्चें थकी कोइने व्याजें नाणुं
 प्राणिहिंसाकरं प्रायः कृषिकर्म न कारयेत् ॥ ३२ ॥ विक्रीणीयात्प्राप्तमूख्यं वा
 बेत्नेवाधिकं ततः ॥ अतिमूख्यकृतां प्रायो मूलनाशः प्रजायते ॥३३॥ उधरकं न
 प्रदद्यात् सति लाने महत्यपि ॥ कृते ग्रहणकाङ्क्षोन्नाम्न प्रदद्याध्नं खलु ॥ ३३ ॥
 जानन्स्तेयाहतं नैव गृह्णीयाध्मममर्षवित् ॥ वर्जयेत्तत्रतीरूपं व्यवहारं विवेक
 वान् ॥ ३४ ॥ तस्करैरत्यजैर्धूतैः, मलिनैः पतितैः समम् ॥ इहामुत्र हितं वांढ
 आपियें नही ॥ ३३ ॥ ॥ चोरीनी वस्तु आवी जाणीने धर्मनो जाण पुरुष वळें,
 तथा सरस निरस वस्तु जेल सेल करवी ते तत्प्रतिरूप व्यापार कहीयें, ते व्यापार
 प्रत्यें विचारवान् पुरुष वर्जे ॥ ३४ ॥ ॥ चोरसार्थे, चांगलसार्थे, धूर्त्तसार्थे मलिन

अंतःकरणवाला साथें, पापोंयें करी पतित अथेला साथें, आ लोक अने परलोकनेविषे
 हितनी इबा करनार प्राणीयें कोई पण प्रकारना व्यवहारनो त्याग करवो ॥ ३५ ॥
 पोतानी वस्तु वेचतो थको असत्य न बोले, सत्य बोले, बीजानी वस्तु छेतो थको
 संवकार दीधो ते प्रत्यें लोपे नही ॥ ३६ ॥ ॥ जे माह्यो होय ते अणदीठी वस्तुनो
 न, व्यवहारं परित्यजेत् ॥ ३७ ॥ विचारवान् विक्रीणानो वदेत् कूटक्यं नहि ॥
 आददानोऽन्यसक्तानि संत्यंकारं न लोपयेत् ॥ ३८ ॥ अदृष्टवस्तुनो नैव
 साटकं दृढयेत्सुधीः ॥ स्वर्णरत्नादिकं प्रायो नाददीतापरीक्षितम् ॥ ३९ ॥ रा
 जतेजो विना न स्वादनर्थापन्निवारणम् ॥ नृपाननुसरेत्तस्मात् पारवश्यमनाश्र
 यन् ॥ ४० ॥ तपस्विनं कविं वैद्यं मर्मज्ञं भोज्यकारकम् ॥ मंत्रकं निजपूज्यं च
 साठो सहसा निश्चित नही करे. सोनुं, रुणुं अने रत्न ए प्रायें अणपरत्वा खेवा नहि
 ॥ ४१ ॥ ॥ राजाना तेज विना अनर्थ अने आपदानो नाश न होय, माटे राजावि
 क्तनो आसरो खेवो, पण परवश पणुं बांफनुं, पोताने वश रेहनुं ॥ ४२ ॥ जे पंक्ति

होय तेणे ? तपस्वी, कवीश्वर, वैद्य, मर्मना जाण, रसोद् करनार, मंत्रवादी अने पोताना पूजनीक एटलाने कोपावतुं नही ॥ ३ए ॥ ॥ इव्यनो अर्थि इव्य पेदा क रवामां तत्पर थको घणा क्लेश तथा धर्मनुं अतिक्रमण करे नही, नीचनी सेवा प्रत्यै आचरे नही, तथा विश्वासघात करवो ते प्रत्यै आचरे नही ॥ ४० ॥

कोपयेजातु नो बुधः ॥ ३ए ॥ अतिक्लेशं च धर्मातिक्रमणं नीचसेवनम् ॥ विश्वस्तघातकरणं नाचरेदर्थतत्परः ॥ ४० ॥ आदाने च प्रदाने च न कुर्यादुक्त लोपनम् ॥ प्रतिष्ठां महतीं प्राति नरः स्ववचने स्थिरः ॥ ४१ ॥ धीरः स्ववस्तुना शोऽपि पादयेद्भिर्निजां गिरम् ॥ नाशयेत् स्वल्पजानार्थै वसुवत्स्यात्स छःसि

जेवड देवड करतां थकां पोताना बोलनो लोप न करे, पण पोतानुं वचन पाजे. केमके, जे माएस पोताना वचने, स्थिर होय, ते माएस घणी प्रतिष्ठा प्र त्यै पामे ॥ ४१ ॥ ॥ पंमित होय ते सर्व वस्तुनो नाश थतां पण पोतानी वाचा

प्रत्ये पाद्रे, षोडऱ लऱकने अर्थे जे पोतऱहुं बोडुं न पऱले, ते वसुरऱकऱनी परें डुःख
 पऱमे ॥ ४३ ॥ ॥ एवऱ वुवहऱरने वऱपे दऱवसनो चोथो प्रहर गमऱवे, तेवऱर पढी
 सऱहें वऱलु करवऱने पोतऱनऱ घर प्रत्ये जऱय ॥ ४३ ॥ ॥ एकऱसणुं, अंबऱल, उप
 वऱसनुं जेरें पञ्चकऱण कीडुं होय ते पडऱकमणुं करवऱने संधुऱकऱले सुनऱ महऱरऱकने
 तः ॥ ४५ ॥ एवं वुवहऱरपरऱ गऱमं तुर्यं च यऱपयेत् ॥ वैकऱलऱककृते गडुेदशु
 मंदऱरमऱत्मनः ॥ ४३ ॥ एकऱशनऱदऱकं येन प्रत्यऱरुथुऱनं कृतं भवेत् ॥ अऱवश्य
 ककृते सऱथं सुनऱस्थऱनमसुऱ व्रजेत् ॥ ४४ ॥ दऱवससुऱषुठमे ढऱगे कुर्यऱदऱकऱलऱ
 कं सुधीः ॥ प्रदुऱपसमये नैव नऱशुथऱनैव कुऱवऱदः ॥ ४५ ॥ चतुऱरऱरऱ खलु कर्माणऱ
 संधुऱकऱले वऱवर्जेयेत् ॥ अऱहऱरं मैथुनं नऱशऱं सुवऱधुऱयं च वऱशुऱषतः ॥ ४६ ॥
 स्थऱनके जऱय ॥ ४४ ॥ ॥ दऱवसने अऱठमे ढऱगे एटले चऱर षडी दऱवस ठते वऱलु
 करे, पण संधुऱ वेजऱये वऱलु करे नऱही, वली नऱहऱो मऱणस रऱत्रें सर्वथऱ जमे नऱही
 ॥ ४५ ॥ ॥ १ अऱहऱर, २ खीसेवऱ, ३ नऱशऱ अने ४ वऱशुऱषे करी सुवऱधुऱय ए चऱर

कर्म निश्चैकरी संध्याकाले वर्जन करे ॥ ४६ ॥ ॥ जो संध्याकाले आहार करे तो व्याधि उपजे, मैथुन सेवा करे तो गर्भ दुष्ट थाय, निद्रा करे तो जूत प्रेत पिशाचनी पीडा थाय, अने जो सबाय करे तो बुद्धिनी हीनता थाय ॥ ४७ ॥ ॥ द्वियस चरि मनुं पञ्चक्राण वासु कीथा पढी करे; डुविहार, त्रिविहार, चत्रविहार प्रत्ये वज्जे, पञ्च

आहाराज्जायते व्याधिर्मैथुनाग्भञ्जुष्टता ॥ नूतपीडा निद्रया स्यात् स्वाध्याया बुद्धिहीनता ॥ ४७ ॥ प्रत्याख्यानं दुश्चरिमं कुर्यादैकालिकादनु ॥ द्विविधं त्रिविधं वापि चाहारं वर्जयेत्समम् ॥ ४८ ॥ अहो मुखेऽवसाने च यो द्वे द्वे घटि के त्यजेत् ॥ निशाभोजनदोषज्ञो विद्वेयः पुण्यभ्राजनम् ॥ ४९ ॥ करोति वि

क्राण करे ॥ ४८ ॥ ॥ रात्रि भोजन संबधि दोषना जाण होय ते प्रजातवेलानी तथा सांज वेलानी बे बे घडी वज्जे. रात्रिभोजनना दोषनो जाण होय ते पवित्र पुण्यहुं वाम जाणवो ॥ ४९ ॥ ॥ जे सदा सर्वदा रात्रिभोजनने विषे विरति एटले पञ्चक्रा

ए करे, ते पुरुषने धन्य ठे, कारण के ते पुरुषनुं अर्धुं आयुष्य अवश्य उपवासमां जाय, अर्थात् ते पुरुषनुं एक वर्षमां अर्धुं वर्ष उपवासमां जाय ॥ ५० ॥ ॥ जे मनुष्य दिवसें तथा रात्रिने विषे खातो शको रहे, ते मनुष्य प्रगट पयो सींगडा पूढा रहित एवा पशु एटले ढोरसमान जायवो ॥ ५१ ॥ ॥ रात्रिचोजनना करवाथी ते मनु

रतिं धन्यो यः सदा निशि भोजनात् ॥ सोर्धं पुरुषायुषस्य स्यादवश्यमुपोषि
तः ॥ ५० ॥ वासरे च रजन्यां च यः स्वादन्नवतिष्ठते ॥ शृंगपुह्वपरिभ्रष्टः स
स्पष्टं पशुरेव हि ॥ ५१ ॥ उलूककाकमार्जारगृध्रशंबरशूकराः ॥ अद्विष्टश्रिक
गोधाश्च जायते रात्रिभोजनात् ॥ ५२ ॥ नैवाहुतिर्न च स्नानं न श्राद्धं देवता

ष्य वृश्चड, काक, बिलाड मांजार, गृध, सांबर, सूअर, सर्प, विंदु अने गिरोलीना अत्र
तार पामे ॥ ५३ ॥ ॥ रात्रे होम न करवो, स्नान न करवुं, श्राद्ध न करवुं, देवपूजा
न करवी, दान पण रात्रे दीधुं निःफल आय, माटे न करवुं, अने विशेषे चोजन तो

नञ् करुं ॥ ५३ ॥ ॥ न्यायमार्गं शोभतो एवो पुरुष जो ए प्रकारे दिवसना चारे प्रहर
 पूरण करे, तो विनये करीने माह्यो ते पुरुष अक्षय मोक्षना सुखनो भजनार आय
 ॥ ५४ ॥ इति आचारोपदेशो तृतीय वर्ग संपूरण ॥ ३ ॥ ॥ शोडे पाणीये पग, हाथ
 र्चनम् ॥ दानं वा विहितं रात्रौ भोजनं तु विशेषतः ॥ ५३ ॥ एवं नयेद्यश्चतुरो
 ऽपि यामान् नयान्निरामः पुरुषो दिनस्य ॥ नयेन युक्तो विनयेन दक्षो भवे
 दसावच्युतसौख्यभाग् वै ॥ ५४ ॥ इति आचारोपदेशो तृतीयवर्गः ॥ ३ ॥
 ॥ अथ चतुर्थवर्गप्रारंभः ॥ प्रक्षाद्य स्वल्पनरिण पादौ हस्तौ तथा मुखम् ॥
 धन्यमन्यः पुनः सायं पूजयेद्भूजिनं मुदा ॥ १ ॥ सक्रियासहितं ज्ञानं जायते
 मोक्षसाधकम् ॥ जानन्निति पुनः सायं कुर्यादावश्यकं क्रियाम् ॥ २ ॥ ॥

तेमज सुखने पराजालीने आत्माने धन्य मानतो वली श्रीजिनेश्वरनी दुर्षेकरी पूजा
 करे ॥ १ ॥ ॥ नली क्रिया सहित जे ज्ञान ते मोक्षुं साधन थाय, एहुं जाणतो थ

को साजे पडिक्कमणानी क्रिया प्रत्ये करे ॥ ३ ॥ ॥ जेम स्त्री अने जोजनना सुखनो
जाण होय ते स्त्रीने नोगव्या विना अने जोजन खाथा विना मात्र जाणवाथीज सुखी
न थाय, तेम क्रिया विना एकडुं ज्ञान फलदायक नथी. क्रिया लोकने विपे फलनी आ
पनारी ठे, माटे मात्र नाम जाणवाथीज सुखी न थाय जेवारें क्रिया करे तेवारें नोगवी क

क्रियैव फलदा लोके न ज्ञानं फलदं मतम् ॥ यतः स्त्रीभक्ष्यभेदज्ञो न ज्ञानात्
सुखितो भवेत् ॥३॥ सुर्वजावे निजगृहे कुर्वीतावश्यकं सुधीः॥ विन्यस्य स्थापना
चार्यं नमस्कारावलीमथ ॥४॥ धर्माधि सर्वकार्योणि सिध्यन्तीति विदन् हृदि ॥

हेवाय, तेथी सुखी थाय ॥ ३ ॥ ॥ पंक्ति पुरुष जो गुरुनो योग न होय, तो पोताना
घरने विपे स्थापनाचार्य मांढीने, थापना न होय तो नोकरवाली थापीने पडिक्कमणुं
करे ॥ ४ ॥ ॥ धर्मथी सधला कार्यनी सिद्धि पासिये, एडुं हृदयने विपे जाणतो थ
को सदा सर्वदा धर्मने विपे चित्ते जेजुं एवो ते पुरुष धर्मनी वेळाने उल्लंघे नही

॥ ५ ॥ ॥ ते वेला वोल्या पाबी अथवा ते वेला आब्यानी पहेलाज जे जपादिक धर्म कर्म करीये, ते सर्व ऊखर खेत्रने विषे धान्य वाब्यानी परे निःफल थाय ॥ ६ ॥ ॥ पंक्ति बे ते सधली विधि प्रत्ये पूरण करीने धर्मनी क्रिया प्रत्ये करे; परंतु जे हीन ए टले उढुं अथवा अधिछुं करे ते मंत्रनी विधिनी परे दुःखीयो थाय, तेमज क्रिया आधी सवर्दा तजतस्वान्तो धर्मवेलां न लंघयेत् ॥५॥ अतीतानागतं कर्म क्रियते य ज्ञपादिकम् ॥ वापिते चोपरे क्षेत्रे धान्यवन्निष्फलं भवेत् ॥ ६ ॥ विधिं सम्यक् प्रयुञ्जित कुर्वन्धर्मक्रियां सुधीः ॥ हीनाधिकं सृजन्मंत्रं विधिवद् दूषितो भवेत् ॥ ७ ॥ धर्मानुष्ठानवैतथ्ये प्रत्युतानर्थसंभवः ॥ रौघ्रंघ्रादिजनकाहुप्रयुक्ता

पाबी करतां पण दुःखी थाय ॥ ७ ॥ ॥ धर्म करतां आधी पाबी क्रिया करतां सामो अनर्थ ऊपजे, जेम माठी रीते कीधुं औषधादिक ते उलढुं आकरा चांदा प्रसुख रो गने पेदा करे, तेम धर्म करतां जो क्रिया आधी पाबी करे तो सामो अनर्थ ऊपजे

॥ ७ ॥ ॥ वैयावच्च कीधाशी अह्य श्रेय मंगलिक शाय, बाहुवली बाहुनुं बल पाम्यो,
 चक्रवर्ती सरवाने हराव्या, ते वैयावचना प्रनावथीज अयुं, एम जाणीने पंफित
 आवक पडिक्कमणुं करीने पठी गुरुनी विसामणा ते वैयावृत्य प्रत्ये करे ॥ ६ ॥
 वल्ले करी मुखे मुखकोश बांधीने अण बोलतो, सर्व अंगना खेड प्रत्ये हरतो पोताना
 दिवौषधात् ॥ ७ ॥ वैयावृत्ये कृते श्रेयोऽह्यं मत्वा विचक्षणः ॥ विहितावश्यकः
 श्राद्धः कुर्यादिश्रामणां गुरोः ॥ ६ ॥ वस्त्राद्यतमुखो मौनी हरन् सर्वांगजं
 श्रमम् ॥ गुरुं संवाहयेद्यत्नात् पादस्पर्शं त्यजन्निजम् ॥ २० ॥ ग्रामचैत्ये जिने
 नत्वा ततो गढेस्त्वमंदिरम् ॥ प्रक्षालितपदः पंचपरमेष्ठिस्तुतिं स्मरेत् ॥ २१ ॥
 अर्हन्तः शरणं संतु सिंहाश्च शरणं मम ॥ शरणं जिनधर्मो मे साधवः शर
 पगनो फरस त्यजतो एतले गुरुने पण अण लगाडतो यत्तथी गुरुनी चरणसेवा
 करे ॥ १० ॥ ॥ गाममां देरासरै जगवंतने नमीने वल्लतो पोताने घरे जाय, तिहां
 पण धोऽने पंच परमेष्ठी नवकार प्रत्ये गणे ॥ ११ ॥ ॥ मुजने श्रीअरिहंत शरण हो

॥ ५ ॥ ॥ ते वेला वोढ्या पाठी अथवा ते वेला आव्यानी पहेलाज जे जपादिक धर्म कर्म करीये, ते सर्व ऊपर खेत्रने विषे धान्य वाव्यानी परे निःफल थाय ॥ ६ ॥ ॥ पंक्ति ठे ते सधली विधि प्रत्ये पूरण करीने धर्मेनी क्रिया प्रत्ये करे; परंतु जे हीन ए टले उढुं अथवा अधिक्कुं करे ते मंत्रनी विधिनी परे दुःखीयो थाय; तेमज क्रिया आधी सवर्दी तजतस्वान्तो धर्मवेळां न लंघयेत् ॥५॥ अतीतानागतं कर्म क्रियते य ऊपादिकम् ॥ वापिते चोषरे क्षेत्रे धान्यवनिष्फलं भवेत् ॥ ६ ॥ विधिं सम्यक् प्रयुञ्जित कुर्वन्धर्मक्रियां सुधीः ॥ हीनाधिकं सृजन्मंत्रं विधिवद् दूषितो भवेत् ॥ ७ ॥ धर्मानुष्ठानवैतथ्ये प्रत्युतानर्थसंभवः ॥ रौचंश्चादिजनकाहुप्रयुक्ता

पाठी करतां पण दुःखी थाय ॥ ७ ॥ ॥ धर्म करतां आधी पाठी क्रिया करतां सामो अनर्थ जपजे, जेम माठी रीते कीडुं औषयादिक ते उलटुं आकरा चांदा प्रमुख रो गने पेदा करे, तेम धर्म करतां जो क्रिया आधी पाठी करे तो सामो अनर्थ जपजे

॥ ८ ॥ ॥ वैयावत्र कीर्थायी अक्षय श्रेय मंगलिक आय, बाहुबली बाहुनुं बल पाम्यो,
 चक्रवर्ती सरखाने हराव्या, ते वैयावचना प्रजावधीज अयुं, एम जाणीने पंनित
 आवक पडिक्कमणुं करीने पठी गुरुनी विसामणा ते वैयावृत्य प्रत्ये करे ॥ ए ॥
 वल्ले करी सुल्ले सुखकोश बांधीने अण बोलतो, सर्व अंगना खेद प्रत्ये हरतो पोताना
 दिवौषधात् ॥ ८ ॥ वैयावृत्ये कृते श्रेयोऽक्षयं मत्वा विचक्षणः ॥ विहितावश्यकः
 श्राद्धः कुर्याद्विश्रामणां गुरोः ॥ ए ॥ वस्त्रावृतमुखो मौनी हरन् सर्वो गजं
 श्रमम् ॥ गुरुं संवाह्येद्यत्नात् पादस्पर्शं त्यजन्नियमम् ॥ २० ॥ ग्रामचैत्ये जिनं
 नत्वा ततो गन्धेस्वमंदिरम् ॥ प्रक्षालितपदः पंचपरमेष्ठिस्तुतिं स्मरेत् ॥ २१ ॥
 अर्हन्तः शरणं संतु सिद्धश्च शरणं मम ॥ शरणं जिनधर्मो मे साधवः शर
 पग्नो फरस त्यजतो एतल्ले गुरुने पग अण लगाडतो यत्तथी गुरुनी चरणसेवा
 करे ॥ १० ॥ ॥ गामसां देरासरं जगवंतने नमीने वज्जतो पोताने घरे जाय, तिहां
 पग धोइने पंच परमेष्ठी नवकार प्रत्ये गणे ॥ ११ ॥ ॥ सुजने श्रीअरिहंत शरण दो

॥ ५ ॥ मुजने श्रीसिद्ध शरण होय, मुजने श्रीकेवलिनापित जिनथर्म शरण होय,
कर्ता मुजने सदैव श्रीसाधु शरण होय ॥ ११ ॥ मंगलिकनो करनार, दुःखथी राख
नार, जे शील रूप संनाहने पहेरीने कंदर्पने उतावलो वेगे करीने जीतलो हवो, ते श्री
शुलिचइने नमस्कार हो ॥ १३ ॥ ॥ गृहस्थ थकां पण जेने महोटी शीलनी लीला
एणं सदा ॥ १२ ॥ नमः श्रीयूलिभद्राय कृतभद्राय तायिने ॥ शीलसन्नाहमा
विभद्र यो जिगाय स्मरं रयात् ॥ १३ ॥ गृहस्थस्यापि यस्यासन् शीलनी
ला महत्तराः।।नमः सुदर्शनायास्तु दर्शनेन कृतश्रिये ॥ १४ ॥ धन्यास्ते कृतपु
ण्यास्ते मुनयो जितमन्मथाः ॥ आजन्मनिरतीचारं ब्रह्मचर्यं चरंति ये ॥ १५ ॥
थइ, जलुं समकित तेणे करी कीधी ठे शोचा जेणे एवा श्रीसुदर्शन शेठने नमस्कार
हो ॥ १४ ॥ ॥ जेमणे कंदर्प जीत्यो ठे, बली जनमथी मांणी अतिचारना दोष रहित
जे शील प्रत्ये पाळे ठे, ते धन्य पुण्यना करनार यति जाणवा ॥ १५ ॥ ॥ ॥

अशक्त अने घणां अनवद्यकर्म करनारो, सर्व प्रकारें नथी जीती इंदिय जेणे एवो पुरुष,
एक दिवस पण उत्तम एवा शीलने धारण करवाने समर्थ थालो नथी ॥ १६ ॥ ॥ रे
संसार समुद्र! मदयुक्त ठे नेत्रो जेनां एवी स्त्रीयोरूप इत्तर खराबा जो वचे न आवे, तो
तारो पार पासवानो मार्ग बहु वेगलो नथी ॥ १७ ॥ ॥ जूढुं बोलुं, साहस पणुं, माया ते

निःसत्वो भूरिकर्मा हि सर्वदाप्यजितेन्द्रियः ॥ नैकाहमपि यः शक्तः शीलमाधा
तुमुत्तमम् ॥ १६ ॥ संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी ॥ अंतरा इत्तरा
न स्युर्यदि रे मदिरेक्षणाः ॥ १७ ॥ अनृतं साहसं माया मूर्खत्वमतिखोजिता ॥
अशौचं निर्दयत्वं च स्त्रीणां दोषाः स्वभावजाः ॥ १८ ॥ या रागिणि विरागिणी

कपट, मूर्खपणुं, घणो लोन, अपवित्र पणुं, दया रहित पणुं ए दोष स्त्रीना स्वचा
वेज होय ठे ॥ १८ ॥ ॥ जे स्त्री रागी पुरुषउपर पण वैरागी थाय, ते स्त्रीने कोण
जोगवे? जे पंजित होय ते मुक्ति रूपिणि स्त्रीनेज जोगवे; केसके, मुक्ति रूपिणी स्त्री जे

हे, ते वैरागी ऊपर रागिणी हे ॥१९॥ ॥ एवो स्त्रीनो असार पणो चिंतयतो शोडी
वेला तो समाधिवंत शको निडा करे, पण बुद्धिवंत धर्मना पर्वने विपे मैद्युन एटले
स्त्रीनो जोग न करे ॥ १० ॥ ॥ वली बुद्धिवंत होय ते घणी वेला पर्यंत निडातुं से
स्त्रियस्ताः कामयेत कः ॥ सुधीस्तां कामयेन्मुक्तिं या विरागिणि रागिणी ॥
॥ १९ ॥ एवं ध्यायन् भजेन्निघां स्वल्पं कालं समाधिमान् ॥ भजेन्न मैद्युनं
धीमान् धर्मपर्वसु कर्हिचित् ॥ १० ॥ नातिकालं निपेवेत प्रमीलां जातु चित्सु
धीः ॥ अत्युच्चिता भवेद्देवा धर्मार्थसुखनाशिनी ॥ ११ ॥ अत्याहारोऽल्पनि
द्रश्च अल्पारंभपरिग्रहः ॥ भवत्यल्पकपायी यो द्वेषःसोऽल्पभ्रमः ॥ १२ ॥
वन न करे, केमके, घणी उंघ करे तो धर्म, अर्थ अने सुख तेनो नाश करनारी थाय
॥ ११ ॥ ॥ जे स्वल्प आहार करे, स्वल्प निडा लीए, स्वल्प आरंभ करे, जेने
स्वल्प परिग्रह होय, अने जेने क्रोध शोडो, होय, तेतुं संसारमां भ्रमंतुं पण स्वल्प जाणुं

॥ १३ ॥ ॥ निडा, आहार, जय, स्नेह, लजा, काम, विषय, कलह, क्रोध, ए जेट
 ला वथारीयें, तेटला वथे ठे, अने जेटला प्रमाणे घटाडीयें तेटला घटी पण जाय
 ॥ १३ ॥ ॥ विघ्नरूप वेल ठेदवाने कुहाडा सरखा एवा श्रीनेमिनाथ जगवानने नि
 ज्ञाने वंखते मनमां स्मरतां पुरुष माते स्वप्ने पराजव पामे नही ॥ १४ ॥ ॥ अश्वसेन
 निडाहारजयस्नेहलजाकामकलिक्रुधः ॥ यावन्मात्रा विधीयन्ते तावन्मात्रा न
 वन्त्यमी ॥ १३ ॥ विघ्नत्रातलतानेमिं श्रीनेमिं मनसि स्मरन् ॥ स्वापकाले न
 रो नैव दुःस्वप्नैः परिभ्रूयते ॥ १४ ॥ अश्वसेनावनीपालवामादेवीतनूरुहम् ॥
 श्रीपार्थ्वं संस्मरन्नित्यं, दुःस्वप्नान्नैप पश्यति ॥ १५ ॥ श्रीलक्ष्मणांगसंभूतं महसेन
 नृपांगजं ॥ चंद्रप्रज्ञं स्मरंश्चिते सुखं निडां लभेत वै ॥ १६ ॥ सर्वविघ्नाह्निरुडं
 राजा अने वामा राणीनो पुत्र श्रीपार्थ्वनाथ स्वामी तेने नित्य स्मरतो मातुं स्वप्न न देखे
 ॥ १५ ॥ तेमज लक्ष्मणा राणीनो तथा महसेन राजानो पुत्र एवो श्रीचंद्रप्रज्ञ स्वामी
 तेने चित्तमां स्मरतां सुखें निडा पामे ॥ १६ ॥ ॥ सर्वं विघ्न रूप सर्पने दूएवाने

गुरुद समान, सर्व सिद्धिना आपनार एवा श्रीशांतिनाथ प्रत्ये मनमां थातो यको मनुष्य चोर प्रमुखथी नय न पामे ॥ ३३ ॥ ॥ ए प्रकारे ए सर्व दिवस संबंधि करणी जाणीने श्रावकवर्गने कीधो ठे उचम संतोष जेणें एवी करणी जे आदरे, ते पुरुष सर्वसिद्धिकरं परम् ॥ ध्यायन् शांतिजिनं नैति चौरादिभ्यो नयं नरः ॥ ३७ ॥ इत्यवेत्य दिनकृत्यमशेषं श्राध्वर्गजनितोत्तमतोपम् ॥ संचरन्निह परत्र च लोके कीर्तिमैति पुरुषो धृतदोषः ॥ ३८ ॥ इति श्रीआचारोपदेशे चतुर्थवर्गः ॥४॥ ॥ अथ पंचमवर्गप्रारंभः ॥ लब्ध्वा तन्मानुषं जन्म सारं सर्वेषु जन्मसु ॥ सुकृतेन सदा कुर्यात् सकलं सकलं सुधीः ॥ १ ॥ निरन्तरकृताधर्मात् सुखं नि सर्वं दोष टालीने इहलोक अने परलोकें जस पामे ॥ ३८ ॥ इति श्रीआचारोपदेशे चतुर्थवर्गः समाप्तः ॥ ४ ॥ सधला जन्मनो सार एवो ए मनुष्यनो जन्म पामीने ते पुरुष पुण्येकरिने सदा सर्वदा सर्व कामनी सिद्धि करे ॥ १ ॥ ॥ निरंतर धर्म कल्याणी

निश्चै सदाइ सुख होय, माटे दान, ध्यान, तप अने नष्टुं तेणे करी दिवसने वांजीड
न गमावे, एटले दिवसने वांजीड न करे, परंतु दानादिक अवश्य प्रत्येक दिवसै करीने
सफल दिवस करे ॥ १ ॥ ॥ जीव पोताना आयुष्यना प्रायें त्रीजे जाणें अथवा अंत
समयें छुन अने अछुच वेमांथी एक प्रकारुं आगला नवनुं आयुष्य बांधे ॥ ३ ॥

त्यं नवेदिति ॥ अवन्ध्यं दिवसं कुर्यात् दानध्याततपःश्रुतैः ॥ २ ॥ आयुस्त
तीयजागे च जीवोत्यसमयेऽथवा ॥ आयुः शुभाशुभं प्रायो बध्नाति परजन्मसु
॥ ३ ॥ आयुस्तृतीयजागस्थः पर्वश्रेणीषु पंचसु ॥ श्रेयः समाचरन् जन्तुर्व
श्रात्यायुर्निजं ध्रुवम् ॥ ४ ॥ जन्तुराराधयेद्दमं द्वितीयायां द्विधा स्थितम् ॥ सू

आखाने त्रीजे जागे रह्यो थको प्राणी बीज, पांचम, आठम, अगीआरस अने चौ
दश ए पांच पर्वना दिवसै धर्म आचरतो थको पोतानुं निश्चै थकी आखुं बांधे ॥ ४ ॥
बीज पाळाथी प्राणी यतिधर्म अने श्रावकधर्म ए बे प्रकारना धर्म प्रत्ये आराधे, ते

प्राणी घणा पुण्यनो समूह संपादन करतो राग अने द्वेष ए बेने बीज तिथीयें जीते ॥ ५ ॥ ॥ पांचम पाब्थाशी पांच ज्ञान प्रत्ये पामे, पांच चारित्र पामे, पांच महाव्रत पामे, ए पांचम प्रत्ये पाजतो अहंकार, विषय, कपाय, निडा अने विकथा ए पांच प्रमादने जीते ॥ ६ ॥ ॥ आठम पाब्थाशी मागं आठ कर्म प्रत्ये नशाडे, तथा पांच

जन् सुकृतसंघातं रागद्वेषद्वयं जयेत् ॥ ५ ॥ पंच ज्ञानानि लभते चारित्राणि व्रतानि च ॥ पंचमीं पालयन् पंच प्रमादाञ्जयति ध्रुवम् ॥ ६ ॥ छष्टाष्टकर्मनाशां ग्राष्टमीं जयति रक्षिता ॥ स्यात्प्रवचनमातृणां शुद्धयेऽष्टमदान् जयेत् ॥ ७ ॥ एकादशांगानि सुधीराराधयति निश्चितम् ॥ एकादश्यां शुभस्तद्ब्रूवकप्रतिमा

समिति अने त्रण गुप्ति ए आठ प्रवचन माता तेने छुद करे, तथा जातिमद, कुलम द, रूपमद, बलमद, ज्ञानमद, तपमद, जाजमद अने धनमदने जीते, एटखे ए आठ मद तेना दूर जाय ॥ ७ ॥ ॥ एकादशिये धर्म प्रत्ये करतो पंजित पुरुष अगीअार

अंग प्रत्ये तथा श्रावकभी अगीअार प्रतिमा प्रत्ये आराधे ॥ ७ ॥ ॥ चतुर्दशीने आ
 राधतो ते दिवसे तप करतो शको प्राणी चौदराज लोकने उपरला जे मोक्षरूप स्या
 नक ठे, ते प्रत्ये तथा चौद पूर्वे प्रत्ये पामे ॥ ९ ॥ ॥ ए पांच पर्वना दिवस ठे ते
 निश्रे एकेक शकी चढता चढता फलनां देवावाला ठे, ते माटे ए दिवसे धर्म करणी
 स्तथा ॥ १० ॥ चतुर्दशानामुपरिवासमासादयत्यहो ॥ चतुर्दशामाराधयेत् पूर्वाणि च
 चतुर्दश ॥ ११ ॥ पंच पर्वाण्यमूनीह फलदानि यथोत्तरम् ॥ तदत्र विहितं श्रेयो ह्य
 धिकं फलदं भवेत् ॥ १२ ॥ धर्मक्रियाः प्रकुर्वति विशेषात् पर्ववासरे ॥ आराध
 नुत्तरगुणान् वर्जयेत्स्नानमैथुनम् ॥ १३ ॥ विदध्यात्पौषधं धीमान् सुक्तिवश्यौ
 करवाथी अधिक्षु अधिक्षु फल पामे ॥ १४ ॥ ॥ माटे विशेषथी पर्वने दिवसे धर्मनी
 क्रिया प्रत्ये करे, उत्तर गुण जे पोसह पडिक्कमणादिक ते प्रत्ये आराधतो स्नान तथा मै
 थुन प्रत्ये वळै ॥ १५ ॥ ॥ बुद्धिवंत पर्वना दिवसे पोसह करे, ए सुक्तिने वश कर

वाने औषध ठे, ते जो पोतानी शक्ति न होय, तो विशेषधी सामायिक व्रत आश्रय
करे ॥ ११ ॥ ॥ तेम १ च्यवन, १ जन्म, ३ दीक्षा, ४ केवल अने ५ मोक्ष ए पांच
श्रीअरिहंतना कल्याणिकना दिवस ठे, ते प्रत्ये पंक्ति आराधे ॥ १३ ॥ ॥ एक
कल्याणक होय ते दिवसें एकासणुं करे, बे कल्याणक होय ते दिवसें नीवी करे, जण
पधं परम ॥ तदशक्तौ विशेषेण श्रथेत्सामयिकं व्रतम् ॥ १२ ॥ च्यवनं जन
नं दीक्षा ज्ञानं निर्वाणमप्यहो ॥ अर्हतां कल्याणकानि सुधीराराधयेत्तथा
॥ १३ ॥ एकस्मिन्नेकाशनकं धर्योर्निर्विकृतं तपः ॥ त्रिष्वाचाम्लं सपूर्वाद्धं च
तुष्टूपोषितं सृजेत् ॥ १४ ॥ कुर्यादर्थं चोपवासमतः पञ्चसु तेज्वपि ॥ पंचत्रिवे
कल्याणक होय ते दिवसें आर्यबिल पूर्वाध ते एकासणुं करे, चार कल्याणक होय
ते दिवसें उपवास करे ॥ १४ ॥ ॥ वली पांच कल्याणक होय, ते दिवसें एकासणा
साहित उपवास करे, ते पंक्ति कल्याणकं तप पांच वर्षे करी पूर्ण करे ॥ १५ ॥ ॥

नमोऽरिहंतादिक वीश पद ते वीश थानक तेने जे विधि सहित एकासण प्रमुख तपें करीने
करे, ते पुरुष धन्य जाणवो ॥ १६ ॥ ॥ ते विधि अने थ्यानसहित जे ए वीशस्थानक आ
राधे, ते प्राणी दुःखनो हरनार एधुं महोदुं तीर्थकर पदवीनुं नाम कर्म पामे ॥ १७ ॥

त्सरैः पूर्यात् तेपु चोपोपिते सुधीः ॥ १८ ॥ अर्हदादिपदस्थानि विंशतिः स्थान
कानि च ॥ प्रकुर्वीत विधिं धन्य, स्तपसैकाशानादिना ॥ १६ ॥ ततो विधिध्या
नपरो योऽमून्याराधयत्यहो ॥ लभते तीर्थकृन्नामकर्माश्महरं परम् ॥ १७ ॥
उपवासेन यः शुक्ला, माराधयति पञ्चमीम् ॥ सार्धानि पञ्च वर्षाणि लभते
पंचमीं गतिम् ॥ १८ ॥ उद्यापनं व्रते पूर्णे कुर्यादा धियुणं व्रतम् ॥ तपोदिन

साडा पांच वरस लगें उपवासें करीने जे उजवाली पांचम प्रत्ये आराधे ते पांचमी गति
मोक्ष प्रत्ये पामे ॥ १८ ॥ ॥ व्रत पूरण थया पढी उजमणुं करे, जो शक्ति न होय तो
वमणुं तप करे, तपना दिवस प्रमाणे माणसोने जमाडे ॥ १९ ॥ ॥

पाटी पोथी कवली ठवणी नोकरवाली ए पांच, ज्ञाननां उपकरण पांचमने उजमणें करे, तेम
वली देरासरनां उपकरण करे ॥ १० ॥ तेम पाखीळुं पडिक्कमणुं करतो अने चौदशनी उपवा
स करतो श्रावक पत्रे दिनेनो पद्व अने छुंडुबनो पद्व ए बे पद्वनी छुदि करे ॥ ११ ॥ आ
प्रमणानि भोजयेन्मानुषाणि च ॥ १२ ॥ कारयेत्पञ्च पंचोच्चैर्ज्ञानोपकरणानि
च ॥ पञ्चम्युद्यापने तद्वच्चैत्योपकरणान्यपि ॥ १० ॥ पादिकावश्यकं तत्त्वं चतु
र्दश्यामुपोषितम् ॥ पद्वं विशुद्धं तनुते द्विधापि श्रावको निजम् ॥ १२ ॥ त्रि
षु चातुर्मासिकेषु कुर्यात्षष्ठं तपः सुधीः ॥ अष्टपर्वण्यष्टमीं च तदावश्यकमुक् सु
जेत् ॥ ११ ॥ अष्टमिकासु सर्वासु विशेषात् पर्ववासरे ॥ आरंभान् वर्जयेज्जे

षाढ चोमासो, कार्तिक चोमासो अने फागुण चोमासो ए त्रण चोमासानी ठठ करे तथा
महोदु पर्व पंजोसण आये, तेवारें तेनी अठम करे, अने संवत्सरीळुं पडिक्कमणुं करे ॥ १३ ॥
सधला अग्नने विपे विशेष पर्वने दहाडे पोताना घरने विषे खांगडुं, वलडुं, घोडुं तथा

स्नान प्रमुख आरंभ न करे ॥ १३ ॥ ॥ महोदुं पर्व पंजोसण ठे, तेने विषे छुध मनें करी
 ने जिनशासननी शोचामाटे उल्लसव करतो नगरमां जीवदया पलावतो कल्पसूत्र सांचले १४
 ते श्रावक जला धर्मनी करणी प्रत्ये करीनें पण संतोष पामी रदे नही. मनें करी वृषि अ
 हे खंभनापेपणादिकान् ॥ १३ ॥ पर्वणि शृणुयाज्येष्ठे श्रीकल्पं स्वह्रमानसः ॥
 शासनेत्सर्पणं कुर्वन्न मारीं कारयेत्पुरे ॥ १४ ॥ श्राद्धो विधाय स्वं धर्मं नो तृ
 ष्ठीं तावता व्रजेत् ॥ अतृप्तमानसः कुर्याद्धर्मकर्माणि नित्यशः ॥ १५ ॥ वृष
 पर्वणि श्रीकल्पं सावधानः शृणोति यः ॥ अंतर्भवाष्टकं धन्यं लभेतपरमं प
 दम् ॥ १६ ॥ सम्यक्त्सेवनाभित्यं सब्रह्मव्रतपालनात् ॥ यत्पुण्यं जायते लो
 ए पामतो धर्मनी करणी प्रत्ये सदा सर्वदा करे ॥ १५ ॥ ॥ पंजोसण पर्वनें विषे श्री
 कल्पसूत्र सावधान धर्मेन श्रावक सांचले, ते धन्य पुरुष आठ नव मांहे मोक्ष पामे ॥ १६ ॥
 नित्ये समकेतनी सेवाथी तथा नित्ये रूडुं ब्रह्मचर्यं व्रत पालवाथी लोकने विषे जे पुण्य

थाय, ते पुण्य कल्पसूत्र सांजलवाची आय ॥१४॥ दानें करी, विविध प्रकारना तपेकरी, रूढा तीर्थनी सेवार्यें करी जे प्राणीतिनां पाप क्षय पामे, ते पाप कल्पसूत्र सांजलतां धकां जाय ॥१७॥ मुक्ति उपरांत कोइ पद नथी, शत्रुंजय उपरांत कोइ तीर्थ नथी, रूढा समकेत के श्रीकल्पश्रवणेन तत् ॥ १७ ॥ दानैस्तपोभिर्विविधैः सतीर्थोपासनैरहो ॥ यत्पापं क्षीयते जन्तोस्तत्पापं श्रवणेन वै ॥ १७ ॥ मुक्तेः परं पदं नास्ति तीर्थं शत्रुंजयात्परम् ॥ संदर्शनात्परं तत्त्वं शास्त्रं कल्पात्परं नहि ॥ १७ ॥ अमावस्याप्रतिपदेर्दीपोत्सवदिनस्थयोः॥ प्रातःनिर्वाणसङ्घानौ स्मरेढीवीरगोतमौ ॥ ३० ॥ उपवासघयं कृत्वा गौतमं दीपपर्वणि ॥ स्मेरत्स लज्जते नूनमिहा

उपरांत कोइव्रत नथी, तेम कल्पसूत्र उपरांत बीछुंकोइ शास्त्र नथी ॥१७॥ ॥दीवालीना द्विसनी अमावास्यायें श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया ठे, अने पडवाना दिवसें श्रीगोतम स्वामी केवलज्ञान पाम्या ठे, तेहुं स्मरण करियें ॥ ३० ॥ जे बे उपवास करीनें श्रीगौतम

स्वामी प्रत्ये द्वीवालीना दिवसें स्मरण करे, ते निश्चयथी इहलोकें अने परलोकें मोहोढो उदय पामे ॥ ३१ ॥ ॥ पोताना घरने देरासरें अथवा गामने देरासरें विधियें करी जग वंतने पूजीने मंगलदीवीं प्रत्ये करीने पोताना बंधव साथे जोजन प्रत्ये करे ॥ ३२ ॥ श्रीजगवंतना कल्याणकना महोढा पांच दिवसने विषे पोतानी शक्ति माफक यथायो

मुत्र महोदयान् ॥ ३२ ॥ स्वगृहे ग्रामचैत्ये च विधिनार्चा जिनेशितुः ॥ कृत्वा मङ्गलदीपं चाश्रीयात्साधुः ॥ ३३ ॥ कल्याणके जिनानां हि परमे दिन पंचके ॥ निजशक्त्या सदर्थिभ्यो दद्याद्दानं यथोचितम् ॥ ३३ ॥ इहं सुपर्ववि हितोत्तमकृत्यचार्वारप्रचारपिहितश्रववर्गमार्गः ॥ श्राधः समृद्धविधिर्वाधु

ग्य सथाचकने दान प्रत्ये आपे ॥ ३३ ॥ ॥ एम रुढा पर्वना समयें करवा योग्य कृत्य रूप जला आचारने पालवे करी ढांक्यो ले आश्रवना वर्गनो मार्ग जेणें, समृद्ध जे विधि तेणें करी वृद्धि पामी ले जली बुद्धि जेनी एवो श्रावक ते देवताना सुख प्रत्ये जोगवीने

शाश्वत एवां मोहनां सुख पामे ॥ ३४ ॥ इत्याचारोपदेशे पंचमवर्गः समाप्तः ॥ ५ ॥
 आवश्यक रूढी धर्मनी करणी प्रत्ये करतो सम्यक्त्व निवृत्ति पामी रहे, अतुप्त मने करी
 धर्मनी करणी प्रत्ये नित्य करे ॥ १ ॥ ॥ धर्मथी वकुराइ पामी, जे प्राणी धर्म न करे

तशुद्धबुद्धिर्भुक्तिं सुपर्वसुखमेति च मुक्तिसौख्यम् ॥ ३४ ॥ इति श्रीआचारोप
 देशे पंचमवर्गः ॥ ५ ॥ अथ षष्ठवर्गप्रारंभः ॥ आश्वो विधाय सधर्म कर्मतो
 निवृत्तिं व्रजेत् ॥ अतृप्तमानसः कुर्याधर्मकर्माणि नित्यशः ॥ १ ॥ धर्मादधि
 गतैश्वर्यो धर्ममेव निहन्ति यः ॥ कथं शुभायतिर्भूयात् स स्वामिञ्छोहपातकी
 ॥ २ ॥ दानशीलतपोभावभेदैर्धर्मं चतुर्विधम् ॥ शुचिधीराराधयेद्यो मुक्तिमुक्ति

एवा पोताना स्वामिञ्छोही पापीतुं आगल जलुं केस धाय ? ॥३॥ ॥ रूढी बुद्धिनो धणी
 जे होय ते निरंतर बुक्ति अने मुक्तिना फलनो देवावालो एवो दान, शील, तप अने नाव

ए चार प्रकारनो धर्म आराधे ॥ ३ ॥ ॥ शोडामांश्री शोडुं आपीयें, महोटा उदयनी
 अपेक्षा न करवी; केमके, मननी इहा सरखी संपदा केवारें कोइने होती नथी ॥ ४ ॥
 प्राणी ठे ते ज्ञानने दानेकरी ज्ञानवंत थाय, अजयदान देवाशी जयरहित थाय, अ
 फलप्रदम् ॥ ३ ॥ देयं स्तोकादपि स्तोत्रं न चापेक्ष्यो महोदयः ॥ इहानुरूपो
 विभवः कदा कस्य नविष्यति ॥ ४ ॥ ज्ञानवान् ज्ञानदानेन निर्भयोऽजयदान
 तः ॥ अन्नदानात् सुखी नित्यं निर्व्याधिर्भेषजान्नवेत् ॥ ५ ॥ कीर्तिः संजायते
 पुण्यात् न दानादथ कीर्तये ॥ कैश्चिद्वितीर्यते दानं क्षेत्रं तद्वसनं बुधैः ॥ ६ ॥
 व्याजैः स्याद्विष्णुं वित्तं व्यवसायैश्चतुर्गुणम् ॥ क्षेत्रे शतगुणं प्रोक्तं पात्रेऽनंत
 न्नना दानशी सदा सुखी थाय, अने औषधिलुं दान देवाशी रोगरहित थाय ॥ ५ ॥
 पुण्य शकी कीर्ति पामीयें, एकली मात्र कीर्तिने अर्थ केटलाएक दान आपे ठे, ते दान पंक्ति
 तोएं ब्यसन जाणवुं ॥ ६ ॥ ॥ जे व्याजें धन आपीयें, ते बमणुं थाय, व्यापारें चो

गुणं धन थाय, क्षेत्रमां वाविधैं ते सोयुष्टुं थाय, अने सुपात्रने आपीधैं ते अन्नंतु
 णुं थाय ॥ ७ ॥ ॥ देरासर, प्रतिमा, पुस्तक, साधु, साधवी, श्रावक, श्राविका ए सात
 क्षेत्रने विषे घणां फल पामवाने अर्थे धन वावरे ॥ ७ ॥ ॥ जगवंतनां जक्तिनाव
 थी जे देरासर प्रत्ये करावे, ते पुरुष धन्य ठे, ते देरासरना परमाणुनी जेटली संख्या
 गुणं भवेत् ॥ ७ ॥ चैत्यप्रतिमापुस्तकश्रीसंघनेदयुक्तेषु ॥ क्षेत्रेषु सप्तसु धनं
 व्ययेन्नूरिफलाप्तये ॥ ७ ॥ चैत्यं च कारयेद्ध्यो जिनानां जक्तिभावितः ॥ तत्प
 रमाणुसंख्यानि कल्पानेप सुरो भवेत् ॥ ९ ॥ यत्कारितं चैत्यगृहं तिष्ठेद्यावद्दि
 नानि ह ॥ स तत्समयसंख्यानि वर्षाणि त्रिदशो भवेत् ॥ १० ॥ सुवर्णरूप्य

ठे तेतला पद्योपम सुधी ते पुरुष देवतातुं आयु जोगवे ॥ ९ ॥ ॥ जे देरासर करा
 वुं, ते देरासर जेटला विवस सुधी रहे तेतला वर्षे पर्यंत ते पुरुष देवतापणे रहे ॥ १० ॥
 सोनानी, रूपानी, पाषाणनी रत्ननी, मृत्तिकानी एवी जगवंतनी प्रतिमा प्रत्ये जे पुरुष

करावे, ते निश्चै तीर्थंकर शाय ॥ ११ ॥ ॥ जे पोतानी शक्तिमाफक मात्र एक अं
गुष्ठ प्रमाणे परमेश्वरनी प्रतिमा करावे, ते मोक्षपद प्रत्ये पामे ॥ १२ ॥ ॥ धर्मरूप
वृक्षं मूल ते चडुं शाख ठे, तथा प्रत्यह् मोक्ष फलं डालार ठे, एम जाणतो जे पु

पापाणरत्नलोपमयीमपि ॥ कारयत्यर्हतां मूर्तिं सवै तीर्थंकरो भवेत् ॥ ११ ॥
अंगुष्ठमात्रामपि यः प्रतिमां परमेष्ठिनः ॥ कारयेद्यथाशक्तिं स लभेत्पदमव्य
यम् ॥ १२ ॥ धर्मजुमूलं स्यान्नास्त्रं, जानन् मोक्षफलप्रदम् ॥ लेखयेद्यथेयधस्तु
शृणुयान्नावगुच्छिक्तम् ॥ १३ ॥ लेखयित्वा च शास्त्राणि यो गुण्यः प्रयत्नति ॥
तन्मात्राद्वारसंस्थानि वर्षाणि त्रिदशो भवेत् ॥ १४ ॥ ज्ञानभक्तिं विधत्ते यो

रुप शास्त्रने लखावे, वांचे, सांचे; तेनी ते शास्त्रथी जावच्छुद्धि शाय ॥ १३ ॥ ॥ जे म
नुष्य सिद्धांतशास्त्र लखावीने गुणवंत पंमितने आपे; ते मनुष्य, शास्त्रना जेटला अद्वार
द्वीय तेटला अद्वार प्रमाण वरस देवता अज्ञे ॥ १४ ॥ ॥ जे ज्ञाननी भक्तिप्रत्ये

करे, ते ज्ञान विज्ञाने करी शोचे, वली सधला सुखनुं कारण अन्ननुं दान ठे, एवुं मनमां जावीने यथाशक्ति वर्षे प्रत्ये सादामीवात्सल्य करे ॥ १५ ॥ ॥ बांधव कुटुंब ने जे जमाडे, ते संसारनुं हेतु ठे, अने तेदिज जो सरस्वा धर्मिने जमाडे, सादामी

ज्ञानविज्ञानशोभितः ॥ निदानं सर्वसौख्यानान्नपानं विभावयन् ॥ साधर्मि काणां वात्सल्यं कुर्यान्नक्त्या समां प्रति ॥ १५ ॥ वात्सल्यं बंधुमुख्यानां संसाराणववर्धनं ॥ तदेव समधर्माणां संसारोदधितारकम् ॥ १६ ॥ प्रतिवर्षं संघपूजा शक्त्या कुर्याद्विवेकवान् ॥ प्राशुकानि श्रीगुरुभ्यो देयाधस्त्राणि भक्तितः ॥ १७ ॥ सत्पात्राशनयानानि पात्रवस्त्रौपधानि चाचेन्न पर्याप्तविवेचो देयात्तदपिशक्तिः

वात्सल्य करे, तो ते संसार समुद्रनुं तारक ठे ॥ १६ ॥ ॥ वर्षे प्रत्ये श्रीसंघनी पधरा मणी भक्ति पोतानी शक्तिमाफक करे, तथा फाद्य शुद्धमान एवां वस्त्रादिक गुरुने भक्तिये करी आपे ॥ १७ ॥ ॥ तथा उच्चम पात्रने विपे अशन, पान, खादिस, स्वा

द्विम, पात्र, वस्त्र, औषधि प्रमुख, जो पण पूरण आपवानी संपदा न होय, तो पण शक्तिमाफक आपे ॥ १८ ॥ ॥ उत्तम पात्रने विपे दान दीधुं थळुं हाणी न पामे, तथा कूवो, तलाव, वावडी बगीचा अने गाय प्रमुखनुं नित्यप्रत्ये दान करे, तो तेथी तेनी संपदा वधे ठे ॥ १९ ॥ ॥ दीधुं अने खाधुं ए वेमांहे महोदुं अंतर देखाय ठे; केमके,

॥ २० ॥ सत्पात्रे दीयते दानं दीयमानं न हीयते ॥ कूपारामगवां दानाद्दद
तामिव संपदः ॥ २१ ॥ प्रदत्तस्य च भुक्तस्य दृश्यते महदन्तरम् ॥ प्रभुक्तं जा
यते वचो दत्तं भवति चाक्षयम् ॥ २२ ॥ आयासशतलब्धस्य प्राणेश्योपि ग
रीयसः ॥ दानमेकैव वित्तस्य गतिरन्या विपत्तये ॥ २३ ॥ क्षेत्रेषु संतसु ददत्

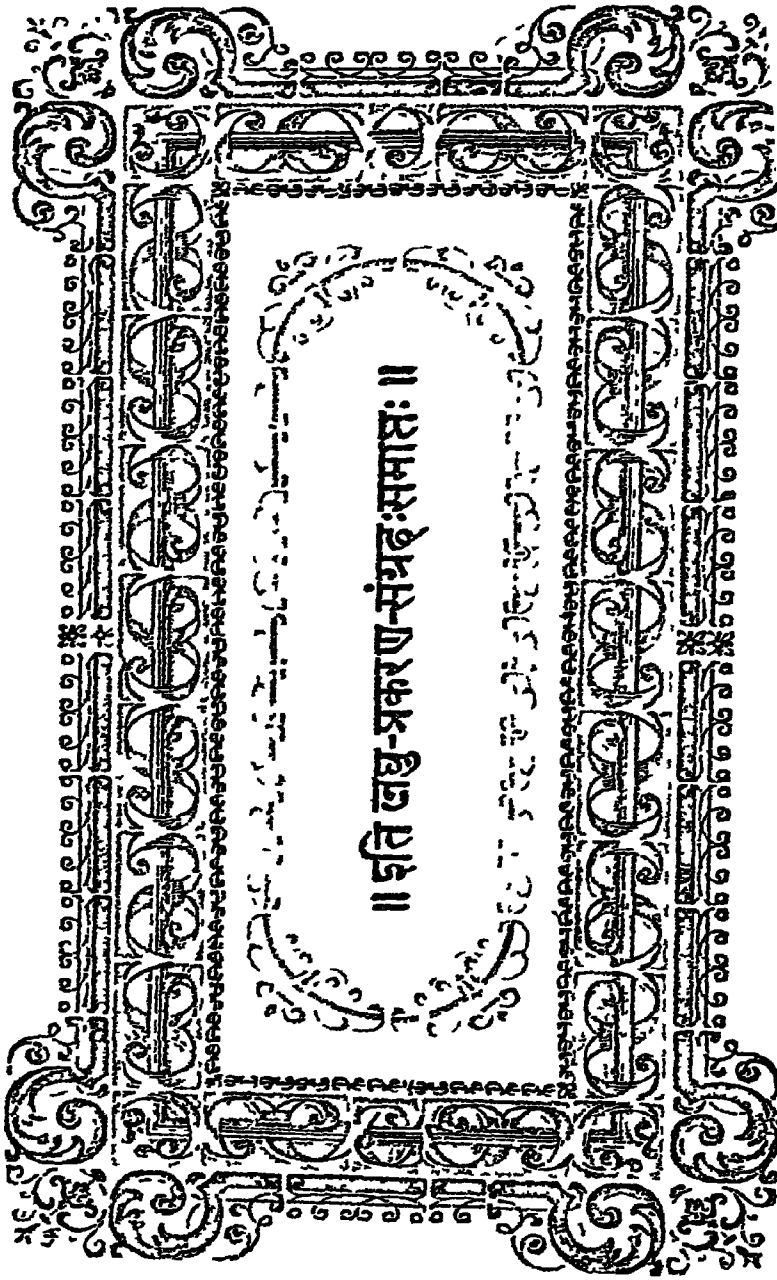
खाधुंते विष्ठा शाय, अने दीधुं ते अक्षय शाय ठे ॥ २० ॥ ॥ शेंकडा गमे प्रयासैकरी
जे पासुं, पोताना प्राणधकी पण अधिक एधुं जे धन तेनी दानगति ठे; अने बीजी
ते विपत्ति ठे ॥ २१ ॥ ॥ ल्यारें कसावेला पोताना धन प्रत्ये सात क्षेत्रें वावतो दान

देइने श्रावक पोताना धनने छने जनमने सफल करे ॥ १३ ॥ इतिश्री रत्नसिंहसूरि
न्यायोपात्तं निजं धनम् ॥ साफल्यं कुरुते श्राद्धो निजयोर्धनजन्मनोः ॥ १५ ॥
॥ इति श्रीरत्नसिंहसूरिशिष्यचारित्रसुंदरगणिविरचिते श्रीआचारोपदेशे षष्ठो
वर्गः संपूर्णः ॥ ६ ॥ इति श्रीआचारोपदेशः समाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥
शिष्यचारित्रसुंदरगणिविरचिते श्रीआचारोपदेशे बालावबोधे षष्ठो वर्गः समाप्तः ॥ ६ ॥

इदं पुस्तकं मोहमय्यां निर्णयसागराल्बसुज्ञालये

श्रावक नीमसिंहमाणकेन सुश्रुपितम्. संवत् १९४५.





॥ इति लघु-प्रकरण-संग्रहः समाप्तः ॥

